कवि-श्री माला

* तेलुगु *

कवि

तिरुपति-वेंकट कवुलु

सम्पादक-अनुवादक

भीमसेन निर्मल

(प्रा भण्डारम भीमसेन ओस्युलु)

 राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा

प्रकाशक
मोहनलाल भट्ट
मन्त्री
राष्ट्रभाषा प्रचार समिति
हिन्दीनगर, वर्धा
● ● ●

प्रथम संस्करण—१ •
मई, १९६२
मूल्य—रु २/-
● ● ●

मुद्रक
मोहनलाल भट्ट
राष्ट्रभाषा प्रेस
हिन्दीनगर, वर्धा
● ● ●

आमुख

हर्षका विषय है कि राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति वर्धा अपने कार्य कालके २५ वर्ष सन् १९६१ में पूरे कर रही है। इस उपलक्ष्यमें मनाये जानेवाले रजत-जयन्ती महोत्सवके अवसर पर सभी भारतीय भाषाओंके मान्य कवियोंका तथा उनके उत्कृष्ट काव्यका परिचय 'कवि-श्री माला' की पच्चीस पुस्तकोंमें हिन्दी-गद्यानुवाद सहित प्रकाशित करनेकी योजनाके अन्तर्गत प्रस्तुत ग्रन्थ पाठकोंके सम्मुख आ रहा है।

यद्यपि किसी भी भाषाके सर्वश्रेष्ठ काव्य-सर्जकका निश्चय करना एक कठिन कार्य है फिर भी अपनी सीमाओंको ध्यानमें रखते हुए मान्यतानुसार उन-उन भाषाओंके विद्वानोंकी रायसे ही चुनावका कार्य सम्पन्न किया गया है।

प्रत्येक पुस्तकके आरम्भमें जिस भाषाके कविकी रचनाओंका चयन किया गया है उस भाषाके साहित्यका परिचय और कवि विशेषका परिचय दिया गया है। जिस भाषाके दो कवियोंका चुनाव किया गया है उनका चुनाव करते समय सन् १९२० से पूर्वका साहित्य और १९२ से बादका साहित्य—इस तरहसे एक विभाजन रेखा ध्यानमें रखी गई है। इसका कारण यह है कि लगभग सन् १९२० के पूर्वके तथा १९२० के बादके साहित्यमें प्रवाहित विचार-धारामें एक विशेष प्रकारका अलगाव-सा पाया जाता है।

श्री भीमसेनजी 'निर्मल' ने प्रस्तुत पुस्तकमें संकलित साहित्यको चुनने, काव्यांशको सम्पादित तथा अनूदित कर सारी सामग्रीको इस रूपमें प्रस्तुत करनेमें सहयोग दिया है। पुस्तकमें संकलित चित्रका ब्लॉक कविश्री काटूरि वेंकटेश्वररावजीके सत्प्रयत्नोंके फलस्वरूप 'त्रिवेणी' कार्यालय मछलीपट्टणमके सहयोगसे उपलब्ध हुआ है। संग्रहकी आवरण डिज़ाइनको बनवा देनेमें श्री वी. एन. आडारकरजी (डीन सर जे. जे. इन्स्टीट्यूट आफ अप्लाईड आर्ट, बम्बई) का उदार सहयोग मिला है उसके लिए समिति उनकी आभारी है।

इसके अतिरिक्त अर्थ तथा अन्यान्य दृष्टियोंसे भिन्न-भिन्न प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष सहयोग मिला है, उनके प्रति भी समिति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करती है।

आशा है प्रस्तुत संग्रह पाठकोंको रुचिकर एवं उपयोगी प्रतीत होगा।

मंत्री

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा

अनुक्रमणिका



तिरुपति-वेंकट कवुलु

अनुक्रमणिका



तिरुपति-वेंकट कवुलु

तेलुगु साहित्य परिचय

[प्रारम्भ से १९२० तक]

तेलुगु भाषा और उसका साहित्य

• • •

आन्ध्र, तेलुगु, तेनुगु नामोंसे अभिहित भाषा अेक ही है। यह भाषा संस्कृत-प्राकृत-जन्य है या द्रविड़ परिवारसे सम्बद्ध इसपर विद्वानोंमें काफी मतभेद रहा है और अब भी है। अधिकांश विद्वानोंका मत तेलुगु भाषाको मूल द्रविड़ परिवारसे सम्बद्ध मातृ-परिवारसे अन्य भाषाओंकी अपेक्षा दूरीभूत और संस्कृत प्राकृतसे अत्यधिक प्रभावित माननेकी ओर है। परन्तु अैसा कब हुआ और तदुपरान्त विकासका क्रम कैसा रहा इन बातोंका परिचय प्राप्त करनेके लिये साधन नहीं के बराबर है। ११ वीं सदी तक की कोअी लिपिबद्ध रचना नहीं मिलती है। परन्तु कुछ ताम्रपत्रों व शिलालेखों द्वारा तेलुगु भाषाके स्वरूपका थोड़ा-बहुत परिचय मिलता है।

ईसाकी छठीं सदीके अन्तिम चरणोंमें तेलुगुमें लिखा गया एकाध शिला लेख मिलता है। उस युगकी संस्कृत एवं प्राकृत भाषाओंमें प्रयुक्त कुछ तेलुगु शब्द भाषाके विकास-परिणामपर कुछ प्रकाश डालते हैं। इन प्रमाणों द्वारा कुछ तेलुगु विद्वान इस निष्कर्षपर पहुँचे हैं कि ईसाकी प्रारंभिक शताब्दियोंमें ही यह भाषा लोक-व्यवहारका साधन बनी हुई थी।

अध्ययनकी सुविधाके लिए तेलगु साहित्यको छ युगोंमें विभाजित किया जाता है। (१) अज्ञात युग या प्राक्नन्नयुग (२) पुराण युग या अनुवाद युग (३) काव्य युग या श्रीनाथ युग (४) प्रबन्ध युग या रायल युग (५) दक्षिणान्ध्र युग (६) आधुनिक युग। यह विभाजन कालके अनुसार या विशिष्ट काव्यशैलियोंके आधारपर किया गया है।

प्राक्नन्नय युग (सन् १०३० से पूर्व)

आदिकवि नन्नय भट्टसे पूर्वके तेलुगु भाषा और साहित्यके स्वरूपका प्रमाणित आधार उपलब्ध न होनेके कारण इस युगको अज्ञात युग कहते हैं। इस अज्ञात युगकी भाषा और साहित्यपर प्रधानरूपसे (एकांश रूपसे भी) प्रकाश डालनेवाले साधन हैं उपलब्ध शिलालेख और लोक गीत जो परवर्ती कवियोंसे सुरक्षित हैं। शिलालेख साहित्यका कम पर भाषा और देशी छन्दके स्वरूपका ही अधिक ज्ञान कराते हैं।[1] इनमें ग्रामोंके नाम व्यक्तियोंके नाम कुछ शब्द प्रत्यय ध्वनियाँ और लिपि-चिह्न-मात्र परिलक्षित होते हैं जिनका सम्बन्ध द्राविड़ परिवारसे और विशेषकर तेलुगुसे जोड़ा जाता है। ईसाकी छठी शतीके बाद रेनाटि चोळ राजाओं और पूर्वी चालुक्य राजाओं द्वारा खुदवाए गये शिलालेखोंमें तेलुगु भाषाका स्वरूप स्पष्ट बन गया। ये शिलालेख ही तेलुगु भाषाके लिखित रूपके सर्वप्रथम प्रमाण हैं। इनमें कुछ केवल गद्यमें हैं तो कुछ पद्यमें और कुछ गद्यपद्यमिश्रित हैं। इस प्रकार इन शिलालेखोंके अध्ययनसे इस बातका पता चलता है कि इनमें पहले-पहल कुछ तेलुगु नाम और शब्द और बादमें तेलुगु वाक्योंने स्थान प्राप्त कर लिया और अन्तमें पूरा शिलालेख ही तेलुगुमें लिखा जाने लगा। पद्यमय शिलालेखोंमें कुछ देशी छन्दोंका भी प्रयोग हुआ है। देशी कविता या लोकगीत तो उपलब्ध नहीं हैं पर परवर्ती कवियोंके उल्लेखों द्वारा यह निश्चय किया जा सकता है कि कुछ विशिष्ट लोकगीत प्रचारमें थे।

अज्ञातयुगमें उपलब्ध सामग्री भाषा-विज्ञानके लोगकी है। विषय प्रधान शिलालेख और संदिग्ध लोकगीत साहित्यके इतिहासमें विशेष योग नहीं देते।

पुराण या अनुवाद युग (सन् १०३०-१४०० तक)

आदि कवि[2] नन्नयके बाद लगभग तीन शतियों तक कई कवियोंने संस्कृतके पुराणों और इतिहासोंका अनुवाद किया है। शैव कवियोंने यद्यपि कुछ मौलिक

---

१ ये शिलालेख प्राकृत और संस्कृतको राजभाषा माननेवाले सातवाहन इक्ष्वाकु बृहत्फलायन विष्णुकुंडिन आदि राजवंशोंके समयके हैं। चालुक्योंके समयसे ही (७ वी शती) तेलुगुको आदर प्राप्त हो सका है।

२ सुव्यवस्थित भाषामें (जो आजतक स्टैंडर्ड माना जाता है) देशी और मार्ग शैलियोंमें एक उदात्त महाकाव्य रचना करनेसे नन्नय आदि कवि कहलाए।

काव्योंकी रचना की है तथापि इनकी अधिकांश रचनाएँ अनूदित ही हैं। अतः इस युगको 'अनुवाद-युग' कहा जाता है। इस युगमें पुराणोंका अनुवाद अधिक हुआ है अतः इसे 'पुराण-युग' भी कहते हैं।

गोदावरी तीरस्थ राजमहेंद्रीको राजधानी बनाकर, आन्ध्रदेशपर राज्य करनेवाले पूर्व-चालुक्य वंशीय राजा राजराजनरेंद्र (१०१२-१०६३) की सभामें नन्नय भट्ट नामक एक महापुरुष थे। ये राजवंशके कुल-गुरु थे। साधु स्वभाववाले और वैदिक धर्ममें निष्णात इस महापुरुषने वैदिक धर्मके प्रचारके लिए 'पंचमवेद' महाभारतके अनुवाद कार्यको सम्भाला। नन्नयने अपनी पूर्ववर्ती भाषा एवं काव्य रचना शैलीको सुव्यवस्थित रूप देकर 'वाग्-शासनुशासक' की उपाधिको सार्थक बनाया। जन सामान्यमें प्रचलित सभी शब्दोंका अनुशीलन एवं परिष्कार कर, संस्कृत शब्दोंको तेलुगुमें प्रयोग करनेकी एक सुनिश्चित पद्धतिका निर्देश कर, धारा युक्त संस्कृत वर्णवृत्तोंको अपनाकर, उस समय तक ही उत्तम काव्य ग्रन्थोंसे सम्पन्न कन्नड-साहित्यसे समुचित प्रभाव ग्रहणकर, नन्नयने तेलुगुमें उत्तम काव्य रचनाका मार्ग प्रशस्त किया। (डा. दिवाकर्ल वेंकटावधानी।)

अपने प्रभु और मित्र राजराजकी प्रेरणासे महाभारतके ढाई पर्व तक ही रचना कर पाए कि काल पुरुषने इनकी लेखनी रोक दी। अरण्य पर्वमें १४२ वाँ पद्य जो नन्नयका अन्तिम पद्य माना जाता है इस प्रकार है—

"शारद रात्रुलुज्ज्वल लसत्तर तारक हार पंक्तुलन्
चारुतरंबुलय्ये विकसन्नव कैरव गंध बंधुरो
दार समीर सौरभमु दाल्चि सुधांशु विकीर्यमाण
कर्पूर पराग पांडुरुचिपूरमुलं बरिपूरितंबुलय्ये।"

(शरद् ऋतुकी रातें उज्ज्वल और श्रेष्ठ तारक-हार पंक्तियोंसे सुन्दरतर हुईं। नवविकसित कैरव पुष्पोंकी सुगन्धसे वासान्वित होनेवाले समीरके सौरभसे और चन्द्रके बिखरे किरण रूपी कर्पूर-परागकी श्वेत-छवियोंसे परिपूर्ण बनी थे रातें।)

नन्नयकी रचनाका दृष्टिकोण काव्य परक है और उनके अनुवादकी शैली स्वच्छन्द है। अतः उन्होंने मूल इतिवृत्तको काव्य-रचनाके अनुकूल कहीं घटाकर कहीं बढ़ाकर, औचित्यकी दृष्टिसे कुछ परिवर्तन कर, मौलिक काव्यके रूपमें प्रस्तुत किया है। नन्नयकी कविता 'प्रसन्न-कथा-कलितार्थ युक्ति' 'अक्षर-रम्यता' 'नाना रुचिरार्थ सूक्ति' आदि विशिष्टताओंसे सम्पन्न तथा संस्कृत-समास-बहुला होनेपर भी अनन्य-सुलभ होकर, परवर्ती कवियोंके लिए मार्गदर्शक सिद्ध हुई। 'वचन (गद्य)'[1] रचनामें भी नन्नयकी शैली आदर्श है। नरके लिए नारायणके समान नन्नयके सहयोगी नारायण भट्टु नामक एक उद्भट पंडित थे।

---

१ तेलुगुके काव्योंमें आरम्भसे ही प्रवाह युक्त वचन-रचना होती थी।

चामुण्डिका विलास, आन्ध्र शब्द चिन्तामणि, इन्द्र विजय, लक्षण-सार आदि ग्रन्थ भी नन्नयके लिखे माने जाते हैं। आन्ध्र शब्द चिन्तामणि तेलुगुका पहला व्याकरण है जिसमें संस्कृत सूत्रोंमें तेलुगुके व्याकरण नियमोंका विवरण है। पर नन्नयकी कीर्तिका वास्तविक मूल तो महाभारतकी रचना ही है।

राजराजनरेन्द्रकी मृत्युके बाद देशकी राजनैतिक और धार्मिक परिस्थितियोंके कारण 'महाभारत' की पूर्तिका कार्य रुका-सा रहा। रचनाओंके न मिलनेपर भी इस समय एक प्रसिद्ध कवि हैं—वेमुलवाड भीमकवि। आप मुक्तककवि हैं। प्रतीत होता है कि वे बड़े ही पंडित कवि और शापानुग्रह समर्थ थे। पावुलूरि मल्लनने संस्कृतमें वीराचार्य द्वारा लिखे गए गणितशास्त्रका पद्यानुवाद किया है।

नन्नयके लगभग दो सौ साल बाद कविब्रह्मा तिक्कनने (१२१०-१२९) विराट-पर्वसे लेकर शेष १५ पर्वोंकी रचना की। तिक्कनने पहले 'निर्वचनोत्तर रामायण' की रचना की तदुपरान्त यज्ञकर सोमयाजि बने। तब 'हरिहर-अद्वैत-भाव' को प्रतिपादित करते हुये महाभारतकी रचना कर उसे अपने इष्ट भगवान हरिहरनाथको ही समर्पित किया। तिक्कन नल्लूर के राजा मनुमसिद्धिके मन्त्री तथा राजकवि थे।

अनुवादमें तिक्कनने नाटकीय शैलीका प्रयोग किया। जीवनके स्वाभाविक प्रसंगोंकी उद्भावना कर, उन-उन पात्रोंके वार्तालाप एवं विकास-क्रम द्वारा उनकी मानसिक प्रवृत्तियोंका चित्रण करते हुए, चित्तवृत्तियोंके परिणाम एवं परिष्कारका दिग्दर्शन कराना ही काव्यमें नाटकीय शैलीका प्रधान लक्षण है। रसानुभूति द्वारा पाठकके चित्तको परिष्कृत करनेका यह श्रेष्ठ-मार्ग है। कीचक वध इस दृष्टिकोणसे सर्वोत्तम उदाहरण है। इसमें कविने कथाको एक नाटकके रूपमें प्रस्तुत किया है। उद्योग पर्वमें राजनीतिके दाव-पेंचोंका अद्वितीय चित्रण है। पात्रोंका इतना सुस्पष्ट चित्रण और किसी काव्यमें नहीं मिलता। युद्ध वर्णनमें तो युद्ध वर्णन चलचित्र की तरह गतिमान बन पड़ा है। वर्णनात्मक न होकर, संवाद शैलीमें काव्य रचनामें तिक्कन अत्यन्त सफल हुए हैं। लम्बे-लम्बे समासोंका अभाव, देशी शब्दोंका—ठेठ तेलुगु शब्दोंका—सुन्दर प्रयोग ये तिक्कनकी रचनाको सुन्दर बनाते हैं। संस्कृत-भारती सोनेका ढेर है। उसमेंसे समुचित मात्रामें स्वर्ण लेकर, स्वर्णकारकी कुशलताके साथ बनाया गया स्वर्ण-कमल है तेलुगु-भारत।"

अरण्य पर्वके शेष भागकी पूर्ति नन्नयके नामपर ही करनेवाले हैं एर्राप्रगड (१२८०-११५)। इन्होंने नन्नयकी शैली पर रचनाका प्रारम्भ करके उसे तिक्कनकी शैलीपर ला खड़ा किया। इससे ऐसा लगता है मानों ये नन्नय और तिक्कनकी रचनाओंको मिलानेवाले सन्धि-सूत्र हैं।

'स्फुरदरुणांशु रागरुचि बोंपिरि बोयि निरस्त नीरदा
वरणमुलै चलत्कमल वैभव जृम्भणमु ल्कसिल्लनु
दुस्तर हंस सारस मधुव्रत निस्वनमुल सेसमया
नरमुवेलिंगो वासरमुखंबुलु शारदवेल जूडगन् ।

(शरद् ऋतुके दिनोंमें प्रकाशमान सूर्यकी अरुणिमा घट गई। नीरद आवरणसे मुक्त हो कमलोंके वैभव-विकासके नष्ट होनेपर, हंस सारस और मधुव्रतों (भ्रमरों) के स्वरोंके मुखरित होनेपर, शरदके दिन प्रकाशित होने लगे।)

नन्नय भट्टके पद्यसे इसकी तुलना करनेपर स्पष्ट रूपसे मालूम होता है कि नन्नयकी शैलीसे इनकी शैलीका कितना साम्य है। अरण्यपर्वके शेष भागकी रचनाके अतिरिक्त एर्राप्रगडने नृसिंह पुराण रामायण हरिवंश आदि काव्योंकी रचना की है।

नन्नय तिक्कन और एर्राप्रगड इन तीन कवियोंको कवित्रय कहते हैं। इन तीनों महाकवियोंने अनुवादको औचित्यकी दृष्टिसे छंद तेलुगु भाषामें ढालकर एक नूतन काव्यकी ही रचना की है जिसे किसी मौलिक काव्यसे कम गौरव प्राप्त नहीं है। कवित्रयके हाथोंमें पड़कर महाभारत ने तेलुगु जन-मनके हृदयमें घर कर लिया है। कवित्रय की रचना शैली ही परवर्ती कवियोंके लिए मार्गदर्शक बनी रही।

इस युगके अन्य कवियोंमें केतन मारन्न गोन बुद्धा रेड्डी हुळक्कि भास्कर पेद्दन नाचन सोमनाथ प्रमुख हैं। केतनने दशकुमार चरित्र को चम्पू काव्यके रूपमें अनूदित कर, तिक्कनके करकमलोंमें समर्पित किया। विज्ञान ईश्वरीयमु (धार्मिक ग्रन्थ) और आन्ध्र भाषा भूषणमु (व्याकरण ग्रन्थ) इनकी अन्य रचनाएँ हैं। तिक्कनके शिष्य मारन्नने मार्कंडेय पुराण का अनुवाद किया है। गोन बुद्ध रेड्डीने अपने पिताके नामपर, रामायणको द्विपद-छन्दमें रचा है। एक प्रवाद है कि रंगनाथ नामक किसी कविने इसकी रचना की है। वैसे यह काव्य रंगनाथ रामायणमु के नामसे ही प्रसिद्ध है। इस काव्यमें जंबुमालि कालनेमि शबरी सुलोचना आदि अवाल्मीकीय प्रसंग हैं जो मूलकथाके सौन्दर्यमें चार चाँद लगाते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि ये उपकथाएँ शायद आन्ध्र लोकगाथाओंके प्रभावसे काव्यमें आई हैं। इस काव्यके वर्णन बड़े ही गम्भीर, पात्रोंका चरित्रचित्रण सुन्दर और शैली सरस बन पड़ी है।

भास्कर रामायण के कर्ता हुळक्कि भास्कर उनके पुत्र मल्लिकार्जुन भट्ट शिष्य कुमार रुद्रदेव मित्र अय्यलार्य माने जाते हैं। स्वाभाविक प्रवाहसे युक्त होनेपर भी काव्यमें अनेक कर्तृत्वके कारण समग्र ग्रन्थमें सरसता नहीं है। शैलीकी भिन्नता स्पष्ट परिलक्षित होती है।

विद्याकोट पेद्दनके काव्यालंकार चूडामणि में साहित्यिक विषयोंके साथ-साथ व्याकरण और छन्दकी भी चर्चा की गई है। राजशेखर कविके विद्धशाल-भंजिका के आधारपर मंचनने 'केयूरबाहु चरितमु' की रचना की। 'नाचन सोमनाथ' का उत्तर हरिवंशमु ही उपलब्ध है। इस एक काव्यके आधारपर ही इन्हें कवित्रय के कवियोंके समकक्ष माना जाता है। वस्तु की एकता रसपोषण नूतन प्रसंगोंकी कल्पना और निर्वाह, भाव पोषित आदि कई गुणोंसे युक्त यह काव्य प्रबन्ध युगकी रचनाओंका मार्गदर्शक है।

आचार्य अथर्वणकी गणना इस युगके पंडित कवियोंमें की जा सकती है। इनका लिखा महाभारत उपलब्ध नहीं है। अथर्वणकारिकावलि के नामसे तेलुगु व्याकरण संस्कृत श्लोकोंमें लिखा है।

बद्देनका नीतिसार मुक्तावलि अमरेश्वरका विक्रमसेन काव्यमु त्रिपुरान्तकका त्रिपुरान्तकोदाहरणमु इस युगके अन्य काव्य हैं। उदाहरण काव्यों में त्रिपुरान्तकोदाहरणमु का ऊँचा स्थान है।

इस युगमें शैव कवियोंका अपना विशिष्ट महत्व है। ईसाकी लगभग ११ १२ वीं शतीमें कर्नाटक प्रान्तमें बसवेश्वर द्वारा संस्थापित वीर शैव संप्रदाय ने आन्ध्रदेशको खूब प्रभावित किया। उन सिद्धान्तोंके प्रचारके लिए अनेक कवियोंने कलम उठाई। देशी इतिवृत्त देशी छन्द और देशी भाषा—इन्हें साधन बनाकर वीरशैव कवियोंने जनतामें आचरणके साथ फैलाए। इन कवियोंने भाषा और भावके क्षेत्रमें अत्यधिक स्वच्छन्दता दिखाई है। सचमुच इन्हें जन-कवि कह सकते हैं।

इन शैव कवियोंमें राजकवि नन्नेचोड का नाम सर्वप्रथम लिया जाता है। इनके समयके बारेमें काफी मतभेद रहा है। कविराज शिखामणि की उपाधिसे शोभित नन्नेचोडने कुमारसम्भवमु नामक उत्तम प्रबन्ध काव्य की रचना कर अपने गुरु जंगम मल्लिकार्जुनको समर्पित किया। काव्यके प्रारम्भमें कालिदास उद्भट नामक दो संस्कृत कवियोंका उल्लेख होनेपर भी यह काव्य किसीका अनुवाद नहीं है। इस काव्यके वर्णन सहज सुन्दर और शैली [illegible] है। रचनाशैलीके कारण इस काव्यको तेलुगुका पहला प्रबन्ध काव्य माना जा सकता है।

मल्लिकार्जुन पंडिताराध्यके लिखे अनेक काव्योंमेंसे शिवतत्वसारमु ही उपलब्ध है। इसमें शिवा! भवा! हरा! मृडा! के सम्बोधनात्मक मकुटों[5]

---

४ एक विशिष्ट प्रकारका काव्यभेद है जिसमें विभक्तियोंके क्रमसे पद्य बुने हैं।

५ मकुटमें सभी पद्योंके अन्तमें सम्बोधन एक जैसा होता है।

पर सैकड़ों पद्य हैं। यह तेलुगुका पहला शतक है। इस ग्रन्थमें पाशुपत शैव सिद्धान्त और शिवदीक्षाका विस्तारपूर्वक वर्णन है।

द्विपद रचनामें अनन्य और शिवकविसमूहके शिरोमणि पाल्कुरिकि सोमनाथने आन्ध्र संस्कृत और कन्नड भाषाओंमें अनेक ग्रन्थ लिखे हैं। इनमेंसे बसव पुराणमु पंडिताराध्य चरित्रमु सोमनाथस्तव अनुभवसार वृषाधिप शतकमु और बसवोदाहरणमु अपेक्षाकृत प्रसिद्ध रचनाएँ हैं। शिवपारम्यको सिद्ध करनेवाली अनेक प्रसिद्ध कथाएँ इन ग्रन्थोंमें हैं। सोमनाथकी कवितामें अद्वितीय प्रवाह है जिसकी तुलना तिरिलरि (जलप्रपात) से की गई है। द्विपद ग्रन्थको लोकप्रिय बनानेवाले और शैव धर्मके सिद्धान्तोंको जनता तक पहुँचानेवालोंमें सोमनाथ ही सर्व प्रथम हैं।

इस युगमें ही जिसे प्रारम्भिक (आदि) युग कहा जाता है—'मार्ग कविता' और देशी कविता के ऐसे उत्कृष्ट उदाहरण मिलते हैं कि इस युगको साहित्यकी प्रारम्भिक दशा माना नहीं जा सकता। एकाध देशी रचनाको छोड़ अन्य सभी अनुवाद ही हैं पर ये अनुवाद नीरस न होकर, मौलिक रचनाओं जैसे लगते हैं। गोदावरी तीरस्थ 'राजमहेंद्री'में उद्भूत आन्ध्र कविताकी अजस्र नस्तरूक वरचक चहुकि आदि स्थानोंमें फैल पड़ी और समग्र आन्ध्र प्रान्तको अपनी निर्मल धाराओंसे तृप्त करने लगी।

श्रीनाथयुग या काव्य युग (सन् १४००—१५०० तक)

एर्राप्रगडके बाद पुराणोंके अनुवादकी ओरसे ध्यान हटकर काव्य रचना यथाकथा मौलिक काव्य रचना की ओर दृष्टि गई। १५ वीं शतीसे १७ वी शती तक आन्ध्र साहित्यका स्वर्णयुग माना जाता है। १५ वीं शतीको प्रबन्ध[१] पूर्व युग कहते हैं या श्रीनाथ युग। इस युगके साहित्याकाशमें आज्वल्यमान सूर्यके समान कवि सार्वभौम श्रीनाथ विराजमान हैं तो भक्तिमाधुर्यकी शीतल ज्योत्स्ना बिखरनेवाले सुधाकर हैं महाकवि पोतन। दोनोंने अपनी-अपनी रचनाओंसे प्रबन्ध युगके बीज बोए।

इस युगके युगपुरुष हैं महाकवि श्रीनाथ। इस कवि सार्वभौमका जीवन काल है सन् १३८०-१४६ तक माना जाता है। ये अपने सोलहवें सालसे ही लिखने लग गए और मृत्युपर्यंत लिखते ही रहे। अत्यन्त विलासी और वैभवशाली जीवन बितानेके बाद इनके जीवनके अन्तिम दिन दुखद रहे।

श्रीनाथकी रचनाओंमेंसे श्रृंगार नैषध भीमखंड काशी-खंड हर विलास श्रीडाभिराम पल्नाटि वीर चरित्र आदि रचनाएँ प्राप्त हैं मरुत्तराट् चरित्र शालिवाहन सप्तशति और पंडिताराध्य चरित्र आदि

---

१ प्रबन्धके विषयमें रायल युग में विवरण दिया गया है।

रचनाएं उपलब्ध नहीं हैं। स्वच्छन्द प्रकृतिके इस महाकविने अपनी रचनाओंमें असाधारण प्रतिभाका प्रदर्शन किया है। अनुवादोंमें भी मूल इतिवृत्तको ऐसा चमका दिया है कि वे मौलिक-काव्यसे लगने लगे हैं। पांडित्यपूर्ण प्रौढ़ शैलीके साथ-साथ देशी रचनामें भी आप सिद्धहस्त थे। विद्वत्प्रिय माने गए नैषध और भीम खंड माने गए काशी खंड की रचना करनेवाले इस कविवरने द्विपद नामक देशी गेय छन्दमें पल्नाटि वीर चरित्र की रचना की। सीसमु नामक देशी छन्दके आप मास्टर माने गए हैं। विभिन्न अवसरोंपर कहे गए इनके मुक्तक बहुत प्रसिद्ध हैं। एक उदाहरण लीजिए —

सिरिगलवानिकि चेल्लुनु
तरुणुल पदियारुवेल तगपेंड्लाडन्
तिरिपेमुन किद्दरांड्रा
परमेशा! गंगविडुमु पार्वति चालुन्।

(सुदूर स्थितिके पल्नाडु इलाकेमें जहाँ पानीका अत्यन्त अभाव है जाते हुए श्रीनाथने कहा—श्री संपत्तिवालेका १६ सौ स्त्रियोंसे विवाह कर लेना समुचित है। पर भिखारीके दो दो स्त्रियाँ क्यों?—हे शंकर! तुम्हारे लिए पार्वती बस है गंगाको छोड़ दो न!)

इस महाकविने आन्ध्र देशके प्रत्येक राज दरबारमें अनन्य गौरवको प्राप्त किया। यही नहीं बल्कि रेड्डी राजाओंके यहाँ तो इनका कनकाभिषेक भी हुआ था। तेलुगु साहित्यके इतिहासमें इतना विलासी और वैभवशाली व्यक्तित्व किसी दूसरे कविका नहीं हुआ। श्रीनाथकी कविता शिवके जटाजूटसे विनिर्गत गंगा-तरंगोंकी भाँति अविरल वेग तथा पवित्र भावधारा लिए हुए है जिसमें अवगाहन करनेपर पाठकका मन परितृप्त हो जाता है।

महान् भक्त और महाकवि बम्मेर पोतना श्रीनाथके सम सामयिक थे। यही रिश्तेमें साले माने जाते हैं। इस रिश्तेपर आधारित कई गाथाएँ लोक-प्रचारमें हैं। पोतनाने श्रीमद्भागवतके अतिरिक्त भोगिनी दंडकमु और वीरभद्र विजयमु नामक दो अन्य काव्योंको भी रचा है। संस्कृतमें २ हजार श्लोकोंमें परिव्याप्त महाभागवत पुराणको पोतनाने ९ हजार पद्योंके महाकाव्यके रूपमें ढाला है और श्रीरामचन्द्रजीके चरण कमलोंमें समर्पित किया है। निजधार भूमीश्वर पोषण के लिए अपनी भाग्य कन्याको अधम नरेशोंके हाथ न बेचकर ये महात्मा जीवनभर हल चलाते रहे। एक बार इन्होंने कहा —

बालरसालसाल नवपल्लव कोमल काव्य कन्यकन्
कूळलकिच्चि यप्पडुपु कूडु भुजिंचुट कंटे

सत्कवुल हालिकुलैन नेमि ? गहनांतर सीमल कन्दमूलकौ
द्दालिकुलैन नेमि ? निजदारसुतोदर पोषणार्थमै ।

(बालरसाल (आम्र) वृक्षके नव पल्लव-सी कोमल काव्य-कन्याको नीचोंके हाथ बेचकर, (वेश्यावृत्ति-सी) उस भाड़ेकी कमाईकी अपेक्षा अपने बाल-बच्चोंके पेट भरनेके लिए, सत्कवि किसान बनें तो क्या हुआ? जंगलोंमें कन्दमूल खोद लें तो क्या हुआ?)

आन्ध्र महाभागवत भक्ति और माधुर्यका आगर है। साहित्यिक महत्वके साथ लोकप्रियतामें भी इस काव्यका सानी नहीं है। अनन्य भक्तिका निरूपण करनेवाला यह पद्य ऐसे पद्योंमेंसे एक है जो सामान्य जनताकी जबानपर है।

मंदार मकरंद माधुर्यमुन देलु
    मधुपंबु वोवुने मदनमुलकु ?
निर्मल मंदाकिनी वीचिकल दूगु
    रायंच सनुने तरंगिणुलकु ?
ललित रसाल पल्लव खादियै चोक्कु
    कोयिल सेरुने कुटजमुलकु ?
पूर्णेंदु चंद्रिका स्फुरित चकोरक
    मरुगुने सांद्र नीहारमुलकु ?
अंबुजोदर दिव्य पादारविंद
चिंतनामृत पान विशेष मत्त
चित्तमेरीति नितरंबु चेरनेर्चु
विनुतगुणशील ! माटलु वेयुनेल ?

(मंदार पुष्पोंके मकरंदके माधुर्यका स्वाद लेनेवाला भ्रमर नीमके पेड़ोंकी ओर जायगा? (कभी नहीं)। मन्दाकिनीकी निर्मल वीचिकाओंपर डोलनेवाला राजहंस क्या छोटे नदी-नालोंमें जायगा? कोमल आम्र-पल्लवोंपर मुग्ध होनेवाली कोयल क्या मामूली वृक्षोंके पास जायगी? पूर्णिमाके उज्ज्वल चन्द्रकी शीतल किरणोंको खानेवाला चकोर क्या सामान्य ओसोंपर रीझेगा? इसी प्रकार श्री विष्णु भगवानके चरण-कमलोंकी सुधाके पानसे मस्त-चित्त दूसरे विषयोंपर कैसे आसक्त होगा?)

कुछ कारणोंसे पोतनके भागवतके कुछ भाग नष्ट हो गए। उन भागोंकी पूर्ति सिंगन, गंगन और वेलिगंदल नारय ने पूरा किया।

इस युगमें इन दोनों मूर्धन्य कवियोंके बाद पिल्ललमर्रि पिन वीरभद्रका स्थान है। इनके लिखे काव्य-ग्रन्थोंमें शृंगार शाकुन्तलमु और जैमिनी भारतमु

(वहाँ (हिमालय पर) जाकर, आकाशको चूमनेवाले शिखरोंसे गिरते झरनोंके समूहसे चंचल तरंगोंके शब्दोंको सुनकर मोर पंख फैलाकर नाचनेवाले मयूरोंके समूहसे युक्त और पर्वतोंमें विचरनेवाले हथिनियोंके सूँड़ोंसे हिलाए जानेवाले वृक्षोंवाले दीर्घ जंगलको उस ब्राह्मणने देखा।)

भुवन विजयके आठ प्रसिद्ध कवियोंमें (अष्टदिग्गज) पेद्दन प्रमुख पेद्दन का नाम आता है। रायलुने इनका जैसा सम्मान किया वैसा सम्मान शायद ही किसी और कवि को मिला हो।

भारतमागादि मल्लन्ना राजशेखर चरितमु नंदितिम्मन्ना पारिजाता-पहरणमु धूर्जटि कविका काळहस्तिमाहात्म्यमु और काळहस्तीश्वर शतकमु नृसिंह कविका कविकर्णरसायनमु रामराजभूषण पिंगळि सूरन्ना परमयोगिविलासमु और तथा परिचयमु अय्यलराजु रामभद्र कविका 'रामाभ्युदयमु' तेनालि रामकृष्णका पांडुरंग माहात्म्यमु आदि प्रसिद्ध काव्य हैं।

नासिकापर लिखे गए निम्न लिखित सुन्दर पद्यके कारण नंदितिम्म कहते हैं मुक्कु (नाक) तिम्मन्न के नामसे प्रख्यात हुए।

"नानासूनवितान वासनल नानंदिंचु सारंगमे
लानन्नोल्लदटंचु गंधफलि बल्कानन् दपंबंदियो
ना नासाकृति बूनि सर्वसुमनस्सौरभ्य संवासियै
पूनें प्रेक्षणमालिकामधुकरीपुंजंबु निर्वंकलन्।

(विविध पुष्पोंकी सुगंधियोंसे प्रसन्न होनेवाला भ्रमर मुझ क्यों नहीं चाहता ? इस क्षोभके मारे घोर तप कर, चंपा पुष्प स्त्रीकी नासिका बन गया। तब सब प्रकारके सुमनोंके सौरभके योग्य बन उसने वीक्षणमालिकारूपी मधुकरीसमूहको अपने दोनों तरफ रख लिया।)

नंदितिम्मनके पारिजातापहरण काव्यमें श्रीकृष्णकी महिषी सत्यभामाके प्रणय-मानका हृदयंगम वर्णन किया गया है। श्रीकृष्णपर क्रुद्ध होकर सत्या उन्हें लात मारती है तो कवि कहता है—

जलजातासन वासवादि सुरपूजाभाजनंबै तन
र्चुल्लसितम्मगु पच्चविल्तु शिरमन्तो वामपादंबुनन्
तोलगंद्रोसे लतांगि यट्ललयगु नाथुल् नेरमुल्सेय पै
रलुकन् जेंदुटयेल्ल नाथुलनुचित व्यापारमुल्सेतुरे ?

(ब्रह्मा इन्द्र आदि देवताओंसे पूजित मन्मथके जनक (श्रीकृष्ण भारे परस स्पर्श किया। ऐसा होना स्वाभाविक ही है क्योंकि कारण क्रुद्ध हुआ क्रियाको 'उचित-अनुचितका

तिमकि सूरन्न इस युगके अनन्य प्रतिभाशाली
वसमु और प्रभावती प्रद्युम्नमु नामक दो प्रबन्ध

नामक द्व्यर्थि काव्यकी रचना की है। कल्पपूर्णोदयम् कविकी भावुक कल्पना और अद्भुत-कथा-निर्वाह-कौशलका ज्वलन्त प्रमाण है। मानों यह एक पद्यात्मक उपन्यास ही है। राघवपाण्डवीयम् में समग्र काव्यके प्रत्येक पद्यमें रामायणपरक तथा भारतपरक दोनों ओर लगनेवाले अर्थ मिलते हैं। शब्दश्लेष और अर्थश्लेषके सहारे, दो भिन्न कथाओंका निर्वाह करना कवि की अलौकिक प्रतिभा तथा उद्भट पाण्डित्यका प्रमाण है।

सचमुच ही कृष्णदेवरायका युग आन्ध्रसरस्वतीके भाग्यके अनुकूल बन रहा है। महापराक्रमी एवं कभी भी पराजित न होनेवाले उस महाराजने राज्यलक्ष्मी-की अपेक्षा साहित्यलक्ष्मीकी ही अर्चना की है।

रामराजभूषणकवि श्रीकृष्णदेवरायके दामाद रामराज (तल्लिकोट सन् १५६४–१५६६ के युद्धके प्रसिद्धवीर) के दरबारमें थे। इन्होंने वसुचरित्र नामक श्लेष-काव्य हरिश्चन्द्र नलोपाख्यानम् नामक द्व्यर्थि काव्य और नरस भूपालीयम् नामक लक्षण ग्रन्थकी रचना की है। रामराज-भूषण कवि उच्च कोटिके कवि पंडित और आचार्य थे।

तेलुगु साहित्यकी सर्वप्रथम कवयित्री आतुकूरिमोल्ल भी इसी युगमें हुई। आतुकूरिमोल्लने रामायण की रचना कर, आन्ध्रसाहित्यमें अपने लिये अमर स्थान बना लिया है। मोल्ल रामायणकी शैली प्रौढ है ग्रंथमें जिस पद्य बचन मनोहारी बन पड़े हैं। तिम्मक्क नामक एक कवयित्री ने सुभद्राकल्याणम् नामक सुन्दर काव्यकी रचना की है।

तिरुपति वेंकटेश्वर (बालाजी) के मन्दिरमें संकीर्तन करनेवाले महाभक्त अन्नमाचार्यका उल्लेख ऊपर हो चुका है। पेद तिरुमलाचार्य चिनन चिन तिरुमला-चार्य और तिरुवेंगलय्य आदि इन्हींके परिवारके सुप्रसिद्ध साहित्यकार हैं। तिरुवेंगलय्यने काव्य प्रकाशिका और 'अमरकोश' की टीकाएं लिखी हैं। वेंकमपूडि वेंगमामात्यने श्रीकृष्णकर्णामृत का सुन्दर पद्यानुवाद किया है।

इस युगमें ऐतिहासिक महत्वके कुछ काव्य लिखे गए हैं। इनमें कासे सर्वप्प का काकनाथ राजवंशावळि (वरंगलके प्रतापरुद्रकी गाथा) मदुकूल वेंकय्यका 'नरपतिविजयम्' (विजयनगरके आरवीटि राजाओंका इतिहास) और कुमार धूर्जटिका कृष्णराय विजयम् (श्रीकृष्णदेवरायके जीवनसे संबन्धित) मुख्य हैं। ये काव्यग्रन्थ तत्कालीन राजदरबारियोंके आश्रयमें लिखे गए हैं। काव्य होनेपर भी इनमें कई ऐतिहासिक सत्य भरे पड़े हैं।

विजयनगरके पतनके बाद दक्षिणके बहमनी राजवंशके मुसलमान बादशाहों ने भी तेलुगु साहित्यकी श्रीवृद्धिमें प्रशंसनीय योग दिया है। कंदुकूरि रुद्रकवि निरंकुशोपाख्यानम् जनार्दनाष्टकम् सुग्रीव विजयम् की रचना की है।

तंजाऊरके बाद मदुरा और पुदुक्कोट राज्य पण्डितों और कवियोंके आश्रय स्थान बने। मदुराके नायक राजाओंके समयमें कई पद्य-ग्रन्थोंका प्रणयन हुआ है जिनमें समुखमु वेंकट कृष्णप्प नायकका जैमिनि भारतमु, कुकुटि वेंकटाचलपतिका भारत भागवत वचनमुलु, सुपाकुल अनन्त भूपालका विष्णु पुराणमु, सुन्दर काण्ड और भगवद्गीता आदि उल्लेखनीय हैं। पद्य काव्योंमें कामेश्वर कवि कृत सत्यभामा सान्त्वनमु, वेंकटकृष्णप्प नायकके अहल्या संक्रन्दनीयमु, राधिका सान्त्वनमु, तारमु वेंकट पतिका तारा शशांक विजयमु, मुद्दुपलनि (कवयित्री) का राधिका सान्त्वनमु प्रसिद्ध हैं। ये सभी उत्कट शृंगारके काव्य हैं। इनमें तारा शशांक विजयमु में तो अश्लील शृंगारकी हद कर दी गई है। ऐतिहासिक वचन (गद्य) ग्रन्थोंमें रायवाचकमु प्रमुख है।

पुदुक्कोटके कवियोंमें गुरुरपाटि वेंकनका नाम सर्वप्रथम लिया जाता है। इन्होंने आन्ध्र भाषार्णवमु नामक शब्दकोश तथा मत्स्य पुराण रघुनाथीयमु राघव प्रशस्ति आदि ग्रन्थोंकी रचना की। राय रघुनाथ नायकने (१७६९-१७८९) पार्वती परिणयमु नामक प्रौढ़ काव्यकी रचना की। ये एक उद्भट पण्डित थे।

मैसूर राज्यके आन्ध्र कवियोंमें पाल्वेकरि कदिरीपति प्रमुख हैं। इन्होंने शुकसप्तति नामक काव्य-ग्रन्थ की रचना की है। इस काव्यमें उस समयकी सामाजिक परिस्थितियोंका सजीव चित्रण मिलता है। गद्य काव्योंमें कल्लूरि वीरराजुका 'वचन भारतमु' प्रसिद्ध है। नञ्जराजुका 'हालास्य माहात्म्यमु' भी एक सुन्दर रचना है।

यह न समझना चाहिए कि इस युगमें केवल दक्षिणी आन्ध्र देशमें ही साहित्य-रचना होती रही अपितु मध्य आन्ध्र और तेलंगानामें भी उच्च कोटिके साहित्यकी सृष्टि हुई है।

१८ वीं शतीके मध्य आन्ध्रके कवियोंमें कामेश्वर वेंकट नामक कविसार्वभौम कूचिमञ्चि तिम्मकवि जग्गकवि आडिदमु सूरकवि कंकंटि पापराजु, दिट्टकवि नारायण कवि प्रमुख हैं। तिम्मकविका अच्चतेलुगु रामायणमु (ठेठ तेलुगु) और ठेठ तेलुगुमें ही लिखा गया नीला सुन्दरी परिणयमु आदि प्रसिद्ध ग्रन्थ हैं। एनुगु लक्ष्मण कवि एलकूचि बालसरस्वती (पुरुष ही हैं!) और पुष्पगिरि तिम्मनने भर्तृहरिके सुभाषितोंका पद्यानुवाद किया है। इन तीनोंमेंसे लक्ष्मण कविकी रचनाका ही अधिक प्रचार हुआ। मंचल्लिगिरि आनन्द कवि और पिंगलि एल्लनार्य 'वेदान्तसार' और तोभ्य चरित्रमु नामक दो काव्य लिखे हैं जो ईसाई-धर्मसे सम्बन्धित हैं।

१९ वीं शतीके कवियोंमें शिष्टु कृष्णमूर्ति शास्त्री मण्डपाक पार्वतीश्वर शास्त्री कोटिलाथमु वेंकटकवि विशेष रूपसे उल्लेख्य हैं। कृष्णमूर्ति शास्त्रीने सर्व कामदा परिणयमु पञ्चतन्त्र आदि काव्योंके अतिरिक्त संस्कृतमें हरिकारिकाएँ

नामसे एक मान्य व्याकरणकी रचना की है। पार्वतीश्वर शास्त्रीने लगभग बत्तीस ग्रन्थ लिखे हैं जिनमें राधाकृष्ण सम्वादमु अधिक प्रसिद्ध है। वेंकट कविने शिशुपाल वध' और 'वाल्मीकि रामायण'का सुन्दर अनुवाद प्रस्तुत किया है।

इस युगकी कवयित्रियोंमें तरिगोण्ड वेंकमाम्बा नामक कवयित्री प्रमुख है। इन्होंने वेंकटाचल महात्म्यमु ज्ञान वासिष्ट रामायणमु और राजयोगसारमु नामक ग्रन्थ लिखे हैं।

इसी समयके तत्कालीन कवियोंमें सुरभि माधवरायलु, परशुरामपन्तुल लिंगमूर्ति, मरिंगण्टि कवि उल्लेख योग्य हैं। माधवरायलु जटप्रोलु रियासतके शासक थे। उन्होंने चन्द्रिका परिणयमु की रचना की जिसमें श्लेष यमक आदि शब्दालंकारोंका सुन्दर निर्वाह किया गया है। लिंगमूर्तिने यौवनके दिनोंमें रति मन्मथ विजयमु नामक प्रबन्धकी रचना की। वृद्धावस्थामें आपने सीतारामाञ्जनेय सम्वादमु नामसे अद्वितीय वेदान्त-ग्रन्थ की रचना की। आपके पुत्र रामसूरिने गुरु चरित्र नामसे एक वेदान्त-ग्रन्थकी रचना की है।

रायलयुगमें शृंगार रसका जो प्रवाह उमड़ा उसने अपनी रस-धारासे सारे युगको आप्लावित कर दिया। यह प्रवृत्ति अश्लीलताकी ओर अधिक झुकी हुई थी। राजाओंमें जो निष्क्रियता और विलासिता फैल रही थी उसीके प्रतिबिम्ब थे ये शृंगार-काव्य। काव्योंमें हृदयपक्षकी अपेक्षा बुद्धिपक्ष ही विशेष प्रबल था। अतः भाव पक्षकी अपेक्षा कलापक्ष ही अधिक निखर उठा था। परिणाम-स्वरूप सभी रचनाओंका एकमात्र लक्ष्य पाण्डित्य प्रदर्शन ही रह गया था। यह युग यक्षगान-साहित्य के लिए स्वर्ण युग है। बीसियोंकी संख्यामें यक्षगान लिखे गए। इसी समय गद्य-साहित्यका भी आरम्भ हुआ।

प्रान्त तो तमिल था और राजा महाराष्ट्रीय शासक थे फिर भी इस कालमें आन्ध्र-साहित्यकी अपूर्व श्रीवृद्धि हुई।

तंजाउर, मदुरा मद्रास विजयनगर, बोब्बिली वेंकटगिरि आदिके अतिरिक्त आन्ध्र देशके सभी छोटे-मोटे राज्य-रियासत कविताके धाम बन गए।

आधुनिक युग (१८७५ से १९२० तक)

सन् सत्तावनका स्वतन्त्रता-युद्ध भारतीय साहित्यमें ही नव जागरणका सन्देश लाया हो ऐसी बात नहीं है बल्कि इसके परिणामस्वरूप पाश्चात्य सभ्यताकी चकाचौंधसे मुँह फेरकर भारतीय स्वत्व और स्वभाषाओं की ओर ध्यान देने लगे। समग्र राष्ट्रमें उद्बुद्ध यह नवीन चेतना राजनैतिक धार्मिक सामाजिक और साहित्यिक क्षेत्रोंमें अभिव्यक्त होने लगी। राजनैतिक क्षेत्रमें कांग्रेसके रूपमें धार्मिक क्षेत्रमें आर्य समाजके रूपमें सामाजिक क्षेत्रमें ब्रह्म समाजके रूपमें व्यक्त हुई। विचारोंकी अभिव्यक्तिका साधन साहित्य ही है। अतः नव जागरणका मुख्य प्रभाव इसके

प्रत्येक प्रान्तके भाषा-साहित्यमें परिलक्षित होने लगा। एक ही तरहके भावोंको भिन्न-भिन्न भाषाका जामा पहनाकर व्यक्त किया जाने लगा।

आधुनिक युगकी सभी प्रवृत्तियों एवं आन्दोलनोंका सम्यक प्रभाव तेलुगु साहित्यपर पड़ा।

तेलुगुके आधुनिक साहित्यसे परिचय प्राप्त करनेसे पहले दो ऐसे अँग्रेज महानु भावोंके नामोंका उल्लेख होना चाहिए, जिनका आन्ध्र चिर ऋणी है। सर सी पी. ब्राउन महाशयने अथक परिश्रम कर तेलुगुकी अनेक अप्रकाशित एवं जीर्ण प्राय पुस्तकोंका पुनरुद्धार किया तेलुगुका एक व्याकरण बनाया और अँग्रजी-तेलुगु, तेलुगु-अँग्रेजीके शब्दकोश तैयार किए। दूसरे महानुभाव हैं कर्नल कालिन मेकन्जी जिन्होंने गाँव-गाँव घूमकर प्राचीन पुस्तकोंका उद्धार किया लुप्त इतिहासपर प्रकाश डाला और कवियोंकी लुप्त रचनाओंको प्रकाशमें लानेका महान कार्य किया।

आधुनिक युगके प्रारम्भमें ही चिन्नयसूरि (१८०९ १८६२) नामक एक बड़े विद्वान्ने बाल-व्याकरणमु की रचना की जो इस भाषाका परिनिष्ठित (स्टैण्डर्ड) व्याकरण माना जाता है। उस व्याकरणके लक्ष्यके रूपमें नीति चन्द्रिका (पञ्चतन्त्र) नामक पुस्तकको गद्यमें लिखा।

१९ वीं शतीके चतुर्थ चरणका आरम्भ ही आधुनिक युगका उप काल है। पाश्चात्य प्रभावसे नव चेतनाकी जो लहर उमड़ पड़ी उसके परिणामस्वरूप साहित्यमें विभिन्न शैलियों और रीतियोंका प्रारम्भ हुआ। गद्य साहित्यके लिए वीरेशलिंगम और पद्य साहित्यके लिए तिरुपति-वेंकट कवि युग पुरुष के रूपमें नवीन साहित्यका श्रीगणेश किया। तेलुगु कविताको पाण्डित्यके कठघरेसे मुक्त कर, उसे जनसामान्य तक पहुँचाकर, फिरसे उसे नव जीवन देनेवाले इन महाकवियोंके शिष्य-प्रशिष्योंसे आधुनिक आन्ध्र साहित्य भरा पड़ा है।

आन्ध्र साहित्यमें प्राचीन सम्प्रदायोंके अनुकूल भाषा और भावोंमें कविता करनेवाले आज भी हैं। १९ वीं शतीके अन्तिम चरणमें और २ वीं शतीके प्रथम दशकमें इन प्राचीन सम्प्रदायवादी कवियोंकी संख्या अधिक थी। इनमें श्री श्रीपाद कृष्णमूर्ति शास्त्री (१८६६ १९६१) का विशिष्ट स्थान है। शास्त्रीजीने रामायण भारत और भागवत इन महाकाव्योंके अतिरिक्त सौ से अधिक काव्योंकी रचना की है। आप राजमहेन्द्रीमें रहते थे। आपकी कविता विषय और शैलीमें एकदम प्राचीन ढर्रे की है। दीर्घ समासोंसे भरी हुई होनेपर भी आपकी कविताओंमें अनुपम प्रवाह है। श्री वेंकटशास्त्रीजीके बाद आपको राजकविके पदपर नियुक्त कर आन्ध्र सरकारने आपका सम्मान किया था।

प्राचीन सम्प्रदायवादी कवियोंमें श्री वाविलकोलनु सुब्बाराव पनमक्रिय शेषाद्रि शर्मा कोकोण्डा वेंकटरत्नम् पन्तुलु, वड्डादि सुब्बारायडु, वेदमु वेंकटराय शास्त्री मल्लादि सूर्यनारायण शास्त्री वासुदेवरामालु आदि मुख्य हैं। 'आन्ध्र वाल्मीकि'

के नामसे प्रसिद्ध वाविलकोलनु सुब्बारावने वाल्मीकि-रामायण का यथामूल अनुवाद किया उनके जीवन कालमें ही इस अनुवादके चार संस्करण प्रकाशित हो गए थे। उसकी व्याख्याके रूपमें उन्होंने स्वयं मन्दरमु नामक टीका भी लिखी है।

प्राचीन सम्प्रदायको न छोड़ते हुए नवीन भावासे युक्त कविता करनेवालोंमें श्री वेंकट-पार्वतीश्वर कवि-युग्म प्रमुख हैं। इनकी एकान्त सेवा एक तरहसे मर्मकविता (रहस्यवादी कविता) का बीज बोनेवाली है।

वीरेशलिंगम पन्तुलुगारु भी शुरू-शुरूमें प्राचीन सम्प्रदायवादी रचनाएँ करते थे पर समाज-सुधारके लिए पद्यकी अपेक्षा गद्यको अधिक उपयुक्त मानकर बादमें गद्यमें ही रचनाएँ करने लग गए। शुद्धान्ध्र-निरोष्ठ्य-निर्वचन-नैषधमु नामक काव्यमें आपने अपने पाण्डित्यका प्रदर्शन किया है। इस ग्रन्थको आपने ठेठ तेलुगुमें बिना ओष्ठ्य वर्णोंके और वचन (गद्य) में लिखा। उसके बाद 'सारद-सरस्वती सम्वादमु' में आपने निर्जीव-सी तेलुगु कविताकी दुर्दशाका हृदय विदारक चित्रण किया।

बीसवीं सदीके पहले दशकमें यद्यपि प्राचीन काव्यधाराका जोर रहा फिर भी नवीन कविता धीरे-धीरे अपनी जड़ें जमाने लगी थी। गुरजाडा अप्पा रावजीने मुत्याल सरमुलु नामक नव कविताओंके एक संग्रहका प्रकाशन कर नव कविताका श्रीगणेश किया। कोत्तपातल मेलु कलयिक कोम्मेसंगुलु चिम्म (प्राचीन और नवीनके सुन्दर सम्मेलनसे नव आलोकको फैलाते) कविता करनेकी प्रतिज्ञा नूतन वस्तु, नए छन्द और व्यावहारिक भाषाका प्रयोग करते हुए, सर्व मानव समता देशभक्ति आदि भावोंसे भरी कविताएँ लिखीं। 'देशमन्टे मट्टि कादोयि देशमन्टे मनुषुलोयि (देशका अर्थ मिट्टी नहीं है देशसे मतलब जनतासे है।) भक्ति कलदि मालगदियै मेनुगुल माल्लवुदालोयि [यदि अच्छाई माला (हरिजन पञ्चम) है तो मैं भी वही बनूँगा।] आदि पंक्तियोंका सूक्तियोंके रूपोंमें उपयोग होता है।

श्री रायप्रोलु सुब्बारावने प्राचीन गौरवका गान करते हुए, राष्ट्रीयताके भावोंका प्रचार किया था। आपपर विश्वकवि गुरुदेवका प्रभाव पड़ा था।

वेदशाखलु वेलसे निचट
आदिकाव्यं बलरे निचट।

[वेदोंकी शाखाएँ फैल गईं यहाँ आदि काव्य रचा गया यहींपर।]

१९११ में ही इन्होंने कविता तृणकंकणमु नामक खण्ड काव्योंकी रचना कर, भाव कविता (छायावादी कविता) के बीज बोए।

२ वीं सदीके दूसरे दशकमें स्वतन्त्रताका आन्दोलन जोर पकड़ने लगा। सत्याग्रह-समरका सर्वप्रथम प्रारम्भ गुन्टूर जिलेमें हुआ था। साइमन कमीशन को पहली बार काला झण्डा दिखानेवाला वीर एक आन्ध्र ही था। उस वीरका नाम था श्री टंगुटूरि प्रकाशम पन्तुलु जो बादमें आन्ध्र-केसरी कहलाया। समग्र देशकी

स्वतन्त्रताकी पुकारके साथ पृथक् प्रान्तकी माँग भी आन्ध्रकी थी। इन दोनों भावोंसे मिलकर देशके और विशेषकर आन्ध्रकी प्राचीन गौरव गाथाएँ, वर्तमान दुर्दशा आदि पर प्रभाव डालने वाली कविताएँ करनेकी प्रेरणा दी। श्री गरिमेल्ल सत्य नारायण कविने ब्रिटिश सरकारकी निरंकुशताका बड़ा ही मार्मिक वर्णन करते हुए लिखा है —

मूठ नकुटविनारसु बोसिडि तमिलिवि
मार माटलाडराडु अम्मु
पाट पाड वद्दंटाडु टोपी
डासि पोपुन बादुतारु।

[(ब्रिटिश सरकारका) यह सिपाही हमारे मुँहपर १४४ धारा लगाकर हमें बोलनेसे मना करता है। हमें अपना (राष्ट्रीय) गीत तक गाने नहीं देता। (सिरपरसे) टोपी नीचे फेंककर पीठपर प्रहार करता है।]

हम्पी क्षेत्रमु नामक कवितामें कोडालि सुब्बाराव प्राचीन आन्ध्रके गौरवका स्मरण कर और वर्तमानकी दुर्दशाको देखकर कराह उठते हैं —

शिललु द्रविंचि एड्चिनवि,
जीर्णमुलैनवि तुंगभद्रलोपल गुडिगोपुरमुलु
सभास्थलमुलैनवि भौतमुलकु पुरमुलु
चरितकी मुमिमिनोधिनायाम्म वसुन्धराधिपोज्ज्वल विजय
प्रताप रम्यगाथल स्वप्न कथावशेषमै।

[शिलाएँ भी पिघल कर रो पड़ीं। मन्दिर और महल तुंगभद्रामें डूबकर खण्डहरोंमें परिवर्तित हो गए। वे भूतोंके सभास्थल बने हुए हैं। आन्ध्र राजाओंके उज्ज्वल प्रतापकी कहानी स्वप्न-कथा मात्र बनकर इतिहासमें लुप्त प्राय हो गई है।)

विश्वनाथ सत्यनारायणने प्राचीन आन्ध्र वैभवका गान करते हुए आन्ध्र-प्रशस्ति आन्ध्र-पौरुष आदि कविताएँ लिखी हैं।

ब्रिटिश शासनकी क्रूरता और प्रचण्डताको देखकर कुछ सुकुमार विहंगम अपने नीड़ोंमें छिपे-छिपे कुछ गुनगुनाने लगे। प्रथम महायुद्धके बाद सारे देशमें निराशा-सी फैल गई थी। जिस प्रकारकी परिस्थितियोंमें हिन्दी जगत्में छायावादका जन्म हुआ तेलुगुमें उसके (छायावादके) समकक्ष भाव-कविता पनप उठी और १९२ के बाद तेलुगु कवितामें काल्पनिक प्रयोग आत्माभिव्यक्ति भावातिरेक कल्पना *अस्पष्टता एवं प्रकृति-प्रेम आदिकी धूम मच गई। रीति और नियमोंके स्थानपर* अब भाव और कल्पना आग्रह बढ़ गया।

नाटक

यक्षगान देशी रूपक है। ऐसा माना जाता है कि इन देशी रूपकोंको छोड़ संस्कृत रूपकके लक्षणानुसार श्री कोराड रामचन्द्र शास्त्रीने 'मञ्जरी मधुकरीयम्

नामक पहला नाटक लिखा। उनके बाद कई प्रसिद्ध पण्डितों और कवियोंने संस्कृत अंग्रेजी और अन्य भाषाओंके नाटकोंके सुन्दर अनुवाद प्रस्तुत किए हैं। केवल अभिज्ञान शाकुन्तलम् ही के लगभग बीस अनुवाद प्रकाशित हुए हैं।

आन्ध्र नाटक साहित्यकी विशेषता यह रही है कि यहाँके नाटक प्रारम्भसे ही रंगस्थल को ध्यानमें रखकर लिखे जाते थे। १८८ में धारवाड़ (महाराष्ट्र)से जो नाटक कम्पनियाँ आईं, उनके प्रभावसे कई नाटक मण्डलियाँ खुलीं और अभिनयके लिए कई सुन्दर नाटक लिखे गए। बल्लारिके धर्मवरम् रामकृष्णमाचार्य (१८८४) ने कई मौलिक नाटक लिखे और सरस विनोदिनी सभाके तत्वावधानमें ये नाटक अभिनीत हुए। चिलकमर्ति लक्ष्मीनरसिंहमजीने गयोपाख्यानम् पारिजातापहरणम् आदि पौराणिक नाटक लिखे। तिरुपति-वेंकट कवियोंके पाण्डव उद्योग विजय नाटक बहुत प्रसिद्ध हैं।

१९ वीं शतीमें लिखे गए नाटकोंमें विषाद-सारंगधर (प्रथम दुखान्त नाटक) गुरजाडा अप्पारावका 'कन्या शुल्कम्' (प्रथम सामाजिक-व्यंग्यात्मक नाटक जो व्यावहारिक भाषामें लिखा गया है।) और वेदम् वेंकटराय शास्त्रीजीका 'प्रताप रुद्रीयम्' (पात्रोचित भाषाका प्रयोग करनेवाला प्रथम नाटक) विशेष रूपसे उल्लेखनीय हैं।

२० वीं शतीके प्रारम्भमें इसी प्रकारके पौराणिक इतिवृत्तपर आधारित नाटक ही अधिक लिखे गए। द्वितीय दशकमें सामाजिक नाटकोंकी रचना होने लगी।

अन्य साहित्यिक प्रक्रियाओंके समान ही वीरेशलिंगमजीने प्रहसनोंके रूपमें एकांकीका प्रारम्भ किया है। उस समय कोक्कोण्ड वेंकटरत्नम पन्तुलुने नरकासुर विजय-व्यायोग का अनुवाद कर संस्कृतके एकांकीके स्वरूपका दिग्दर्शन कराया।

वीरेशलिंगम पन्तुलुजीका राजशेखर चरित्र जो उस समयके समाजका दर्पण है तेलुगुका पहला उपन्यास माना जाता है। यह विकार आफ वेकफील्ड का छायानुसरण मात्र है। गुलीवरकी कहानियोंके समान उन्होंने सत्य राजा पूर्व देश यात्राएँ नामक पुस्तक भी रची है।

कोक्कोण्ड वेंकटरत्नम पन्तुलुने कादम्बरीका आधार लेकर सन् १८९४ में महाश्वेता नामक उपन्यास लिखा।

स्वयं लिखनेकी अपेक्षा प्रतियोगिताएँ चलाकर वीरेशलिंगमजीने कई उपन्यास लिखवाए। इनमें चिलकमर्ति लक्ष्मीनरसिंहमजीके रामचन्द्र विजयम् हेमलता कर्पूरमञ्जरी अहल्याबाई सौन्दर्यतिलका मुख्य हैं। केतवरपु वेंकटशास्त्री और भोगराजु नारायण मूर्तिने कई ऐतिहासिक उपन्यास लिखे हैं। अडवि बापिराजुके 'हिमबिन्दु' 'गोन गन्नारेड्डी' आन्ध्रके इतिहाससे सम्बन्धित हैं। विश्वनाथ सत्यनारायणजीने भी कई उपन्यास लिखे हैं। इनमें सबसे छोटा उपन्यास एकवीरा है। यह उपन्यास रचना-कौशलमें अद्वितीय है। आपका सबसे बड़ा उपन्यास वेयिपडगलु (हजार फन) तो भारतीय संस्कृतिका मानों विश्वकोष ही है

सन् १८५ से ही संस्कृतकी कई कथाओंके अनुवाद और छायानुवाद होने शुरू हो गए थे। विषयमूर्ति, वीरेशलिंगम पन्तुलु, वेंकटरत्नम पन्तुलु, वेंकटराम शास्त्रीने शिष्ट भाषामें कई कहानियाँ लिखी हैं पर इन्हें आधुनिक कहानीकी परिभाषाकी कसौटीपर नहीं कसा जा सकता।

२ वीं शतीके प्रारम्भमें कई पत्र-पत्रिकाओंमें संस्कृतके अतिरिक्त अंग्रेजी एवं मराठी कहानियोंके अनुवाद प्रकाशित होते थे।

श्री गुरजाडा अप्पारावने सन् १९११में आजकी कहानी रचनाका श्रीगणेश किया। दिद्दुबाटु (सुधार-सुधार) मेटिल्डा पेंशन मनुपुरुषाय (भगवानके बनाए हुए हैं मानवो!) आदि कहानियाँ तेलुगुकी प्रारम्भिक कहानियाँ हैं। १९१५ में दैनिक आन्ध्र-पत्रिका के शुरू होते ही अधिक संख्यामें कहानियाँ लिखी जाने लगीं।

चिन्ता दीक्षितुलुकी जासूसी कहानियाँ कोडवटिगण्टि वेंकट सुब्रह्मण्य की सामाजिक कहानियाँ चिन्ता दीक्षितुलुकी बालोपयोगी कथाएँ इसी युगकी हैं। मुनिमाणिक्यम नरसिंहरावजी गृहस्थ जीवनमें निहित हास्यकी अभिव्यक्त करते हुए रचना करने लग गए।

१९२ में भारती के प्रकाशनसे कहानी रचनाको और भी प्रोत्साहन मिला।

आलोचनात्मक साहित्यके जन्मदाता भी वीरेशलिंगम् ही हैं। आन्ध्र कवुल चरित्र उनकी विशिष्ट कृति है। २० वीं शतीके प्रथम दशकमें सर सी आर. रेड्डीका कवित्व तत्व विचारमु आधुनिक (पाश्चात्य विचार-धारासे प्रभावित) आलोचनाका प्रवर्तक ग्रन्थ है। इस समय तेलुगुमें आलोचनात्मक पुस्तकें लिखी तो गईं, पर उनकी संख्या अधिक नहीं है।

लेखकोंकी संख्या रचनाओंकी संख्या और साहित्यके विभिन्न प्रकारोंके विस्तारकी दृष्टिसे भारतीय साहित्यके क्रममें तेलुगु साहित्यका एक विशिष्ट स्थान है। कहा भी है कि आन्ध्रके प्रत्येक घरमें कम-से-कम एक कवि-है। इस विस्तृत साहित्यका भिन्न भीड़से पृष्ठोंमें परिचय मात्र करानेका यह अल्प प्रयास है।

[नोट—सन् १९२ स आजतकके तेलुगु साहित्यका संक्षिप्त परिचय कवि-श्री माला दम्मु—काटूरि वेंकटेश्वर और पिंगलि लक्ष्मीकान्तमुने दिया गया है।]

● ● ●

तिरुपति-वेंकट कवुलु

[कवि-परिचय]

तिरुपति-वेंकट कवुलु

• • •

"दोसमटं चेरिगिपुनु बुद्धुलोय्य बौद्धिलार मी
मीसमु रेंडु भाषलन्दु मेमे कवीन्द्रुलमंचु तेल्पगा
रोसमु कल्गिनन् मगिनवार ममुन् गेल्वुडु-गेल्चिरेनि मी
मीसमु तीसि मी पदसमीपमुलं दललुंचि मोक्कमे।"

[यह जानकर भी कि मूँछ रखना दोष है अपनी विद्वत्ताके साथ मूँछ यह बतानेके लिए बढ़ा रखी है कि दोनों भाषाओंमें—आन्ध्र और संस्कृतमें—हम ही कवीन्द्र हैं। जिन्हें इन मूँछोंको देखकर रोष आता हो वे हमें जीत लें। यदि जीतें तो इन मूँछोंको निकालकर, आपके चरणोंपर सिर न रख दें?]

इस प्रकारकी अपूर्व प्रतिज्ञा कर, एक अर्धशती तक आन्ध्र-कविता-साम्राज्य पर निर्द्वन्द्व शासन चलानेवाले कवियुग्मके कवि श्री तिरुपति और श्री वेंकट। उनके शिष्यों-प्रशिष्यों एवं एकलव्य शिष्योंसे भरा पड़ा है आधुनिक-आन्ध्र-साहित्य जगत्।

इस कवियुग्ममें पहले व्यक्ति थे दिवाकर्ल तिरुपति शास्त्री हैं दूसरे हैं श्री चेळ्ळपिळ्ळ वेंकट शास्त्री। तिरुपति शास्त्रीजीका जन्म कृष्णा जिलेके यण्डगण्डि नामक ग्राममें सन् १८७१ में हुआ और मृत्यु सन् १९१९ में हुई। माताका नाम शेषम्मा और पिताका नाम वेंकटावधानी था। वेंकट शास्त्रीजीका जन्म एनाम (भारतमें फ्रांसीसी उपनिवेश) में हुआ पर निवासस्थान पश्चिम गोदावरी जिलेका कडियम नामक ग्राम था। इनका जन्म सन् १८७० में हुआ और मृत्यु सन् १९५० में। श्री वेंकटशास्त्री-

तिरुपति-वेंकट कवुलु

• • •

"दोसमटं चेरिंगियुन् दुंदुडुकोप्पग बेंचिनार मी
मीसमु रेंडु भाषलकु मेमे कवींद्रुलमनु देल्पगा
रोसमु कलिगिन कविवरुल ममु गेल्वुड-गेल्चिरेनि यी
मीसमु तीसि मी पदसमीपमुलं दललुंचि मोक्कमे।"

[यह जानकर भी कि मूँछ रखना दोष है अस्वरूपताके साथ मूँछ यह बतानेके लिए बढ़ा रखी है कि दोनों भाषाओंमें—आन्ध्र और संस्कृतमें—हम ही कवीन्द्र हैं। जिन्हें इन मूँछोंको देखकर रोष आता हो वे हम जीत लें। यदि जीतें तो हम मूँछोंको निकालकर, आपके चरणोंपर सिर न रख दें?]

इस प्रकारकी अपूर्व प्रतिज्ञा कर, एक अर्धशती तक आन्ध्र-कविता-साम्राज्य पर निर्द्वन्द्व शासन चलानेवाले कवियुग्मक कवि श्री तिरुपति और श्री वेंकट। उनके शिष्यों-प्रशिष्यों एवं एकलव्य शिष्योंसे भरा पड़ा है आधुनिक-आन्ध्र-काव्य जगत्।

इस कवियुग्ममें पहले व्यक्ति श्री दिवाकर्ल तिरुपति शास्त्री हैं, दूसरे हैं श्री चेळ्ळपिळ्ळ वेंकट शास्त्री। तिरुपति शास्त्रीजीका जन्म कृष्णा जिलेके 'एण्डगण्डि' नामक ग्राममें सन् १८७१ में हुआ और मृत्यु सन् १९१९ में हुई। माताका नाम शेषम्मा और पिताका नाम वेंकटावधानी था। वेंकट शास्त्रीजीका जन्म यानाम (भारतमें फ्रांसीसी उपनिवेश) में हुआ पर निवासस्थान पश्चिम गोदावरी जिलेका 'कडियम' नामक ग्राम था। इनका जन्म सन् १८७० में हुआ और मृत्यु सन् १९५० में। श्री वेंकटशास्त्री-

की माताका नाम चन्नम्मा और पिताका नाम कामय्य था। तिरुपति शास्त्री शिष्टाचार-सम्पन्न पण्डित परिवारके थे। उनके पिता दादा-परदादा वेदोंके प्रसिद्ध पण्डित थे। वेंकटशास्त्रीजी का परिवार कविताका आकर था। उनके परदादा नरसकविने यामिनीपूर्णतिलक विलासमु और वेंकटेश्वर विलासमु नामक प्रबन्ध-काव्योंकी रचना की थी। इन दोनोंने प्रकाण्ड विद्वान् श्री चर्ल ब्रह्मय्य शास्त्रीजीके यहाँ व्याकरण शास्त्रका अध्ययन किया। संयोगसे सहाध्यायी बन और दोनों महानुभावोंका जीवन पर्यन्त अटूट संग बना रहा। ब्रह्मय्य शास्त्रीजीके पास आनसे पहले वेंकटशास्त्रीजीने धोंसी-बहुल मौलवी तेलुगु भाषा और साहित्यका अध्ययन किया। उसी समय वे थोड़ा-सा गाना-बजाना कुश्ती लड़ना तथा कविता करना भी सीख गए थे। श्री श्रीपाद कृष्णमूर्ति शास्त्री* के पास आपने तीन महीने तक 'कुमार सम्भव' के दो सर्ग पढ़े। एलामंचिके भगवान वेंकटेश्वर पर आपने एक शतक लिखना शुरू किया। उसमें प्रयुक्त कुछ व्याकरण विषयोंका अभाव न हो इसके कारण पाणिनीय व्याकरण पढ़नेके लिए आप काशीको चल पड़े। मार्गमें राघवाचार्य अनन्ताचार्य और सुरय्यके पास थोड़-थोड़े समय तक पढ़ते रहे। माँकी बीमारीके कारण कुछ समय तक आपकी पढ़ाई बन्द रही। अन्तमें आप ब्रह्मय्य शास्त्रीजीके पास आए। उस समय तिरुपति शास्त्री ब्रह्मय्यजीके पास अध्ययन कर रहे थे। वेंकटशास्त्रीजीमें कुछ और श्रद्धा अधिक थी जब कि तिरुपति शास्त्रीजी नई विषयोंकी देखी-अनदेखी कर देते थे। इन दोनोंका मेल सोनेमें सुगन्ध-सा सिद्ध हुआ। वेंकटशास्त्रीके सम्पर्कसे ही तिरुपति शास्त्रीजीको कविता करनेका अभ्यास हो गया था। इसीलिए वे एक स्थानपर कहते हैं —

चिततास्मीय अष्टावधान कविता विद्यापयोराशिसं
भूत शिष्योधुर वाङ्मयामृतरस प्रीतात्तिलाभ्य अमर
धृत रम्यप्रशिष्यकामांसकृत मति स्तोत्रमालाविभू
षितु मा वेंकटशास्त्री ने बोधकेश शिष्यस्वरूपम्मुनन्।

[अपने महान अष्टावधान कविता रूपी विद्याके लिए समुद्र समान सम्यक रूपसे सम्पन्न शिष्य भेदोंके वाङ्मयके अमृत रससे सन्तृप्त बन उनके आम्रके प्रसन्न बने रसिक श्रेष्ठों द्वारा किए गए स्तोत्ररूपी मालाओंसे विभूषित वेंकट शास्त्रीकी मैं शिष्य स्वरूपमें स्तुति करूँगा।]

विद्याध्ययनके समयसे ही दोनोंने मिलकर कविता करनेका अभ्यास किया। माता-पिताके एक न होनेपर भी दोनों विद्याके कारण ही भाई-भाई बन और समस्त रचनाएँ मिलकर ही करने लग गए। बोलकर रचयितिवेंकटेश्वरुलु नाम

---

* आन्ध्रके दूसरे राजकवि हैं, जिनकी मृत्यु ६१ में हुई। इन्होंने सौ से अधिक पुस्तकें लिखी हैं।

तिरुपति वेंकटीयमें (कोई एक भी लिखे तो वह रचना तिरुपति-वेंकटीय मानी जाएगी।) इस वचनको उन्होंने जीवन पर्यन्त निभाया। तिरुपति शास्त्रीके स्वर्गवास-के बाद लगभग तीस वर्ष तक वेंकट शास्त्री निरन्तर लिखते रहे पर वे सारी रचनाएँ दोनोंके नामपर हैं। ऐसे उदाहरण संसारके इतिहासमें विरले ही मिलते हैं।

अध्ययनके समाप्त होनेपर कुछ समय तक इस कवियुग्मने समग्र आन्ध्र देशको मानो अवधान-कविताके प्रवाहसे परिप्लावित कर दिया। कविताको पण्डितोंकी चहार दीवारीसे बाहर लाकर उसे जन-साधारण तक पहुँचाया। अवधान कलाका प्रदर्शन करते हुए वेंकटगिरि, मद्रास, आत्मकूर, वनपर्ति, विजयनगर, पिठापुरि, मुक्त्याल, बोब्बिलि आदि आन्ध्र देशके प्रसिद्ध संस्थानों (रियासतों) में जाकर, वहाँके शासकोंको अपनी प्रतिभा-व्युत्पत्तिसे प्रभावित कर, उनसे पुरस्कार प्राप्त किए। तदुपरान्त मछलीपट्टमके नागरिकोंके निमन्त्रणपर, वेंकटशास्त्री वहाँके हिन्दू हाइस्कूलमें लगभग तेरह वर्ष तक तेलुगुके अध्यापकके रूपमें कार्य करते रहे। उस समय यह नगर आन्ध्रके राजनैतिक सामाजिक और साहित्यिक जागरणका केन्द्र बना हुआ था। इस हाइस्कूलमें काम करते हुए, भाषाकी शिक्षाकी अपेक्षा उन्होंने कविताकी शिक्षा खूब दी। उनकी प्रेरणासे उत्साह प्राप्त कर, कविके रूपमें प्रसिद्धि प्राप्त करनेवालोंमें विश्वनाथ सत्यनारायण वेटूरि प्रभाकर शास्त्री वेलूरि शिवराम शास्त्री काटूरि वेंकटेश्वरराव पिंगलि लक्ष्मीकान्तम आदि प्रमुख हैं। तिरुपति शास्त्रीजी पोलवरमके जमींदार श्री कोच्चेर्लकोट वेंकट कृष्णाराव बहादुरजीके दरबारके विद्वान बन गए थे। वेंकट कृष्णारावजी प्राच्य एवं पाश्चात्य भाषाओंके विद्वान थे। इस प्रकारका आदर-सत्कार वे थोड़े ही दिनों तक पा सके थे कि काल पुरुष उन्हें उठा ले गया। दिवाकरके अस्तंगत होनेपर वेंकट शास्त्री इस प्रकार बिलख उठे—

नाकन्न जीवकम्मुन
मेकमु तनूबलमुन मेलमु हेच्चौ
जोकमुलुपुडु तिरुपति
नाकन्न मुन्दे येट्लु नाकमु मुट्टेन्।

[मेधाबलमें ही नहीं शारीरिक बलमें भी मुझसे कहीं अधिकशाली हैं। भावमें प्रथित तिरुपति शास्त्री मुझसे पहले ही कैसे स्वर्गको पहुँच गए।]

सन् १९१९ के बादसे सन् १९५० तक वेंकट शास्त्रीजीकी कलमसे लिखी गई सभी रचनाएँ दोनोंके नामपर ही प्रकाशित हैं।

सन् १९३१ में मछलीपट्टममें महान् वैभवके साथ श्री वेंकट शास्त्रीजीका षष्ठिपूर्ति-महोत्सव मनाया गया। उसके बाद श्री शास्त्रीजी कृष्णा नदीके किनारे विजयवाड़ामें बस गए और अन्त तक वहीं रहे।

देशके स्वतन्त्र होनेपर हमारी सरकारने भारतकी प्रत्येक भाषाके लिए एक राजकविकी नियुक्ति की। आन्ध्र देशमें सर्वप्रथम उस गौरवको पानेवाले श्री वेंकटशास्त्री ही थे। उन्हें पुरस्कृत करनेके लिए आन्ध्र और मद्रास सरकारने (तबतक मद्रासमे आन्ध्र प्रान्त नहीं बना था।) विजयवाड़ामें उपस्थित हो उस महाकवि एवं शतावधानीका सत्कार कर अपनको धन्य माना।

सन् १९५० की फरवरीकी १५ तारीखको शिवरात्रिके पर्वपर वेंकट शास्त्रीजी कैलासवासी हो गए।

रायलु युगमें नन्दि मल्लय्य और घण्ट सिंगय नामक दो कवियोंने मिलकर कविता की थी पर पता नहीं उन्होंने अवधान-विद्याका प्रवर्तन किया था नहीं। कहा जाता है कि वसुचरित्रके कर्ता रामराजभूषण दशकोंठनी कम सम्मान बातुरी युक्त थे। आधुनिक युगमें माडभूषि वेंकटाचार्य देवुलपल्लि बन्धु वेंकट रामकृष्ण कवि (अन्तिम दो कवियुग्म हैं) आदिने भी अवधान किए थे। पर तिरुपति वेंकटकवुलके समान इस विद्याको विख्यात करनेवाले नहीं थे। अवधानचर्य करावधान कविता सम्पत्ति से सम्पन्न कवियुग्म तिरुपति-वेंकट कवि ही थे। प्रारम्भमें वे तिरुपति वेंकटेश्वर (बालाजी) ही के नामसे प्रसिद्ध हुए थे।

अष्टावधान और शतावधान की प्रक्रियाओंका यहां थोड़ा परिचय दे देना असंगत नहीं होगा। शतावधान का अर्थ है सौ लोगोंको उनकी इच्छापर, (विषय और वृत्त) संस्कृतमें और तेलुगुमें क्रमसे सौ आधु पद्योंके प्रथम चरण मात्र सुनाना। सौ पद्योंको सुनानेके बाद उसी संख्यामेंसे या श्रोताओंकी इच्छाके अनुकूल फिर उन्ही पद्योंके पूरे चार चरण सुनाना पड़ता है। अष्टावधान में चार-पाँच लोगोंको आधु कविता सुनाना—किसीको किसी विषयपर पद्य समस्यापूर्ति निषेधाक्षरी व्यस्ताक्षरी दत्ताक्षरी आदि प्रकारके पद्य शास्त्र-चर्चा या आकाश पुराण घण्टियोंको गिनना शतरञ्ज आदि आठ कार्योंमें चित्तको एक ही समयमें एकाग्र करना। अन्तमें फिरसे सभी पद्य सुनाना। इस प्रकारके इन दो विद्याओंमें इस कवियुग्मने अपूर्व प्रतिभा दिखा प्रतिपक्षियोंसे भी प्रशंसा पाई। तिरुपति शास्त्रीका अप्रतिम पाण्डित्य और वेंकट शास्त्रीकी असाधारण मेधा मिलकर, इस कठिन कार्यको सुगम बना दिया। दिनभर, दिमागको इतना कर देनेवाले शतावधान अष्टावधानमें लग रहकर, रातमें देर तक विनोद कार्यक्रमोंमें भाग लेकर, मजेकी नींद सोकर, फिर दूसरे दिन सवेरे, कुछ खाए बिना ही अवधानके शप भागकी पूर्ति करनेके लिए तैयार रहनेवाले इस कवियुग्मको देख लोग चकित रह जाते थे। दोनोंके हृदय और मस्तिष्क एक-से काम करते थे। प्रौढ़ पण्डितों और प्रभुओंकी सभाओंमें ही नहीं बाल-पामर-गोष्ठियोंमें भी अपनी कविता चातुरीसे प्रशंसाएँ पाते थे। एक बार उन्होंने स्वयं कहा है :—

शतघटकवनम्मु सन्नु संमतियग
मरतलामलकम्मु मावेमाकु
सप्तावधानकल्पावलंबनमया
'गंधिकोटम दंडर्मे माकु
आशुधारा कवितार्डबर मस
नलंकेल पै खंडिमडक' माकु
सत्काव्य निर्माण चाकचक्यंबस
पक्वोपेत भोजनमु माकु
स्वर्गमगु वादमुलोनर्पुलहि वारि
दंब मर्णमिचुटायोचनंबु माकु
दानराधेय ! कविसमुदायपोष !
पंडितविधेय ! रामभूपालराय !

[सौ लेखिनियोंको साथ-साथ कविता कहना यह कार्य हमारे लिए हस्तामलक (सुगम साध्य) है। अष्टावधान रूपी कठिन कार्य हमारे लिए गंधिकाण्डमके रस के समान सरल है। आशुधाराम कविता करना (लोग इसे आडम्बर मानते हैं) हमारे लिए हल्दीखाण्ड चाहिके चबानेके समान है। सत्काव्य निर्माण (रचना) का कार्य हमारे लिए, पक्वान्नित भोजनके समान है। स्वयं हो वाद विवाद करनेवालोंके गर्वका दमन करना हमारे लिए आरोचनके समान है। हे दानराधेया ! कविसमुदायपोषा ! पण्डितविधेया ! हे रामभूपाल राय ! (यह है हमारी सामर्थ्य।)]

ओक चरणंबतडु मरियोकचरणं नेनु मरोक्कनातनुन्
सकल कवीन्द्रसततुलु सम्मति पै दल्लूनि मेच्चगा
प्रकटतरम्मुगार धमरन् रचियिपगलुभम्म ! नू
रिटि सिसम्मय्य ! निक्कमिदि लेक्करिमाकलु चेप्पनेटिकिन् ?

[एक चरण यह और एक चरण मैं इस प्रकार सकल कवीन्द्रोंकी प्रशंसाओंके पात्र होते हुए, प्रसिद्ध आशुधाराम कविता कर सकते हैं। सौ पद्यों तक कोई संकोच नहीं है, कहने चाहिए हे राजन् ! यह तो सच है। हमारे बातें क्यों कहें !]

गुरुकुलसे निकलते ही उन्होंने पहली बार काकिनाडा नामक नगरमें श्री पुरिमेटि अप्पगिरि राजाजीके यहाँ अष्टावधान किया। तब उनकी आयु केवल २० वर्षकी थी। श्री अप्पगिरि राजाजी इन युवकोंकी असाध्य प्रतिभा और सभासे चकित हो गए थे। तब उनकी सामर्थ्यकी और अधिक परीक्षा करनेके लिए श्री शास्त्र शतलेखन शतावधान करनेके लिए कहा। ये युवक मान गए। दूसरे दिन सभाका आयोजन किया गया। उस दिन शामको दोनों मिलकर गाँवके बाहर नारियलके

वनमें गए और वहाँ नारियलके वृक्षोंको ही प्रश्नकर्ता मानकर उन्होंने वहाँ शतावधान किया। इस शतावधानके बाद उन्हें यह आत्मविश्वास हो गया कि शतावधान तो क्या अब सहस्रावधान भी किया जा सकता है।

दूसरे दिन बहुत बड़ी सभा हुई। प्रश्न करनेवाले सौ पण्डित सामने बैठे हुए थे और उनके पीछे सैकड़ोंकी संख्यामें जनता बैठी हुई थी। सौ विषयोंपर दो-दो चरण कहते-कहते शाम हो गई। अब शेष दो चरणोंकी पूर्ति कैसे हो? कदाचित् यदि छोड़ दें तो ये कवि रातभरमें सोच लेंगे और कल कह देंगे अतः अवकाश नहीं देना चाहिए। तब सभी पण्डितोंने एक निर्णय किया कि सौ पद्योंको कह सुनानेकी आवश्यकता नहीं है क्रम छोड़कर किन्हीं दस पण्डितोंको उनके पद्य सुनाएँ तो ठीक रहेगा। उसके लिए भी ये युवक तैयार हो गए और दस छोड़कर, बत्तीस तीन सौ छप्पन इस तरह बिना किसी क्रमके ही पद्योंको इन्होंने सहज ही में सुना दिया। इसे देखकर सभी लोग दंग रह गए और देशके चारों कोनोंमें तिरुपति वेंकट-कवियोंकी अनुपम प्रतिभाकी बात फैल गई। अब बहुधा आन्ध्र प्रदेशके सभी बड़े नगरोंमें सभी संस्थाओंमें इन कवियोंने अष्टावधान और शतावधान किए। जहाँ भी गए विजयश्री इन्हींके पल्ले पड़ती थी। तिरुपति शास्त्री अपने पाण्डित्य और प्रतिभासे विरोधियोंको निरुत्तर कर देते तो वेंकट शास्त्री उदण्डता और समयस्फूर्तिसे विरोधियोंको मुँह-तोड़ जवाब देते। राजाओं और जमींदारोंने स्वागत-सत्कार किया है, वरन् चार गालियाँ देकर वे लोग बहुधा चल देते।

एन्नु नेमिकनार यन्वेषिव चौलक्यमिलिकनार स
न्मानमुलंदिनार बहुमानमुलंपडिनार के
ध्यानिनि लेक्कसेटुक निपारमविम्मिकयंबोनर्चि प्र
ख्यानिपुलंधु पेस्योनिकारलु मीर कवित्वधनंपकाक।

[कविता-सम्पत्तिके कारण आप (तिरुपति-वेंकट कवि द्वय) हाथीपर चढ़े धरणीपतियोंके पैर पकड़नेपर अनके अनेक सम्मान पाए, अनेक पुरस्कार प्राप्त किए, किसीकी परवाह न कर, निर्भय हो विभिन्न कर आपने प्रख्याति का नाम पाया।]

इनकी धारणाशक्तिसे अत्यधिक प्रभावित होकर श्रीमती एनी बीसेन्टने इस प्रकार लिखा है।

I have much pleasure in stating that I was present at the remarkable exhibition given by D Tirupti Shastry and Ch. Venkatasastry of the powers of memory they possess It entirely excelled anything I should have thought possible. Judging by ordinary

standards and in addition to feats of memory the Shastries showed great powers of improvising Verse in difficult metres and nimble wit in repartee.

(28th Dec, 1893 Adayard, Madras)

आन्ध्र विश्वविद्यालयने वेंकट शास्त्रीजीको 'कलाप्रपूर्ण' की उपाधि प्रदानकर सम्मानित किया।

इस प्रकार [अद्रु महाद्रिदु बेतपट्टणमु मध्यमु मद्रु देशमु] (उत्तर गंजामसे लेकर दक्षिण मद्रासके बीचके समस्त देशमें)] घूमकर, उड़ीसाके सीमावर्ती विजयनगर तक जाकर, अवधानोंके समाजमें ऊसर बने आन्ध्र-साहित्य-जगतको कविताकी अमृत-वर्षा-धाराओंसे पुलकित बना दिया हरा भरा बना दिया। अंग्रेजीके प्रभावसे और पण्डितोंकी पाण्डित्यपरिमासे सूखी-सी बनी आन्ध्र-कविता-कन्याको इन कवीश्वरोंने सुन्दर बना दिया।

इन अष्टावधान-शतावधानोंके अनेक प्रसंगोंपर होनेवाले वाद-विवादोंने इनकी कीर्तिको और भी फैलाया। ये अष्टावधान व शतावधान तिरुपति वेंकट कवियोंकी प्रतिभा-व्युत्पत्तिके ज्वलन्त उदाहरण हैं। किसीने ठीक ही कहा है कि तिरुपति-वेंकट कवियोंके काव्योंकी अपेक्षा उनके समयकी गाथाएं उनके मुक्तक उनकी वीरोक्तियाँ और चमत्कारपूर्ण सम्भाषणके नमूने ही देशमें रह जाएंगे।

तिरुपति-वेंकट कवियोंकी कविता प्राचीन कविताके लिए भरत वाक्य है तो नवीन कविताका नान्दी-पाठ है।" उनकी रचनाओंमें प्राचीन कविताकी पाण्डित्य-परिमाके साथ नवीन कविताका प्रसाद-गुणयुक्तता और सरलता दृष्टिगोचर होती है। पाण्डित्यकी अटवी (वन) से कविताका उद्धार कर, उसे जन सामान्य तक पहुँचानेवाले तिरुपति वेंकटेश्वर ही हैं।

तिरुपति कवियोंने काव्यके अतिरिक्त नाटक गद्य आलोचना और कथाएँ भी लिखी हैं।

बुद्ध चरितमु 'लक्षणा परिणयमु' 'एकादशीमाहात्म्यमु' श्रीनिवास विलासमु देवी भागवतमु पतिव्रता सुधीला पूर्वहरिश्चन्द्रमु" शिवलीलाएँ श्रवणानन्दमु पाणिगृहीता नानाराज सन्दर्शनमु (मुक्तक संग्रह) कथिक वर्षा आदि काव्य ग्रन्थ प्रसिद्ध हैं। कामेश्वरी शतक सुन्दर भक्ति शतक है।

'पाण्डव जननमु' पाण्डवप्रवासमु' पाण्डव-अश्वमेधमु पाण्डव-राजसूयमु' 'पाण्डव विजयमु' 'पाण्डव प्रवासमु' महाभारतके इतिवृत्तसे सम्बन्धित इन छह नाटकोंके अतिरिक्त मुद्राराक्षस मृच्छकटिक प्रभावती प्रद्युम्न का सुन्दर अनुवाद किया है। बाल रामायणमु भी एक सुन्दर अनुवाद है। एकवर्ड भट्टाभिषयमु

व्यसन विजयम् रम्भाकामसम् अनर्घराघवम् 'पण्डितराजम्' इन कवियोंके अन्य नाटक हैं।

पद्य ग्रन्थोंमें विक्रमांक देव चरित्रम् चन्द्र प्रभा चरित्रम् हर्ष चरित्रम् मुख्य हैं। व्यावहारिक (बोलचालकी) भाषा * में लिखे गए अनेक संस्मरण 'कथल-गायल' के नामसे प्रकाशित किए जा रहे हैं जिनके अबतक पाँच भाग प्रकाशमें आए हैं।

गीरत्नम् मुष्टूरितीम गुंबका तृणीकरणम् पत्रपुष्पा छन्निग्रह आदि प्रतिपक्षियोंका खण्डन करते हुए लिखे गए ग्रन्थ हैं। शतावधानोंमें—उक्त समयमें कहे गए पद्योंको—भी कुछ का पुस्तक रूपमें प्रकाशन हुआ है।

पल्लेटूरुल्ल पट्टुदल्लु (ग्रामीणोंके हठ) नामसे ग्रामोंमें प्रचलित रूढ़ियों और अन्ध विश्वासोंका खण्डन करते हुए, व्यंग्य प्रधान प्रहसन किया है।

इन तेलुगु रचनाओंके अतिरिक्त तिरुपति-वेंकट कवियोंने संस्कृतमें धातु रत्नाकर नामक राम कथा-चम्पू काव्य शृंगार शृंगाटक नामक छोटा-सा वीथी-रूपक काशी शतक नामक काव्य और कई अष्टक एवं स्तोत्र लिखे हैं।

श्री वेंकट शास्त्रीजीकी षष्टिपूर्ति महोत्सवके उपलक्ष्यमें श्री कस्तूरि-वेंकटेश्वर रावजीके सम्पादनमें 'तिरुपति-वेंकट कवियों' की लगभग सभी रचनाएँ आठ भागोंमें प्रकाशित हुई थीं।

महात्मा बुद्धके जीवनपर आधारित अंग्रेजी काव्य है 'Light of Asia'। उसपर आधारित बुद्ध चरित्रम् की रचना हुई जिसमें ६ ही पद्य थे। परन्तु बादमें अश्वघोषके बुद्ध चरित और लोमलकृत बुद्धजन्म में से कुछ श्लोकोंका अनुवादकर १ २ पद्योंका बुद्ध चरित नामक काव्य प्रकाशित हुआ। इस काव्यमें महात्माके जन्म तपस्या और धर्म प्रचारका सरस वर्णन किया गया है। इस काव्यका निम्न पद्य सुप्रसिद्ध है —

जननम्मुन् मरणम्मु जन्तुवुलकुन् स्वाभाविक म्मौरि के
श्लिनियस्थिलोने बुद्बुदमुलेनकलिगि तस्की। ऐदियेकाविधी
नन्नु पालेंडु प्रयोजनम्बुन् भुवनमन्दारम्मु, चेप्पुंत ना
निनि पुणुन् चिर्धकपि रायिकरचिन् जीविधि पिरुक्केने।

महाराज बृहत्सेनकी पुत्री लक्ष्मणाका श्रीकृष्णके साथ विवाहका वर्णन करनेवाला काव्य है लक्ष्मणा परिणयम् । इसमें नारद प्रसंग और बीरका सन्देश

---

* व्याकरण-युक्त भाषाको ग्रान्थिक (ग्रन्थोंमें उपयुक्त) भाषा और व्याकरण नियम रहित बोलचालकी भाषाको व्यावहारिक भाषा कहते हैं। आधुनिक कालमें आकर, व्यावहारिक भाषा की ओर झुकाव अधिक हो गया है।

मनोहर बन पड़े हैं। एकामाहात्म्य में एका नदीकी उत्पत्तिकारण स्वरूप एका नामक महामुनि और किम्मीर नामक राक्षसकी तपस्याका वर्णन है। श्री निवास-विलासमु संस्कृतके उसी नामके चम्पू काव्यका अनुवाद है जिसमें भगवान विष्णुके श्रीनिवास रूपमें अवतरित हो पद्मावती और अभिषेकु गंगाके साथ विवाह कर सात पर्वतोंपर, बालाजी बन रह जानेकी कथा है। देवी भागवतमु संस्कृतके देवी भागवत का अनुवाद है पर अनुवादके समय कवियोंने आन्ध्र महाभारत की शैलीको आदर्श मान रचना की है। पतिव्रता और सुशीला में दो पतिव्रता नारियोंकी कथाएँ हैं। मदनानन्दम् और पाणिगृहीता में परोक्ष रूपसे वेश्यागमनकी निन्दा करते हुए, दो विलासी पुरुषोंके जीवन-चित्र प्रस्तुत किए गए हैं। शृंगार रस प्रधान होते हुए भी नीति बोधकी रचनाएँ हैं। मदनानन्दम् का यह पद्य जनताकी जबानपर है —

धन म्र पोवुनु मानमा पोवुनु, निन्दा मीद पै बेसगु लो
नमुमातिबुर तस्लिदंड्रु, कुलमा चलेडु रम्मु, नु
तन मौर्यमु चल्लिनु, बन्धुगुण पस्तबोम्म निंदिंतुरो
मनमा! बोहिक मानुमाव विनुमा मरियाद पापाडुमा।

[धन तो चला जाएगा। मान तो बिगड़ जाएगा। सिरपर निन्दा नाच उठेगी। माता-पिता भी मनमें सन्देह करते रहेंगे। कुल-मर्यादा मिट जाएगी। नया आलस्य पैदा हो जाता है। जान-बूझकर सम्बन्धीजन निन्दा करते हैं। रे मन! मेरी बात सुना अब छोड़ दो इसे (वेश्यागमनको)। मेरी लाज बचाओ।]

नानाराजसन्दर्शनम् और कल्पूरमम्म (विविधा) में समय-समयपर और राजसभाओंमें कह गए और गढ़े गए पद्योंका संग्रह है। ये पद्य कवियोंकी प्रतिभा और समस्यापूर्तिके ज्वलन्त उदाहरण हैं।

आत्मकथा लिखनेकी प्रथाका प्रारम्भ पाश्चात्य प्रभावसे हुआ है। वीरेश-लिंगमजीने गद्यमें अपनी आत्मकथा लिखकर इसका प्रारम्भ किया तो उनसे पहले ही वेंकट शास्त्रीजीने जातक चर्या नामसे अपनी जीवनीको काव्यके रूपमें निबद्ध किया है। वे प्राचीनता और नवीनताके सम्मिश्रण हैं। अतः स्वयं अपनी कथा न कहकर ज्योतिषके अनुरूप अपने जीवनकी घटनाओंका वर्णन करते गए। जन्मके समय ग्रह-सम्पत्तिकी व्याख्याके रूपमें यह काव्य रचा गया है। इसकी प्राचीन रीति सर्वविषयमुनु जातकमुनिपम् प्रासम् वा कवियमुट अघटनुल [स्वयं कवि होकर वेंकय्या (वेंकटशास्त्री) न अन्य ही विषयको जातक के समान ऐसा लिखा मानों कोई दूसरा लिख रहा हो।] यह काव्य फलित ज्योतिषका अद्वितीय ग्रन्थ है और वेंकटशास्त्रीजीके ज्योतिष-शास्त्रके पाण्डित्यका अनुपम उदाहरण है।

कामेश्वरी शतकम् में समय-समयपर देवीके प्रति कहे गए पद्योंका संकलन है। इसमें कविकी अनन्य भक्ति और अचञ्चल आत्मविश्वासके दर्शन होते हैं।

चदुवुलिच्चितिवि चालिपुण्य वैभवमोसंगितिवि पुत्रसंततिन्
विभूतिन् मयिन्निषनो तनुगनुग्रहिनी वैशेषम्
विविधैश्वर्यमु लिच्चितिवि नीकडे विन्नवितु नी सन्निधिन्
कवियै युंड ननुग्रहिंपुमिदिये काम्यंबु कामेश्वरी।

[कविपोषिके जय! जय! तुमने योग्य वैभव दिया है। शिष्य समूहसे मुझे अनुगृहीत किया है। सन्तान भी दे रखी है। विविध ऐश्वर्य भी दिए हैं। हे माता! कामेश्वरी! अब मेरी इच्छा एक ही है। वह है तुम्हारे सान्निध्यमें कवि बना रहूँ। कृपा कर दो न माते!]

तिरुपति-वेंकट कवियोंकी रचनाओंमें गीरतम् एक विशिष्ट काव्य है। यह एक सुन्दर व्यंग्य (Satire) एवं मुक्तक रचना है। वेंकट शास्त्रीजीके किसी शिष्यके उन्हें गुरु न मानते हुए, उनकी निन्दा करनेपर यह काव्य रचा गया है। "अत्यन्त प्रशान्तचित्त भी शास्त्रीजीके अत्यन्त क्रुद्ध होनेपर उस आवेशके कारण अनायास ही उमड़ी हुई यह 'गीरत' की कविता आज तिरुपति-वेंकट-कवियोंकी रचनाओंमें विलक्षण बन आन्ध्र भारतीको अपूर्व रूपसे अलंकृत कर रही है।"

(श्री कादूरि-वेंकटेश्वरराव)

ग्रन्थके नामकी परिभाषा देते हुए कवि कहते हैं—

गीर्युगेषु रतास्ते वै गीरता परिकीर्तिता
तान्नुद्दिश्यकृतम् काव्यंगीरतम् परिचक्षते ॥

[निन्दाओंमें जिनकी आसक्ति है उन्हें गीरत कहते हैं। उन सज्जनोंको लक्ष्यमें रखकर लिखा गया काव्य गीरत कहलाता है।]

गीरतम् में अधिक प्रसंगवश गुरु शिष्या विग्रहारावना लोकाभिरामायणम् नामक चार भाग हैं। महाभारत के अनुरूप पर्व-विभाग किया गया है। पर्वोंका नामकरण निराला है। यथा मेकुविविम्पु पर्वमु (कीलें कसनेका पर्व) चप्पट्लु पर्वमु (ताली बजानेका पर्व आदि।)

गीरतम् के समान ही गुण्टूरिसीमा भी व्यंग्यात्मक रचना है। गीरतमुमें रामकृष्ण कवियुग्म× पर व्यंग्य किया गया है तो गुण्टूरिसीमा में कोप्परपु कवियुग्म* पर। इन काव्योंकी भाषा-शैली सरल और सरस हो बोलचालकी भाषाके समान ही है। कहीं-कहीं पाण्डित्य-प्रदर्शनके लिए प्रौढ़ शैलीमें लिखनेपर भी सहज

× श्रीकेटि वेंकटराम शास्त्री और वेलुल रामकृष्ण शास्त्री नामक दो कवि।

* कोप्परपु सुब्बाराव और पार्वतीशम।

सरलता इनकी कविताका विशिष्ट लक्षण है। लोकुल नालुकलम आडुकुग चेसी [जनताकी जीभको ही (बोलीको ही) रचनाका माध्यम बनाकर] लिखनेवाले इन कवियोंकी शैली सहज और सरल न होगी तो कैसी होगी?

कवियै पुट्टिनवारमैनम [यह वेंकम (वेंकटशास्त्री) कवि होकर पैदा हुआ है।]* कहनेवाले इन कवियोंमें आत्मविश्वास और स्वाभिमानकी मात्रा कूट कूटकर भरी हुई थी। वे समझते थे कि हमारा जन्म ही कविताके लिए हुआ है —

जननार्यं सुकवित्वितिल्
सुकविता कार्यंबे ना वृत्ति
मनुमर महाम दरिलु,
तदुपरमदृमार्यंबु ।

[कविताके लिए ही मेरा जन्म हुआ है और सुकविता करना ही मेरा पेशा है। इसीसे इस संसारसे तर जाऊँगा और उस लोककी बात? वह तो मेरे अदृष्टकी बात है।]

इसी कारणसे किसी राजाकी सभामें रहना या किसी की नौकरी करना उन्हें बिलकुल पसन्द नहीं था —

व्याकरणम्माडि रूल्स (rules) कु कट्टुबडमु
अप्पुल पण्डितरायादि कवुलु पूर्व
कोवलंबड्डिपोवुदु, देवुनैन
लक्ष्यपेट्टमु माकु स्वामुल लेरु।

[हम कवि हैं। व्याकरणके नियमोंसे न बँधकर, पण्डितराय आदिके मार्गपर विचरण करते हैं। भगवानकी भी परवाह नहीं करते। हमारा कोई स्वामी नहीं है।]

देवी पूजा-निरत वेंकटशास्त्रीजीने कहा —

नरनाथुल पलुरैन मित्रुलयियुन्न नाकि तत्तरिमिधिन्
स्थिरवाससम्मोनरिंपु पुनिकम्मु नाकै याचु, नी पोदि स
त्करणापात्तिनि पेंचिना वेरिगि विद्यावुद्धु लमेर्चि ने
परुलसिरयलु योल्कुदोप्पगुने अंबा! देवि! कामेश्वरी!

[कई राजा मेरे मित्र हैं पर उनके यहाँ नकदके लिए पड़ आनके प्रयत्न मुझसे नहीं होनेके। हे माता कामेश्वरी! तुम जैसी करुणामयीके हाथों पलकर, बड़ होकर, विद्या-बुद्धि सीखकर सदा दूसरोंकी सेवा करते रहना कहाँ तक ठीक है?]

---

* Poets are born not made.

अजन्त भाषा होनेके कारण तेलुगु भाषामें सहज-माधुर्य है। इसीसे मुग्ध होकर किसी विदेशी यात्रीने इस भाषाको Italian of the East कहा है। तेलुगु पद्य तो राग-लय संयुक्त हो सुस्वरमें गाया जा सकता है। आन्ध्र देशमें पद्य पठनकी एक विशिष्ट शैलीका प्रारम्भ किया तिरुपति-वेंकट कवियोंने। अवधानके समय जनताको मुग्ध रखनेका यह एक अच्छा साधन है। आजकल सभी पण्डित इसी शैलीका अनुकरण करते हैं। साठ सालके होनेपर भी वेंकट शास्त्रीका न तो स्वर माधुर्य ही कम पड़ा और न कलम ही धीमी हुई। षष्ठिपूर्ति महोत्सवके समयमें कविवर करुणश्री (जन्धाल पापय्यशास्त्रीजी) के पद्यमें यह भाव बड़ी सुन्दरताके साथ व्यक्त किया गया है।

तलमीरि मैं जुट्टु पलुचवाङ्गुचि गानि
पल्कु कम्मदनंबु पलुचवडदु,
नडकलो दडबाटु नोटतुने गानि
नुडुलको दडबाटु नुडुवदागु,
शारीर शक्तिमंदु जारि पुनदि गानि
आत्माशक्तियंदु जारलेदु,
ओडलिपै मुडुतलु वोडमुचुनदि गानि
कवितलो मुडुतल जाड लेदु,
परग नोक्कोक्क येडु पै बडुकोलदि
नीदु मुदुसुपुडमा नीदु कवित
यंतयंतकु ब्रायमुपेरुगुचुंडे
चित्रमिदियेरा ! सुकवितावित्करा !

[सिरके बाल पकके पड़ गए पर बोलीकी मिठास तो पतली नहीं पड़ी। चालमें लड़खड़ाहट आ गई पर, बोलमें तो लड़खड़ानेका नाम तक नहीं। शारीरिक सामर्थ्य कम हो रही है पर आत्मा शक्ति ढीली नहीं पड़ी है। शरीरपर झुर्रियाँ पड़ रही हैं पर कवितामें कहीं बल नहीं दीख रहे हैं। एक-एक साल बढ़ते जानेपर, तुम्हारे बूढ़े बनते समय तुम्हारी कविता तो दिन-दिन युवती बनती जा रही है। हे सुकविताके चितेरे! यह कैसा विचित्र है?]

आधुनिक सभ्यता और अंग्रेजी शिक्षासे वेंकट शास्त्रीको अत्यधिक घृणा थी। आधुनिकतापर उन्होंने कई चुभते व्यंग्य किए हैं —

सकलम्मुन् गोरिगिंचुकोंदुरयरा ! सन्यासुला ? कादु;
[सब कुछ मुँड़वा लेते हैं पर संन्यासी तो नहीं हैं।]
बोट्टुन्नपिलेनिमु फालमीदरयेमो ! मुण्डा ? कादु '

[ललाट भागपर थोड़ा-सा भी तिलक धारण नहीं करते पर विधवा तो नहीं है।]

तेलुगु देश एवं तेलुगु भाषाके प्रति अनन्य अनुराग प्रकट करते हुए वेंकट शास्त्रीजी देवीसे इस प्रकार विनती करते हैं —

अननामाभमनुग्रहिंपु, मदि नी सन्ययमुकादेनि पै
जनमम्मंपुनु ना कोसंगुमेपुलो संगीतसाहित्यमुल
पनिलेदीपुदरंपु बोयपकुनी भाषांतरम्मुल

[हे माता! अन्न राहित्यसे अनुगृहीत करो। यह तुमसे नहीं हो सके तो अगले जन्ममें भी किसी तरह संगीत और साहित्य—ये दो विद्याएँ दे दो। पेट भरने मात्रके लिए दूसरी भाषाएँ नहीं चाहिए।]

सन् १९३१ के माघ मासके अपने सम्पादकीयमें भारती (प्रसिद्ध तेलुगु साहित्यिक पत्र) ने इस प्रकार अपनी श्रद्धाञ्जलि समर्पित की थी।

"१९ वीं सदीके अन्तिम चरणमें जीर्णप्राय बने आन्ध्र-कविता-साम्राज्यका उद्धार कर, देशभरमें अपनी विजय-पताकाओंको फहरानेवाले पण्डित और कवि सम्राट हैं शतावधानी श्री तिरुपति-वेंकट कवि। उनकी सरस रचना माधुर्यसे कविता स्त्रीयाँ नवीन अलंकारोंसे विभूषित नूतन-उत्साहसे सम्भरित हो नूतन पंक्तियोंसे सहृदयोंकी हृदय-रंगस्थलियोंपर लास्य करने लगी। आन्ध्र देशके कई व्यक्ति इन महान् विभूतियोंकी सेवा-शुश्रूषा कर, उनके अनुग्रहसे कवि और पण्डित हो प्रसिद्ध बने हैं। आज इस देशमें भी शतावधानियोंके शिष्यों एवं प्रशिष्योंकी संख्या बहुत अधिक है। इस प्रकार आन्ध्रवाणीको पुष्ट बना आन्ध्रोंको साहित्य और कविता-श्री से सम्पन्न करनेवाले गुरुपुरुष श्री तिरुपति-वेंकट कवियोंके पवित्र नाम आन्ध्रोंके लिए निरन्तर मनन और स्मरणके योग्य हैं।"

आन्ध्र जनताने उन्हें बाल-कलानिधि विद्वत्कवि बाल-सरस्वति विकवीन्द्रघटा-पञ्चानन [कवि-रूपी हाथियोंके गजसमूहके लिए सिंह समान] आदि उपाधियाँ देकर अपनेको धन्य बनाया है। आन्ध्र विश्वविद्यालयने कलाप्रपूर्ण की उपाधिसे सम्मानित किया है।

दोनों कवियोंकी जोड़ी ऐसी अनुपम थी कि देखनेवालोंको आश्चर्य होता था कि क्या दोनों एक हैं? या इनमेंसे कौन प्रतिभावान है? इस विचित्र सम्मेलनकी व्याख्या करते हुए वेंकट शास्त्रीजी कहते हैं —

तिरुपति वेंकटकवुलो मतिप्रतिभागरिमलु वेंकट
शास्त्रुलु वेंकटशर्मनि याख्यने वेरिलो या महत्त्वमुल
तिरुपति। तद्विवेकमु मिलिपुलु सैतमेयलेतिलु
तिरुपति वेंकटकवुल तेलुगु नाडकवनतुरे

[तिरुपतिसे आया हो वेङ्कटशास्त्रीका यह अति प्रतिभाकी महिमा या वेंकटस्वरसे ही तिरुपति महिमान्वित हुआ हो। पर यह रहस्य तो देवता भी नहीं जानते। फिर पति-वेंकट कवियोंका यह साहस मुक्तकियोंको कविमानोंकी कहाँसे लभ्य होगा !]

ऐसा था उनका परस्परका सौहार्द !

अपने अवधानों एवं रचनाओं द्वारा एक अर्धशती तक समग्र आन्ध्र देशको प्रभावित किया है इस कवियुग्मने। प्राचीनता और नवीनताके सन्धि-स्थलपर खड़े हो इन कवियोंने कविताको लोकप्रिय बनाया है।

उधर अंग्रेजियतकी बाढ़ और इधर पण्डितोंके प्रौढ़-भाषाके पक्षपात के बीचमें पड़े निष्प्राण तेलुगु साहित्यको नव जीवन दे नव उत्साहसे भरनेवाले ये कवि मानों कालिदास और भवभूति ही हों।

इस प्रकार नव्य कवितावतरणके भगीरथ बन आन्ध्र साहित्यको एक अपूर्व दीप्तिसे प्रकाशमान बनानेवाले तिरुपति-वेंकट कवि तेलुगु साहित्यमें अजर अमर कीर्तिके पात्र हैं।

जयन्ति ते सुकृतिनो रससिद्धा कवीश्वराः।

तिरुपति-वेंकट कवुळु

[काव्य-समन्वय]

[तिरुपतिसे आया हो वेंकटेशको यह मति प्रतिभाकी महिमा या वेंकटेश्वरसे ही तिरुपति महिमान्वित हुआ हो। पर यह रहस्य तो देवता भी नहीं जानते। तिरुपति-वेंकट कवियोंका यह साहस कुकवियोंको कविमानियोंको कहांसे लभ्य होगा !]

ऐसा था उनका परस्परका सौहार्द !

अपने अवधानों एवं रचनाओं द्वारा एक अर्द्धशती तक समय आन्ध्र देशको प्रभावित किया है इस कवियुग्मने। प्राचीनता और नवीनताके सन्धि-स्थलपर खड़े हो इन कवियोंने कविताको लोकप्रिय बनाया है।

उधर अंग्रेजियतकी बाढ़ और इधर पण्डितोंके प्रौढ़-भाषाके पक्षपात के बीचमें पड़ पिसनेवाले तेलुगु साहित्यका नव जीवन दे नव उत्साहसे भरनेवाले य कवि मानों कालिदास और भवभूति ही हों।

इस प्रकार भव्य कविताम्बरमके नवीरत्न बन आन्ध्र साहित्यको एक अपूर्व दीप्तिसे प्रकाशमान बनानेवाले तिरुपति-वेंकट कवि तेलुगु साहित्यमें अमर अमर कीर्तिके पात्र है।

जयन्ति ते सुकृतिनो रससिद्धाः कवीश्वराः।

• • •

तिरुपति-वेंकट कवुलु

[काव्य-सञ्चय]

१ बुद्ध परिग्रमु (सर्पोपाख्यानमु)

राजगृहाभिधाननगरम्मु गरम्मु स्वयमपद्यति
देनमु तप्पकुड मयमीपतिये तगु बिम्बिसार डे
ते बलमु स्फूर्तिय वसि मेकुपुगुडे गुणोनुतम रा
राघुल माणिक मम्मुलु तिरम्मुग सुस्थिरति देस्पुवुडगन् ॥१॥

रत्नगिरि कवरम्मुन राजपुनु
डोवदु राज्यम्मु विडिचि भिक्षुकुनि पगिदि
नपगि पुसा, कतडु महानुभावु
डनियेडु ववम्ति राजगृहमुन ववले ॥२॥

अन्त योवर्नु तमनगरम्मु बॉसिपुपुगुडु, दानिकि
पगुनु डोवनु बाहुपवमनुन पुम्मरवाडु बिम्बिका
टुनकु गलाघुड चनिनदु लोकिलाडु, एमन येसि प
म्मनितडु देम्पि, रापे पेमुचम्त मरस्वगसेक मॅतपुन् ॥३॥

कोडुकु पामु नतान गूस नक्कोडु योर
वोयि नीव मेति मोडुकोनुनु
'ममु बिडिचिपोते ना कुलाधारव
मा तनूज पनि मननमु बोगिलि ॥४॥

वोंडिपु पुरम्त बिम्बासरवायसेक मम्मापनिसवगुपे बडि पिटसु
विलपिचे ॥५॥

कटकट येमरेनि मोक कष्ट मेरपक नीषु माकु ग
स्फुटकु मनववेपमुत योसिय फागम्मुलु मेच्चगटि नी
विटिपोठि मेनु गाड पारचें बेमुपूतमु बोसे मेत य
मर्टिकमु सेनपोये गोडुका! मडवोवकडि काम सर्पमो ॥६॥

१ बुद्ध-चरित्र (राई की कहानी)

स्वधर्म पद्धतिके अनुरूप तेजस्वी बिम्बसार, जनताकी प्रशंसाओंका पात्र हो राजगृह नामक नगरपर कुलीन राजाओंकी भांति, मन्त्रिगणसे राज्यकी सुस्थितिका परिचय पाते हुए शासन कर रहा था ॥१॥

उस राजगृहमें एक अफवाह उड़ी कि रत्नगिरिकी गुफाओंमें एक राजकुमार अपने राज्यको छोड़ भिक्षुकी तरह रहता है जो बड़ा ही महिमायुक्त है ॥२॥

एक अनाथ स्त्री उस नगरमें रहती थी, उसका एक पुत्र था। उपवनमें घूमते समय उसे सांपने डस लिया और वह मर गया। उसके मित्रोंने तुरन्त माताको इसकी खबर दी। वह इस महा दुःखके मारे—॥३॥

रोती-पीटती वहां गई जहां सांपके डसनसे विगतप्राण होकर बच्चा पड़ा था। हे मेरे कुलाधार! हे मेरे तनय! हाय! मुझे अकेली छोड़कर चल बसे! ऐसा कहकर वह बिलखने लगी ॥४॥

फिर दुरन्त चिन्ता भारको सह न सकनेके कारण उस बच्चेके शवपर गिरकर वह इस प्रकार विलाप करने लगी ॥५॥

हाय बिना किसी कष्टके सुखसे रहनेवाली मैंने पुत्रकी इच्छासे अनेक देवताओंकी पूजा कर लोकको प्रशंसा पाते हुए तुम्हें जन्म दिया। हाय पुत्र! यह कहांका कालसर्प महाभूतके सम था यमका जिसने निर्दय हो तुम्हारे महे शरीरको डस लिया ॥६॥

तोडि बालुरसो पुडि नेडु येमि
गेळिमै मुसवेळ लिसेल करचे
मट्टतडि पूस्तोट कणाचरवु ?
पामु पावडि मातोळिवामु गामि ॥७॥

कोवुकु कळेबरमु पयि
बडि पिट्टु केस्तोसि येवृनु पवलि गमगा
वडबाडुन बनुवेँचिरि
बडिबडि मा पिरुपोरुलु बावकमवुल् ॥८॥

गोमगोप नेवियो गोपुगुवु गेल् सा
    रिचि मार्गनुक मणिवुवार,
विषमु बो मनुवु विषवस्तुवुले यनु
    नूरि कस्केमु गवमूस्वार,
पनपममुलु वेक्वि पसर गिषेस्वीसि
    मुकुवेवुल नोंकिल पोमुवार,
पुरवैषसात्कु मरिगि मेषवनीर
मुलु वेक्वि गळमुन मोलकुवार,
मेवटि प्रायमु ! लेविपोमिल बवनु
मोरसस्कोस्लकु मेवबुल विरिचिकोमुवु
बुवबुट सविवु कमीव बुकिपिकोगुवु
मलुवास्नु मैरि तत्परमनमु ॥९॥

इट्समेडु बमेक प्रकारम्मुल विपनिवर्तमोपायम्मु लालोचिचि
योगर्वुडु मृतपुत्रयगु मायम्म गोवार्नु बुलेत मरि कोमवु ॥१०॥

ई नगरसमीपार
म्यानि शल्गिरिकवरोतरमुन म
म्यूमानुभावु बोम्क य
तीर्गुडुमाकतवतीप्रियडुन् ॥११॥

साथी बालकोंके साथ प्रेमके साथ फुलवारीमें खेलते समय, मुझे डसनेवाला वह साँप नहीं है बल्कि वह ता मेरे पूर्वजन्मका पाप ही है ।।७।।

पुत्रके शवपर गिरकर जोर-जोरसे रोनेवाली उस स्त्रीको देखनेके लिए, पड़ोसके लोग घबड़ाते हुए दौड़े आए ।।८।।

गुनगुनाते हुए, हाथ फैलाकर मार्जनमन्त्र पढ़नेवाले, विषकी दवा विष ही है कह दवा घिसकर, आँखोंमें लगानेवाले कुछ जंगली पत्ते लेकर रस निकालकर नाक-कानमें डालनेवाले नगरकी वैद्यशाला जा दवाईका पानी ला, गलेमें डालनेवाले अरे, कहाँके प्राण? वे तो कभीके उड़ गए।' कह आपसमें निराशा सूचक बातें करनेवाले, उस नगरके जन टपकते आँसू पोंछते हुए चले गए ।।९।।

इस प्रकार कुछ लोग कई प्रकारसे विष निकालनेके उपाय करते हुए मृतपुत्रवाली उस स्त्रीको सान्त्वना दे रहे थे तो कुछ लोगोंमे कहा —।।१०।।

इस नगरके समीपस्थ अरण्यमें रत्नगिरिकी कन्दराओंमें महानुभाव और अतीन्द्रिय यतीश्वर रहते हैं ।।११।।

आध्यमयोहृदु मोमृत
कायमु मोनिपोम्मतु करुणाभरर्णु
रायु योसय समर्थुडु
पाम्पयिवि पनुषु येत्नुप मापेयु गवकन् ॥१२॥

गुनमु पमि स्मृत पुत्रकळेबरमु रग पर्थुम मोम्पुषु मे
न्मागगमलाङग गघुक वाप्मपु गाम्वमु मोसम गारग म
स्तत्य मेव लिंपु पिकारमुन गोडुका ! कोडुका ! कोडुका !
मनुषु
गुममुम मीडम्कुं ममुर्पु मने पूरिनवम्त विगुल्मडुपुन् ॥१३॥

कुसुम पेशलमैम पसिपापमपुपै
    मलमाम गमीर मार्पु वानि,
'निट ममु विडिचि मीवेगिते हा पुत्र
    हा पुत्र' यमु पिट्टकमु वानि,
'मा पापफलमु फनाघरमै निमु
गरचेरा कोडुक ! यमोरसु वानि,
'मपकारमेमि मे मार्वरिचिति मात
वेदुनि ? कमि सारे विट्टु वानि
'मा सुतुनि ब्रतिकिंपु पुण्य प्रभाव
मेप्पगवरम्म वेममो वेट्टु मार !
ममुषु मा यी नगंबुम नमुगुवानि
गनिये सिद्धार्थुडेंतपु गरुणमोसय ॥१४॥

कमि 'मी वेम्पते, वेम्पत
मुन समर्पुडोम्मे, गहममुमकु ममुर्वे
विन कारणमे, ममि मा
डिम मामेयु वेस्लग कुरटिस्तुपु वसिकेन् ॥१५॥

उनके पास इस मृत देहको ले जाओ। वे दयालु महात्मा शाप देनेमें समर्थ हैं। पुत्रको जीवित करनेका यही उपाय है। तब वह उस प्रयत्नमें ॥१२॥

कन्धेपर मृत पुत्रके शवको रख उस भार-वहनसे शरीरके कांपनेपर, आँखोंसे आँसुओंकी धाराधार बहते हृदयका आश्चर्य और विषादसे भर बनेवाले स्वरमें 'हे पुत्र! पुत्र' कहते वृक्षोंकी छायाओंमेंसे होते हुए, दुःखभारसे दिलके टूटते-टूटते, वहाँ गई ॥१३॥

फूल-से उस नन्हे बच्चेको कन्धेपर रख आँसू बहानेवाली 'हाय मुझे यहाँ छोड़ कहाँ चले हो पुत्र! कह विलखनेवाली 'मेरे पापका फल ही सर्प बनकर तुम्हें डस गया रे मेरे लाल!' कह रोनेवाली उस निगोड़े भगवानका मैंने क्या बिगाड़ा?' कह बारम्बार भगवानको कोसनेवाली और हे वृक्षो! मेरे पुत्रको बचानेवाले पुण्य प्रकारका पता शीघ्र बता दो न! पूछनेवालीको सिद्धार्थने बड़े करुण भावसे देखा ॥१४॥

देखकर पूछा—'तुम कौन हो? किस कारणसे तुम्हारा पुत्र मरा? इस जंगलमें आनेका कारण क्या है?" वह और भी अधिक रोती हुई बोली ॥१५॥

पसिवानि पामु बनमुन
पसिमसने पाकु बीजोकव पुर्तुंबी
मिसुपुं बक्तिकिपयक त
पसि कलकिगिरि मटमु बम्किरि पीवल् ॥१६॥

तवर्वन मा बच्चुव, मम्महृदमु मेरिसिनिवे मामतिम्मनि
मंबनशोकम्मुन मर्मुरमु बल मुवर बालु मरनि तांचि
मूलबमापारीपुंबमु मा-संविद्दलनिये ॥१७॥

'पीवमु मीड्ड बोम्मिन तपस्विनि मेमभूमी, मनोहरा
काव मवस्कुमाव बुदिकालमुनं बर्तिम्बु पानि मी
पूरिकि बोयि सपपुमुलोप्यम बेम्मोक बोमि, पुनु नि
वारमि मुंबु मेनु सविवम्मुन मीचयि कानु पुवेवन्' ॥१८॥

मरिपु मोमक विसेषंबु गलबु मिमुपु, बननीजनक पतिमुमाबुन
मरनम्मुन मेमंबुनु मापमुल् गासि पीवसंयिटिकि वनि
पावसु मांचिचि तेवम्मु भुमी ! ममु सर्वार्पसिदुमि ववनंबु
समवासन्न संबोहुदु बेंबुन पुर्वपिपजेम पुमाव मट गुतलमार्पि
बेसि मरमि राजपुहम्मुन मोक मुहम्मुन करिगि कम्लोरमु
मोडिचिन मा पिटि मुतेबुन तनयोक्मीबनत्परायमाम मानस
यपु मावे चिन्द्लनिमे ॥१९॥

ममनंबु म्मरयमु धम्मुनुलु म्स्वाभाविक, म्मेरिबे
स्विनिर्संबीमे ? मुमुमुम्मकडिपि तल्ली ! येंटि नेबारिपि
मनु पासेमु प्रयोमकु म्मुबननंबारेंबु पोदुतमा
मिनि कुमुं रिपर्सिपि रायिकरपि म्मीलिचि पिवृर्लुंबने ? ॥२०॥

मावलकु नेमि माप्यमु,
कावलसिन गोमुमवम, पसीव कुच
प्राबारमु वहपन बमि
मा बीपि मम्हि गुहिमुक्कर मविपेम ॥२१॥

'बच्चेको मगमें साँपने डस लिया। यह मेरा इकलौता पुत्र है। लोगोंने कहा कि इस गिरिपर मेरे बच्चेको जीवित कर सकनेवाला तपस्वी है' ॥१६॥

उसी महात्माके लिए मैं आई हूँ अगर जानते हो तो बता दो। पुत्रशोकसे दुखी और अपने पैरोंपर पड़नेवाली उस स्त्रीको देख मूलध्यानिरत उन्होंने कहा—॥१७॥

लोगोंने जिस तपस्वीकी बात तुमसे कही है वह मैं ही हूँ। मैं तुम्हारे अति सुन्दर सुशील पुत्रको पलभरमें जीवित कर सकूँगा। पर अपने गाँव जाकर थोड़ी-सी राई लाओ। पुत्रको इस धरतीपर लिटा दो। मैं तुम्हारे समान इसकी रक्षा करूँगा ॥१८॥

पर एक खास बात है। माता पिता, पति-पुत्रादिके मरणसे आपन्न न बननेवाले लोगोंके घरसे राई माँग लाना है!' सर्वार्थ सिद्धके वचनोंसे मसम अमन्द आनन्दके उत्पन्न करनेसे उस स्त्रीने पुत्रको भूमिपर लिटाकर फिर राजगृहके एक घरमें जाकर सारी हालत बतलाई तो उस घरकी सुहासिनम तनयोज्जीवनत्वरायमाणमानसा (तनयको पुनरुज्जीवित करनेकी उतावली रखनेवाली) उस स्त्रीसे कहा ॥१९॥

'जन्म और मरण तो जन्तुओं (जन्म लेनेवालों) के लिए स्वाभाविक है। कब किसके लिए सत्य है? सुख ही कहाँ है बिटिया! वर्षभर भी नहीं हुआ कि कुटाम और सुजनमन्दार, हट्टे-कट्टे पुत्रको निगलकर हृदयको पत्थर बनाकर जीती नहीं रही? ॥२०॥

राईकी क्या कमी है? जितनी चाहिए ले लो। तब उसने आँसुओंसे आँचलको भिगोते भिगोते उस मुहल्लेकी सब गृहिणियोंसे जा पूछा ॥२१॥

कन्नबिड्डकनेल्ल गंपपासोनरिचि
  यतिकिल परम निर्माम्युरीड्रु,
यारुष्यसव मर्तमु पेद्दनिड्रु र
  चडसिन पुरवृद्धमसुरीड्रु,
चिरकालमुमगु बच्चिन चूड्रु गोरूपोयि
  बन्तचे गुमु चूर्लेतरीड्रु,
बसिततम्मुन भारिकसिमसंसिन तस्कि
  चन्द्रु म कच्चु स्वतन्नुरीड्रु,

गानि येंदुनु चडगिन करमि चमकु
  बम्मु सिद्धार्थमु सोसुगुबार पुरमु
मसाडक गामरारेरि मातिकास्म
  शिशुमरणमु सवारि सुभिक्षपक्षेम ॥२२॥

तमकै यावल मिम्म
पु मडिगिन बेलेवि पुत्रशोकाग्नि रवि
स्येमु बापतमपोरी हृद
यनसकगुप्तापन श्रोफ्हतपूनमुन ॥२३॥

तम्रगरनिकेतनमुल
कोसिटिकि मरिमि सुतुनकोयप्रमनि या
पसुसु तामेप्रगु गा
कुम कुटुंबिमुल येवक मोकरमु मेमिन् ॥२४॥

सिम्नयमुगु राजपुत्राधिष्ठितंबगु मिरिकबरमुनकु वनि कनि
स्रोसिम कडचिन वृत्तांतमु वेम्पिम नातडक्कम मगुमु मम्म
गव मिटलनिटो ॥२५॥

समस्त सन्तानको गंगामें बहाकर, जीनेवाली अभागिनियाँ सायुज्यमें ही पतियोंके मरनेपर भी जीवित नारियाँ चिरकालके बाद आई गर्भके स्रावसे दुःखी स्त्रियाँ, बचपनमें ही काल-कवलित माता पिताओंके लिए बिलखनेवाली अनाथ नारियाँ पर नगरके चारों कोनों ऐसी कोई नहीं मिली जो सिद्धार्थके वचनानुसार राई दे सके और उसके शिशुके मरण रूपी दुःखके समुद्रको सुखा सके ॥२२॥

अपने लिए राई माँगनेवाली उस स्त्रीकी पुत्र-शोककी अग्निने नगरकी स्त्रियोंके हृदयोंमें सुप्त शोक अग्निको प्रज्वलित किया ॥२३॥

उस नगरके सभी घरोंमें जाकर, कभी विपद न होनेवाले गृहस्थोंके हायक औपम्यिकी यावना करनेपर उसे ऐसा कोई न दिखाई दिया ॥२४॥

खिन्न होकर वह स्त्री गिरिकन्दरामें रहनेवाले उस राज कुमारके पास गई और उसने उसे नमस्कार कर, सारा वृतान्त कह सुनाया तो वे मुस्कुराकर बोले ॥२५॥

'मरणंबु सब सामान्यंबु दुर्गंबु
    गांचनिवाव लोकमुन लेद,
निजमिवि यगुमाट मीयत मीकु गो
    चरमुगा मी मुक्ति सम्किपिनाव,
मीवुस हाकन भेवम्मुलकु पत
    मेहियो तेत्तिम्मय मेंचि मेनु,
बिरुगुलुभाव देम्मिपुटके प्राण
    मैनमु पिडुगु साहसमु कम्ब
टंबु बोधिवि पुरमनु कापे नपि
रतनमिरि सामुकुम्मव राजसुतुड
प्राणगति मतिपुबुमु ॥२६॥

———

मरण तो सर्वसाधारण है। दुखी न होनेवाले इस संसारमें कोई नहीं है। यह सच है। तुम्हें समझानेके लिए मैंने यह सब उपाय किया है। इस जैसे दारुण खेदोंके कारणको जाननेके लिए ही मैं इस तरह घूम रहा हूँ। जाननेके लिए जान भी देने तैयार हूँ। इस प्रकार समझा बुझाकर उसे भेज दिया और यथापूर्व रत्नगिरिकी कन्दराओंमें रहने लगा ॥२६॥

२. पुर परिक्रमु (नगर वर्णन)

मरिपु नहियेड वेचतलम्मेडकु वच्चि तवेलमोचरलै ॥१॥

एवुलकुं जनिचिति, मरेमि योमर्पुजुनुटि, श्री जग
मु नरहित येस्लेडल व्याप्तमोनर्पुमु, राज्यपालन
मुनु निहिसौख्यमुलर्यंगुमु सुम्मक व्यर्थमैन वे
इक विराग्यमि मैळमुपकारमु कोछुलकुं बोनपुमा ॥२॥

मनुषु प्रसियवंबुलु बोधिमुनुंड सिद्धार्पुडोचकमाडु प्रपच विशेषम्मुल
नेरिगि तनुपक्रतिकि परिमप बलचि चिम यनु गोकमास्ति नरिगिन
मम्यवि
' महात्मा ! मी यचि पंचिप मा बोधि बोधि वेन्द्सु साम्यमा ? मी
विशेषंबुल वेचर बनि कमिन वेटलेस्लंबुलगु ' ननुडु मतकद्ल काक
मनि वेन्नुगनु सारधि विमिचि ॥३॥

ऊरतमु गनुगोनवले
वेरायतं बोनचि तेम्मन भूरी
कारंबनि बाडरिपिन म
हाराजुगकुर्नंचिचेमरि येस्क बडिम् ॥४॥

राजुविनि कोड्डुमकवि राज्यकांत
मा वलंचि पुरम्मधिकम्मुगा न
संकरिपंग जाटिचे योकमुग म
मकरिचिरि पौरलिसममाज ॥५॥

१ बुद्ध चरित्र (नगर दर्शन)

फिर एसे समय देवता लोग वहाँ आकर उसे ही दर्शन देते हुए—॥१॥

'जन्म क्यों लिया? फिर कर क्या रहे हो? इस जगत्‌में अहिंसाको परिव्याप्त करो। राज्यपालन और इतर सुखोंमें मन न लगाकर, इन व्यर्थ विलासोंको छोड़कर शीघ्रही लोकका हित करो' ॥२॥

इस प्रकार प्रतिपदपर प्रतिबोधित करते वक्त संसारकी विक्षेपताओंको जानकर ही उसके उपकार करनेके प्रयत्नके लिए सिद्धार्थने एक दिन चित्रा नामक दासीसे पूछा। उसने कहा—'हे महात्मा! मुझ जैसी स्त्री उनका वर्णन क्या कर सकेगी? आप स्वयं जाकर देख लें तो सबकुछ मालूम हो जाएगा। उसने भी उचित समझकर 'चन्न' नामक सारथीको बुलाकर कहा—॥३॥

'सारे नगरको देख आना है रथ तैयार करो। सिद्धार्थकी आज्ञा मानकर, उसने शीघ्र गतिसे जा महाराजको इसकी सूचना दी ॥४॥

राजाने यह सुनकर सोचा कि यह पुत्रकी राज्यकी आकांक्षा है। उसने नगरको समलंकृत करनेकी घोषणा करवाई। नागरिकोंने भी राजाकी आज्ञाका मान नगरको खूब सजाया ॥५॥

गुरि्वर्वाड्ु गु पुष्परोगुमनु गुंटि
वाड्ु रिवतजनुमु मोक वस्तुमावि
गा गलगु बारसेय्योडगामि वीपु
लंनु गाम्पिंपनुड राजानतिव्वे ॥६॥

कनुसम्पनुवो गति वर्ग बुरमिद्सर्ककरिप, मा
वेमुडु वेर नायितमु वेयुडु, रामुतवर्त महुर्न
वुसनुवकसंगनग वूनतरोत्सवमोप्प मेगि कां
चे प्रस्तनुगत्नोडु विशेषमुसम्मविकेनुनदुसुमम् ॥७॥

इटसु कौंतवडि चौंकिचि मरवि स्वस्थानमुनकरिगि मुनवुडे ,
माष्टिनिघोषम्मुन मुखेममुमकु स्वप्नम्मुनम्टिसुकननम्मे ॥८॥

मनुडुनु मिमवापेबुसोम गमनु
मोकपताक वनिसम्मुन मोरगि मेक
वडिम पौवर सम्पासितवसु बामि
मोगि वमिरि तूर्पु विवकुनडुनु गर्वगि ॥९॥

वसिगघटापथमुन
नक्तगति वविगजम्मुसरगाय मर्मु
दसतगस्तोकि येम्गुन्
शिखिचुडु नैमिक वनिये सिद्धार्थुडुन् ॥१०॥

हृत्लोक माम्गु गडु स
स्वरमुनसागग जनु रयम्मुन बा मु
स्विरडै सिद्धार्थुडु सुं
दरमूर्ति मुखमुन वनियें वनयन्त वेसन् ॥११॥

सोवगु चित्रमुलैंमुमहुमनु दनर
गनवमयमुनु माणिक्य दर्पिनमुलुनु
मगु मरमुलोप्प नसर रपोपमोक्क
टोपरम्पेड माप्प पनुसकननजमुग ॥१२॥

राजाने आदेश दिया कि राजमार्गोंपर कहीं भी अन्धे कुष्ठ रोगी, लँगड़े, दरिद्री, दुःखी जन न दिखाई दें ।।६।।

इस प्रकार नगर नेत्रानन्दकर रूपसे सजाया गया। बेधक रथ तैयार कर लानपर, राजकुमारने पूर्व-उत्सवसे जगमगानेवाले नगरको मानव लोककी विशेषताओंपर ध्यान देते हुए देखा ।।७।।

इस प्रकार थोड़ी देरतक देख सिद्धार्थ फिर अपने महलमें आकर सुखसे रहने लगे। उस दिन रातको शुद्धोदनने एक स्वप्न देखा ।।८।।

सूर्य और इन्द्र धनुष्य युक्त एक पताकाके जमीनपर गिर पड़नेपर, कुछ संन्यासी जन उसे ले पूर्व दिशाकी ओर गए ।।९।।

दक्षिणके राजपथपर बेरोक टोक दस गज ही गये होंगे कि वहाँ कायवश प्रथम गजराजपर शासन बसाते उसपर चढ़कर सिद्धार्थ चलते बने ।।१०।।

चार घोड़ोंसे शीघ्र गतिसे खींचे जानेवाले रथपर सुस्थिरतासे बैठ सुन्दर आकारवाला सिद्धार्थ प्रसन्न होकर चल ।।११।।

सुन्दर चित्रोंसे युक्त किनारों और स्वर्ण-माणिक्य खचित आरास युक्त आश्चर्यप्रद एक रथ-चक्र दिखाई पड़ा ।।१२।।

गुडियलोड्गु गुप्टरोगुसुनु गुटि
लोड्. रिमतजमुसु शोक वमुलावि
गा गलगु बारलेम्पोडगालि बीपु
म्मु गार्भिपकुष रागामतिम्मे ॥६॥

कमुलपडुवो गति बग बुरमिद्लसंकरिय, गा
बेभुडु वेद मायितमु बेयुडु, रामुतर्कत बहुम
बुमसुबंक्संगनग बूर्णतरोस्सजमीप्प मेगि कां
मे ग्रफसमुगल्लोडु विशोयमुस्नमविकेभुमद्लुगम् ॥७॥

इद्सु कौतमरि बौजिषि मरकि स्वस्थानंभुमकरिपि सुमंबुडे ,
माटिनिशीपम्मुन सुखोपनुमकु स्वप्नम्मुनमिद्सुकनमम्मे ॥८॥

मम्मुडु निमलापंबुमोम गम्मु
मोकपताक यमिकम्मुन मोरगि मेस
बडिन गौवर सम्पासिमरसु रामि
गोमि चमिरि सूर्पु बिम्कुमकुमु गर्वंगि ॥९॥

दक्षिणघंटापथमुन
मक्षतगति बविगम्मुमसग मम्मुं
मक्षतगम्मोकि येन्गुन्
शिखिभुडु नेमिक चमिये सिद्धार्थुडुन् ॥१०॥

हृत्कोक भाम्मु गडु स
रवरमुमलागग बनु रयम्मुम बा मु
स्पिरब सिद्धार्थुडु सुं
दरमूर्ति मुखमुन मनियें ममयन्त येसम् ॥११॥

सोयगु चित्रमुमेडुमंमुसनु बमरु
गमरमयमुसु मार्भिकय दर्शितमुसुनु
मगु मरमुलोप्प ममरु रपोगमोक्क
डोबलयेड माप्प गम्नुसकमकजमुप ॥१२॥

राजाने आदेश दिया कि राजमार्गोंपर कहीं भी अन्धे कुष्ठ रोगी, लँगड़े, दरिद्री, दुःखी जन न दिखाई दें ॥६॥

इस प्रकार नगर मेवानन्दकर रूपसे सजाया गया। सेवक रथ तैयार कर लानेपर, राजकुमारने पूर्व-उत्सवसे जग-मगानवाले नगरको मानव लोककी विशेषताओंपर ध्यान देते हुए देखा ॥७॥

इस प्रकार थोड़ी देरतक देख सिद्धार्थ, फिर अपने महलमें जाकर सुखसे रहने लगे। उस दिन रातको शुद्धोदनने एक स्वप्न देखा ॥८॥

सूर्य और इन्द्र-धनुष्य युक्त एक पताकाके जमीनपर गिर पड़नेपर, कुछ संन्यासी जन उसे ले पूर्व दिशाकी ओर गए ॥९॥

दक्षिणके राजपथपर बेरोक टोक दस गज ही गये होंगे कि वहाँ कायदक्ष प्रथम गजराजपर शासन चलाते उसपर चढ़कर सिद्धार्थ चलते बने ॥१०॥

चार घोड़ोंसे शीघ्र गतिसे खींच जानेवाले रथपर सुस्थिरतासे बैठ सुन्दर आकारवाला सिद्धार्थ प्रसन्न होकर चले ॥११॥

सुन्दर चित्रोंसे युक्त किनारों और स्वर्ण-माणिक्य खचित आरोंसे युक्त आश्चर्यप्रद एक रथ-चक्र दिखाई पड़ा ॥१२॥

ओक गिरिवरमुमनु योस्पोंगु मोक्क
मेरिक मयोमयमगु पेहुकर्र
गरमुनगोनि डांकृति पवमुकोनय
मट्टे कोट्टुपुमुडे सिद्धार्धुडेममि ॥१३॥

पोवबुन वमर्चु मोक्क गोपुरपु सिखर
मन्नु गूर्चुचि पवमुलु हस्तमुलनु
चाचि योक्नु ररमम्मुलु चस्ल ग्रिम्व
मेरिक्रोमुर्चुडिरोक कोंवरिवल्लमवल ॥१४॥

ओक पागुर मनुलोकयो
विकस्सरवमु मोगमुमनु येलाकय व
रनु कोरिकिलोंगु मनसा
रमल्लुपितामुनपि येगसागिरमवर्र ॥१५॥

इटमी येगु कललंगाचि मेल्कांचि शुद्धोदनुडु वमर्चु गोगु मूडुनमि धोंकिगुगु गोस्नुगूटंबुमकु चलिच समासमुल नवसोर्कचि स्वप्नवृत्तांतमु वर्चिचिन मवोक विद्वांसुडु राजा! नो स्वप्नमुलकु फलंमुलिट्टिवि यनि कममुग चेप्प दोडंगे ॥१६॥

सूर्यविवमुचंठि संगुमूडोकडु
टेम्लमुनु कोल्मिलम्लोस मुचकु मिगुलु
चाकिस्पताचारमडचि प्रवसण चेयु
मचि पाचारमुनु भुवि मपितमुग ॥१७॥

मा पविमम्मुमम बुद्धिमलु तेस्मुलु,
मोवद्धिकरि मेचिक येगुटप्पादि तेव्मुम
मगु सरयमागम्मुमयंगु यविलि
येगु मोक्षसिद्धुडगुट मुर्खीशमौळि! ॥१८॥

एक पर्वत श्रेष्ठपर घोषित नगाड़ेको लोहेका एक बड़ा डण्डा हाथमें लेकर सिद्धार्थ बजा रहे थे जिससे डमा डमकी बड़ी आवाज निकल रही थी ।।१३।।

एक ऊँचे गोपुर शिखरपर बैठकर हाथ-पर पसारे कोई रत्न बिखेर रहा था। नीचे जमीनपर इधर-उधर खड़े लोग उन्हें चुन रहे थे ।।१४।।

एक जगह कोई छः लोग जिनके चेहरोंसे विकलता टपक रही थी दाँत पीसते हुए आँसुओंकी धारासे कलुषित नेत्र वाले और असाध दशामें आ रहे थे ।।१५।।

इस प्रकार इन सात स्वप्नोंको देख हानिकी आशंकासे शुद्धोदन सभामें आए और सभासदोंको देख स्वप्नवृत्तान्त कह सुनाया। तब एक विद्वान उन स्वप्नोंके फलका क्रमसे विवरण देने लगा ।।१६।।

सूर्यबिम्बके समान सद्‌गुण एक व्यक्ति पताकाके समान चारों दिशाओंमें परिव्याप्त हो प्राचीन आचार्योंका दमन कर, अच्छ और पवित्र सम्प्रदायका प्रचार करेगा ।।१७।।

ये इस गज बुद्धिके दस भाग हैं। पहले हाथीपर चढ़ने का मतलब है उन दसों मार्गोंमेंसे मध्यमार्गपर एक सिद्ध पुरुष चल पड़ेगा ।।१८।।

अरचमुनु लागु मासुगु
हृस्सगनुपोटियधिप ! थवि मामपु बे
स्गुव ऋडु चतुवगमु ,
परिपाटिग चूडु वीनि माचवेस्सम् ॥१९॥

माना चित्रमुलमु र
रनानीक स्थपितमुनगु मल चवर्वे
सेनीतिरीतिकि बप
चानून विशेषमुस्कु म्यजक मधिपा ! ॥२०॥

नी कोइकु मेरिगोद्दडु मोकु गाम
बहुट कवंबु वेस्येव कार्चिवेव !
कोकमुस्सेस्स वेसिम्पग 'नेकमेव
यनेडि युतिनि चाटिचुट बरयुमेडर ॥२१॥

गोपुरमु काम मास्त्र मम्गोपुरम्मु
मुंडि रत्नमुल निम्मुटोकुल कैला
चानि नुपवेसमोसगुविशम्मु रत्न
मिकरमेरुट प्रहिंपिमु नियति मधिप ! ॥२२॥

भोगमुलु चाडग नापुर
पोगुस्ट तम मतमु बोम भूर्वाचारा
सुगति चपतिकि वेस्गुपु
मेगडु गुरबुसेडुपुटमनि येस्गु मधिपा ॥२३॥

अनि चेप्पिन मप्पलकुल चन्दमु विनि यी येडु स्वप्नमुस्कु
ययपसितापम्मु तनूजुंडु सप्पसिपुटका यनि कुलनिपवपुड ॥२४॥

रथको खींचनेवाले चार घोड़ोंको देखा है न राजन्? व ज्ञानके प्रकाशको दिखानेवाले चतुर्वेद हैं। यह भाव तो सम्प्रदाय सिद्ध है ॥१९॥

नाना किस्मोंसे युक्त रत्नोंसे जड़ा हुआ वह छत्र तो नीति-रीति और संसारके अनूप विषयोंको सूचित करनेवाला है ॥२०॥

सुनो राजा! तुम्हारे पुत्रके नगाड़ा बजाते दीखनेका अर्थ बताऊँगा। वह तो सारे संसारमें 'एकमेव' वाले धुनिकी घोषणा करना है ॥२१॥

गोपुर तो ज्ञानशास्त्र है उस गोपुरसे रत्नोंको बिखेरनेका अर्थ है उस ज्ञानका उपदेश देना। उस रत्न-समूहको चुन लेनेका मतलब है उस ज्ञानोपदेशको ग्रहण करना ॥२२॥

उदास चेहरे लेकर छह जनोंका दुःखी होना अपने-अपने धर्मोंके परास्त होनेकी स्थितिका भान कराते हुए उन धर्म-गुरुओंका रोना है जो प्राचीन आचारोंका उपदेश देते हुए उच्च दशाको प्राप्त किए हुए थे ॥२३॥

इन सपनोंका सुन, इन सात स्वप्नोंका परिणाम तो मेरे पुत्रका संन्यास ग्रहण करना है। यह समझ और दृढ़निश्चय होकर—॥२४॥

अरवमुनु भागु माळ्नु
हृदयगनुगोंटियधिप ! मवि भानपु चे
स्तुत चूपु चतुगणमु ;
परिपाटिग चूडु वीनि भावबेस्सम् ।।१९।।

माना विभ्रमुतमु र
त्नामीक स्वणितमुनगु नक चक्रों
तेनीसिरीसिरि बप
चानून विसेषमुस्कु व्यवक मधिपा ! ।।२०।।

मी कोयकु मेरिगोट्टुगु मोक्कु गाम
चकुट कर्तनु वेस्मेव वार्धिवोंद !
कोल्मुलकेलक वेस्मिपग 'भेकमेव
यमेंडि भुतिमि चाडिचुड मरपुमेकव ।।२१।।

योपुरमु माम मास्त्र मम्मोपुरम्मु
मुडि रत्नमुल विम्मुडोयम कोस्त
वानि मुपवेशामोसगुचिम्मनु रत्न
निकरमेस्व प्रीहिमिनु नियति पधिप ! ।।२२।।

मोगमुनु वायग मार्गुत
पोगुसुट तम मतमु वोप चूर्णधारा
भुगति चगर्तीकि वेस्नुनु
मेमडु गुस्नुकेडुपुटपनि येरगु मधिपा ।।२३।।

मनि चेप्पिन मप्पतुकुक धममनु विनि यी येडु स्वप्नमुसकु
वर्यचसितापम्मु तनूगुडु सम्पासिपुटना यनि कुतमिरचपुंडे ।।२४।।

रथको खींचनेवाले चार घोड़ोंका देखा है न राजन्! ये ज्ञानके प्रकाशको दिखानेवाले चतुर्वेद हैं। यह भाव तो सम्प्रदाय-सिद्ध है ॥१९॥

नाना चित्रोंसे युक्त रत्नासे जड़ा हुआ वह चक्र तो नीति-रीति और संसारके अनुरूप विशेषोंको सूचित करनेवाला है ॥२०॥

सुनो राजा! तुम्हारे पुत्रके नगाड़ा बजाते दीखनेका फल बताऊँगा। वह तो सारे संसारमें 'एकमत' वाले मुनिकी घोषणा करना है ॥२१॥

गोपुर तो ज्ञानगारव है उस गोपुरसे रत्नोंका बिखरनेका अर्थ है उस ज्ञानका उपदेश देना। उस रत्न-समूहको चुन लेनेका मतलब है उस ज्ञानोपदेशको ग्रहण करना ॥२२॥

उद्दाम पेड़से उखड़ कर छह जनोंका दुःखी होना, अपने-अपने धर्मोंके परास्त होनेकी स्थितिका ज्ञान कराते हुए इन धर्म गुरुओंका रोना है जो प्राचीन आचार्योंका उपदेश देते हुए उच्च दशाको प्राप्त किए हुए थे॥ ३॥

इन वचनोंको सुन इन सात स्वप्नोंका परिणाम तो मेरे पुत्रका संयास ग्रहण करना है। यह समझ और कृतनिश्चय होकर—॥२४॥

मुनपटिकमनु मेल्कुड्
मगुल गापुचि पूर्वसवनमुन मं
मनु मुडचेसे , मेनु
ननकुनकु शुभु यिभुच सम्मतमगुमे ।।२५।।

भासिद्धार्थुडु पूर्वरीति मरमाडा चेमुनि गूडि प्रो
व्वास गम्भोरुमुन् मूर्ति गमु मनु, प्राणमु क्षेपमुगा
गासि चेंदेडु बानि, वेल्कुल्कलु रोगमुस्मयम गूर्प स
भास वेंदिकुबानि वा मनि मदि वापप्रकोपमुगनन् ।।२६।।

कोस्लनुम चेमु मडिगि कीडु मेलु
काल्म बद्दिटमुकोमुगु महसया मरम
वेरोस्व मुट्टु, यमुगुस्वेपिक वेक्कि
येत्रुव यन्चेंडु समनोमकचेडुव पक्षिमे ।।२७।।

कोमल बग्गिमु गुडमु गोनि मधुवग
ममत्रमोस्कित गम्पटट वस्त्रसम्
तमुगा वेसि पाडे पै वग मस्त
वेट्टि मल्लुव वर्हिमिय चेडसे सयमु ।।२८।।

मवपडि मकम्मुपमुलपक्षिसमाकुलमुन्नियावारणा
स्यवमु ममेक चाहक सम प्रभुरम्मुनु मैन मस्सका
ढि बरिरनि वेट्टि या गावमु डेप्परम मनु वह्लि पास्य बू
डियगुडु मृपास्मुतुडेवमु मम्मु मिम्रमिमने ।।२९।।

विवर्णावगुटयु चेमुनि
मयकोनिचि 'मममिट्ट्लगुडुम ? मन, मा
दु मसुडु सिद्धार्थुनिकि म
मपियं विम्पगिरि मा गर्मगडि मविस्तोन् ।।३०।।

पहलेसे भी अधिक संख्यामें लोगोंको रखवालीपर नियुक्त कर, पहलेसे महलमें ही पुत्रके रहनेका प्रबन्ध करवाया। कहीं भी पुत्रसे विलग होना पिताको अच्छा लगता है ॥२५॥

सिद्धार्थ भी पहलेके दिन की भाँति उस दिन भी चेन्नके साथ नगरको उत्सुकतापूर्वक देखने लगा। मरते हुए एक आदमीको मरणके सिवा अन्य सभी कष्ट उठानेवालेको अनेक रोगोंसे पीड़ित, सन्त्रस्त एक व्यक्तिको देखा। उससे मनके तापके अधिक होनेपर—॥२६॥

निकटस्थ चेन्नसे पूछकर, भले-बुरेके ज्ञानको प्राप्तकर, जाते-जाते एक और जगह रोते-पीटते रिश्तेदारोंसे घिरा एक शव सामने दिखाई पड़ा ॥२७॥

पुत्रके हाथमें आग और घड़ा लेकर चलते मुखके सिवा सारे शरीरको वस्त्रसे ढाँपे हुए, जनाजेपर लिटा चार व्यक्तियोंसे ढोए जाते, वह शव निकल पड़ा ॥२८॥

तदुपरान्त कंक (उकाब) गीध आदि पक्षियोंसे घिरे हुए, स्यारोंके निवास-स्थान और अनेक बाहक और शवोंसे भरे हुए श्मशानमें उस शवको जलकर राख बनते देख उस राजकुमारके दिलके टुकड़े-टुकड़े होने लगे ॥२९॥

विवश मनसे चेन्नको देखकर सिद्धार्थने पूछा—क्या हमारी हालत भी ऐसी ही होगी? व्याकुल मनसे चन्नने कहा—॥३०॥

३ सन्ध्या-वर्णन

अपरगिरिपु मनतरणम्मबन्धु
मदु रागातिशयमेनकुदै चेसंगे
स्वपतुवम्पु हरि चवल पोर गमकिंपु
समरमकु पाल रक्ति देस्पनोप्पनम ॥१॥

अंबुजबन्धुवु पूर्वत
रव यममयि कौंतराणिविपु यु
क्लबै तगुविवमुन य
मधुगवा पश्चिमाद्रि माहुन करिगेन् ॥२॥

हरिवन्धुवु तन गृहमुन
कस्तेंबे नटंबु पश्चिमाम्बुधिमधुसम् ।
मरमुन गानुकोसंप व
दस्मवछवि बोस्वे मनग मयगुबेसगेन् ॥३॥

पश्चिमाचलमुन भान्ति परिढविस्के
भानि तूरपु गोंड रिक्तवसनवे,
मोकवु चेडिपोवु पै गानि मोकवु बागु
पडुटसे बनि मनुसाकुयलकु निजमु ॥४॥

भारकान्तमु वचलि मंभोरुहापु
वरिमिलन्तम पहानि मटुकोमण
ममममपुवेंचे, भारकान्तलकु बमिन
भादु चीडिन दुरवस्थ यवधुटवसे ॥५॥

३ सन्ध्या-वर्णन

सुनिए। उसके बाद अम्बुज-बन्धु (सूर्य) में राग (प्रेम, अरुणिमा) अधिक होने लगा मानो मनमें हरिको वर (प्रिय) के रूपमें चाहनेवाली लक्ष्मीकी रक्तिमा (प्रेम लालिमा) को प्रकट कर रहा हो ।।१।।

अम्बुज-बन्धु पहले पूर्ण फिर आधे बन कुछ थोड़ा से, फिर सूक्ष्म बने बिम्बवाले हो शनै शनै पश्चिम पर्वतकी आड़में चले गए ।।२।।

हरिदश्व (सूर्य) अपने यहाँ पधारे, इस प्रसन्नताके मारे पश्चिम सागर अपने करकमलोंमें मणियोंके उपहार ले उपस्थित हुआ। मानो उन मणियोंकी रक्तिमा (अरुणिमा) से सूर्य चमक रहा था ।।३।।

अस्ताचलपर प्रकाश फैल गया परन्तु उदयाचल कान्ति हीन बना रहा। 'एकके बिगड़नेपर ही दूसरेका फायदा होता है।' जनताके इस कथनमें सत्य है ।।४।।

वारकान्ता (दिन रूपी स्त्री) को छोड़ अम्भोरुह-आप्त चल दिए तो उसे ग्रहण करने तम (अन्धेरा) आया। किसी योग्यके छोड़ देनेपर वारकान्ताओं (वेश्याओं) की दुर्गति होनेमें आश्चर्य नहीं है ।।५।।

मंचुलमुल् चॉसचे, वतणावळि गुळ्ळगु चेरवच्चे, वी
– रंबुल मुंडि विप्रुलु करचुकडंबुग नीरु कावि व
स्त्रंबुल संपुटंबुल् पोसग गुह्यनुलकोपुरेंचि, र
म्यकुम संज तग्गे, चिरचारे वर्मंबु चम्मगा वेसल् ॥६॥

कोंचलसिपु गाद्दुक कोंचलच्चे
चेट्टु लसिपु चोल्लडिचेट्टु लच्चे
पंचुलसिमु मेरेंबु पंचुलच्चे
नेभलगावळ्ळु वामसीवोमसलु ॥७॥

जलज चलजवच्चु चारचन्नमुलच्चु
पक्षुगु रागमेल्ल पलिकि चार
कारिणी मन: प्रचारमु पाविप
चोलु लेकमुल चोचुटेल्लु ॥८॥

गगनमनु पनि पेकलिचि कालपुरुषु
चंद्रुगल बल्लमुल बयिनमरचेल्लु
चुम पौत्तिक प्रममुगा मोबकडोकटि
गा वकाशिचे चारकलगामुलगट्टि ॥९॥

वेस वेस चारे वुपु वेस वेचिळ्ळुलोप्पिनमीव गर्भिणी
ससल मोगबु चोसे, शुभसस्पण सखिलुडे विरांगना
तिलकमु सोंपुनगु बगि प्रतिफलच्चर्यादित कान्तिसंपचल
चोमगाग चंद्रुपंडु चोडिचेन सगपालु तर्मबडमगम् ॥१०॥

कलुवसपालिटि पुष्पेमु
कुसुमुं चवराकुपालि कोरिक गचवों
गासपालिटि मृत्युवु चे
मेलरायडु वेसिगे विरहिणी समुड ॥११॥

अम्बुज विचलित हुए, पक्षी समूह अपने नीड़ोंमें आ गया। नदीतीरोंसे विप्रजन हाथोंमें हल्के लाल रंगके कपड़े लिए (सन्ध्या स्नान कर) घर लौट पड़े। आकाशमें सन्ध्याका प्रकाश कम होता गया और धीरे धीरे चारों तरफ अँधेरा छा गया ॥६॥

तामसी (रात्रि) की सामर्थ्यकी बात क्या कहूँ? उसके पराक्रमसे सभी पर्वत काजलके पहाड़ सभी वृक्ष तमाल वृक्ष और सभी फल जामुन बन गए ॥७॥

अरुण और अरुणबन्धुसे प्रकाशित शरद् कालके मेघोंका सारा राग (अरुणिमा, प्रेम) कहाँ चला गया? हाँ, जार-जारिणीके मनमें वह (रागप्रेम) संचार करने गया होगा। वरन् और कहाँ जाता ॥८॥

मानों गगनकी जामसे तारकरूपी हीरोंको काल-पुरुष निकाल-निकालकर सजा रहा हो, तारे क्रमसे समूहोंमें प्रकाशित होने लगे ॥९॥

पूर्व दिशा ऐसी फीकी पड़ गई जैसे उकौनोंके बाद गर्भवतीका मुख हो। शुभलक्षण संयुक्त हो दिग्वधूके ललाटके तिलकके समान प्रतिक्षण वर्धित कान्ति सम्पत्तिवाले चन्द्रका उदय हुआ जिससे अन्धकार आधा कम हो गया ॥१०॥

मानों उत्पलोंका भाग्य हो विलासिनी युवतियोंका अभीप्सित हो चोरोंके लिए मृत्यु हो और विरहिणियोंका शत्रु हो, इस प्रकार चन्द्रिकाओंका राजा प्रकाशित हुआ ॥११॥

केरे बकोरमुलेल्ल , वि
बारम्भुन मुनिगे बकर्वपतुमु बस
पूरेम्रेलरासन् ;
पूरेम् बपतुमलिपु , कोलकुलु सेरेम् ॥१२॥

पद्मिनीकान्त तनु पूचि पवसु नम्म
रात्रिनगसाये वानि गेरविचि वेलपि
येरिकेमियु ममवसयेगुमीव
रामनेसमेटि पुमम राकपोवु ॥१३॥

चकोरोंकी बन आई (आर चखने लगे) चक्रवाक दम्पति दुखी बन। चन्द्रकान्तमणियाँ रसमय बनीं दम्पतियोंके हृदय रसमय (प्रसन्न) बने। सरोवरका जल एकदम स्थिर हो गया ॥१२॥

दिनके समय पद्मिनीकान्ता परिहास कर तो अब वल्लभिनी उसे देखकर हँसने लगी। किसीके लिए भी अमावसके बाद शोभायुक्त पूर्णिमा आकर ही रहेगी ॥१३॥

———

दीनिकलोरिंचितिर्वेनि मम्मु
गैफोनि रम्मिपुमभेदि यस्कलितितिमिम
प्रतिम केनुरतव वेरचि चपट्टि वानि
पलवि कीर्तिचे मोच कोमि भरसरम्मुलु ॥७॥

तल्कडिस्यमम्मु वविलि चित्तमु घरा
 बम्यम्मु पै मास गोमुपवम्मे,
वानि नूमाक पै वविलि चित्तमु कत्ति
 चेतपूजुट्कु वांछिमवम्मे,
तद्वसरसवित ववििलि चित्तमु काव्य,
 कलना विनोदमु वलपवम्मे,
वानि कौशिटियमु ववििलि चित्तमु परा
 हैत भावमु पै वारयम्मे,
मधुर! येमनु मम्मुबरमुनि चरित,
मलिस मूर्वचिये मनि मलव मानि
घममममु मोसमु वलपवम्मे
पामुलुल कम्पसगवुल पानमबुने? ॥८॥

पुर्षमुदीम्पुलपु म
मर्वळ रामातिशयमुनम् मरणि पुम
निर्वममेरुगक पूर्वीति
स्वागम्मुलु मरवेनु ॥९॥

वारसिरसुप म
मुमयतव
सौवरीमणि
पस्मिके गाम्पमुमम्मु

अगर तुम्हें ये शर्तें स्वीकार हैं तो मुझे स्वीकार कर आनन्दसे रहो।"

उस मनोज्ञ युवतीकी शर्तोंको इनकार करनेमें अपनेको असमर्थ पाकर उस राजाने शर्तें स्वीकार कीं और मनपूर्वक सभी प्रतिज्ञाओंका पालन करते हुए प्रेमपूर्वक कुछ वर्षोंतक आनन्दसे उसने जीवन बिताया ॥७॥

उसका मन उसकी कटिकी कमनीयतापर इतना अधिक आकृष्ट हो गया था कि उसकी रोमावलिके सौन्दर्यने तलवारको हाथमें रखनेके वीर धर्मको भुला दिया। उसके वचनोंके प्रेममें मग्न मन काव्य-कला विनोदकी बात सोच न सका। उसके आलिंगनमें लगे चित्तको अद्वैतके श्रेष्ठ भावोंपर ध्यान नहीं रहा। अहा! क्या कहूँ पुरूरवाके चरित्रकी बात! वह उर्वशीको ही सब कुछ समझता रहा पर धर्म अर्थ मोक्षकी बात सोच न सका। ठीक है कामियोंको दूसरे विषयोंसे क्या लगाव? ॥८॥

इस राजाकी संगति कष्ट-साध्य है यह समझकर उससे अनन्य प्रेमकर, मोहातिशयमें बँध उर्वशी फिर वापस आनेका मार्ग न जान स्वर्गको और इन्द्रको भी भूलकर रही ॥९॥

जब वे दोनों इस प्रकार थे, तब इन्द्र उर्वशीको वापस बुला लानेकी इच्छासे, प्रभुतायुक्त वाणीसे गन्धर्वोंसे बोले ॥१०॥

रममोवलुग नप्सरोरमणुलुम
मारसैन्नमु मूर्वशी बमित सोक
युसकारत्नमुन स्वयमुसबिधुदु
चन्द्रकळ सेनि यंबरस्थलमु पणिवि ॥११॥

कामुन मेवेनि योक नेपम्मुन बुरुरबु वॉचवि गोरियल
मपहरिंचिन मार्यम्मु पोसगुनमि चेप्पि पविम ॥१२॥

गन्धर्वुलु रतिकेळी
बन्धुरतगु नृपति केसगबळकुडंम यी
एवयपटिम गोरियल
मधतमसमंबु बोसमै हरियिपन् ॥१३॥

मायुरजम्मुल मेमे
मे यनि रोव सेय वभिमित्तमेरिगि सी!
सी! यनि रोयुबु मृपुतो
ना यूवशि बोक्कतप्तमै पिडलनियेन ॥१४॥

कोबुकुल वले बेंबुकोनुचुम ना पोरि
मम्मु बोधस्थितुसपहरिंप
माडुवानिकम मयमुंडवै पूर
कुड युवतमगुमे? कुबमयोस! ॥१५॥

रक्षिवेरवीर्यपुनु,
पेक्षमोर्नाचिरितिनि यानि येरुपमयिति मी
बसत यिट्टिवि यनि यो
कुक्षिमर! निभुगूडि कुसिसतर्नेतिम् ॥१६॥

"रम्भा आदि श्रेष्ठ अप्सराओंके रहनेपर भी इसी उर्वशीकी अनुपस्थितिमें कान्तिहीन हो बना हुआ है,-यह स्वर्ग चन्द्रकला रहित अम्बरके समान है' ॥११॥

अतः पुरूरवाको धोखा देकर अथवा अन्य कोई-न-कोई उपाय करके वहांसे उर्वशीकी भेड़ोंको चुरा लाओ तो हमारा काम बन जाएगा। इस प्रकार आदेश देकर भेजनेपर ॥१२॥

रतिकेली चतुर उस राजाके ज्ञानके बिना ही सुन्दर पटिमावाले वे गन्धर्व अन्धकारमें उन भेड़ोंको हर ले गए— ॥१३॥

उन भेड़ोंकी आवाजका शोर-गुल सुनकर तथा उसके कारणको जानकर उर्वशी 'छि! छि!' करती हुई, शोकसतप्त होकर, इस प्रकार बोली ॥१४॥

पुत्र समान पालित मेरी भेड़ोंको चोर इस प्रकार हर ले गए। हे राजन्! ऐसी स्थितिमें स्त्रीका-सा डरपोकपन क्या तुम्हें शोभा देगा?' ॥१५॥

यह सोचकर कि तुम तो रक्षा करोगे ही मैं भी लापरवाह बनी रही। मैं नहीं जानती थी कि तुम्हारी सामर्थ्य इतनी-सी है। हे भूमिभर! तुम्हारी संगतिसे मैं भी कुत्सित हो गई ॥१६॥

इटु मटकनु वडि तमुं
बेटिकिम्पडविद्दुकुम त्रिपुरासिकि न
म्कटिकमु चुपुटवे नि
म्पटुडै तस्करुल वेंठ बडि पलगिक्रियेन् ॥१७॥

नम्मुडै बळमु नृपति बलम्मु गूर्च
सोचिनित चेरम बडग चेमुनिकल
सकलकाम्तुलम्मु मेरपिचिरपुटु
धरणीपति पेहमु गघर्वपुलु ॥१८॥

अन्त ॥१९॥

धरणम्मुल गोलु विन
बळकै तोसेंगु नृपति बरिविकधि विय
नचर चारचनित यातनि
चरममुलकु म्रोलिक पक्षिके साम्बसमेसगन् ॥२०॥

चेम्पिति गावे? मुमु नृपसेखर! नाबु प्रतिव, बातिकि
वम्पिन पट्टि गीतु वरिमापुन गापुरमद्लोनतु? ने
निम्मुडमोवलेन् गवर्मायिपुक मापयिर्गुनु; मम्ययो
तम्मक्तोरुमे! विधिविधानमु तम्पिन पट्टक गूल्मुलू? ॥२१॥

अमि पूरविवि ॥२२॥

पर्गायबोत्तमु बसवतपामु बेसि
यरिये मूर्धसि मिशिबमर्चे समस्त
स्वगमुमनुवि बभिवम बबुगाक
यम्मरो! चेस्क! सबोक्त अम्मबगुने? ॥२३॥

इस प्रकार दुखी मन, भला-बुरा कहनेवाली प्रियतमापर दया दिखानेके लिए, राजा नंगा ही चोरोंके पीछे दौड़ पड़ा ॥१७॥

मग्न दशामें आनेवाले भूपतिको उर्वशीके दृष्टिगत करनेके लिए, गन्धर्वराजाओंने धरणीपतिके गृहको चञ्चलाकी कान्तियोंसे भर दिया ॥१८॥

तब ॥१९॥

भेड़ोंको ले मग्न दशामें आनेवाले राजाको देख, वह वियच्चर वेस्या (देव वेश्या) उनके चरण छूकर सहमें हुए स्वरमें बोली ॥२०॥

हे राजन्! अपनी प्रतिज्ञाके बारेमें मैंने तो पहले ही कह रखा था। तुमने उसका पालन नहीं किया अत उससे वञ्चित होनेवाले तुम्हारे साथ अब मैं कैसे रह सकूँगी? मुझे अभी ही चला जाना चाहिए। मुझपर कृपाभाव बनाए रखो। हाय! जब विधिका विधान न रहे तो प्रेम भी छूटे विना कैसे रहेगा? ॥२१॥

इस प्रकार सान्त्वना दे कर ॥२२॥

पृथ्वीशको दुःखोंमें डाल निश्चिन्त भावसे उर्वशी चली गई। स्वर्गसे ही उतरकर क्यों न आई हों पर वारविलासिनियों पर भरोसा कैसे रखा जाए? ॥२३॥

समुखिरनाव्रि पूर्बथि यथागति मोग, बुरुरबुं बि
समुगोनि, थेरिखुनि, मतिबफ्वि, तबीय बिकास बैसबनृ
मनमसु मेंखुखुन बिपयमम्नस जेंखुगु सोम गुखु
जनि थनि कांथे नथ्बडुलबाव कथाबयतिम् गुणमितिनृ ॥२४॥

पुथिनन्तम मातनि सोथनम्नु
स्नुस्नितबम सन्तोपगति मेसगे
बिरविरह् सगसुसङ्गु नेस्बोसिनि पगुट
बम थेरोंड् माम्यनु पसबे ससप ॥२५॥

मद्‌स कनि डगारि कस्मरसगुट्टिपव गवुमबयब्लुंब इदुलन्निये ॥२६॥

फिनिसियेस्मनेमगुनु गीडोमरिथियेफ्र, मोफु बा
मुनिगतिमुस्टिमानि योकथो नथिमनृ बसि जेप्पसेनु, मी
पसिर्थिम कायमेप्पुइ् नेपथिबि थेयक मुंबस्नु, हा!
मनु बिबनाडि पोनिथिबि मायमे? मोफु मुरगमोथना ॥२७॥

गोसो! बुर्मागुराव! मग्रीसथिबि
सेनि योमेनु मे मरिथिप बाव
मा मनमर्रिफ्युनु गठिमरुयमुन
बलपु बुनेबथेतटिकामबयथो ॥२८॥

बलथि मनुगम्पनेटिकि?
समसि इदुम विखिथि मेट्टमानेटिकि? मो
बलपु सतमनु गम्मिसि,
पसिन्की! मनुजिन्त पासुगा जेंखुथे ॥२९॥

उर्वशीके द्वारा इस तरह परित्यक्त होनेपर पुरूरवा चिन्तित हुए। उसकी विलास-चतुरिमाका ही ध्यान करते करते पागल बन उठे। उन्हीं विषयोंमें मग्न हो मनमें दुखी होते इधर उधर घूमते घूमते, कुरु-देशमें उन्होंने चञ्चल एवं सुन्दर चितवन वाली (उर्वशी) को देखा ॥२४॥

देखते ही उसकी आँखें अतुलित आनन्दसे ज्योतित हुईं। विरहिणी जनोंके लिये अपने प्रियतमको देखनेके अतिरिक्त और सौभाग्य ही क्या हो सकता है ॥२५॥

उसे देख निकट आकर उमडते करुण रससे गद्‌गद स्वरसे वे बोले ॥२६॥

कभी तुमसे रुष्ट नहीं हुआ कभी तुम्हारा बुरा (हानिप्रद) नहीं किया। सदा तुम्हारे दासकी तरह रहा कभी तुम्हारी बातको टाला नहीं। कोई बहाना बनाकर तुम्हारे कहे हुए कार्यको करनेसे नहीं रहा। हे कुरंग लोचनी! फिर भी तुम मुझे छोड गई हो! यह कहाँका न्याय है ॥२७॥

हे दुष्टे! मुझसे घृणा करोगी तो इस शरीरको धारण नहीं कर सकूँगा। मेरे मनको जानकर भी इतनी कठोर बन रही हो ॥२८॥

मुझसे प्रेमकर मेरे पास आई हो क्या? मुझसे मिलकर इस प्रकार मुझे क्या त्याग दिया? मैं तो समझता रहा कि तुम्हारा प्रेम सत्य है। हे मनोहारिणी! मुझे चिन्ताओंमें डुबा दोगी ॥२९॥

रमणि ! मी यासिमानमु चोप्पडमिनाकु
        रामुलेल्लनु शिवरामुलाये,
पुबोडि ! मीकु सोबूलमब्बमि नाकु
        दिनमुलेल्लनु हरिदिनमुलाये,
लेरव ! मी केम्मोवि तेमेलब्बमि नाकु
        ऋतुवुलेल्लनु ग्रीष्म ऋतुवुलाये,
कलिकि ! मेलो चोतुगकिगिवुडमि नाकु
        क्षणमुलेल्लनु गतक्षणमुलाये,
ललन ! मी मेलगवु वेलेल्लनकु चोल्कु
माम्पसब्बमि नाकेल्ल पक्षमुलुनु
गुम्पपक्षम्मुलाये, मोरीति नोप्पु
कालमेगति वेगिंतुने ? लतांगि ।।१०।।

भनिषद्धुविषयमुल विलपि
यु नृपाकोसमुनि मोचि सुमृतगति म
स्मितामणि यतनि चिर
मलुनि चेसि मरल्मु तलपुतो निटलनियेन् ।।११।।

चेलमार्द्रैक्कड ! गुमुलेक्कड ! ममाविश्वासमाधम्मुले
क्कड ! लोको वलपोयमेरविल्टु मौर्यं बुमणा चेल्लुने ?
कललोनैनलु वारकामिमुल सांगत्यमु वाञ्छितुरे ?
कलडे सुमसु मट्टिमट्टि मगडोक्कडनु मा   जातिकिन् ।।१२।।

वनितल्येड चोलमयेड
मनपासुच मिश्वसिपजनदवुगालन्
ममु दलचि विचारिपक
चनि राज्यंबेलुकोनुमु जनमायमनी ।।१३।।

हे रमणी! तुम्हारे आलिंगनके अभावमें सभी रात्रियाँ मेरे लिए शिवरात्रियाँ बन गईं। (जागरण करता रहा।) हे कुसुम-शरीरे! तुम्हारे हाथोंसे ताम्बूलके न मिलनेसे सभी दिन हरि दिन (एकादशी) हुए। हे नारी! तुम्हारे अधर-मधुके न मिलनेसे सभी ऋतुएँ ग्रीष्म ऋतु-सी हुईं। हे मनोहारिणी! तुम्हारी संगतिके बिना मेरे लिए सभी क्षण विगतक्षण (सुख) हुए। हे विलासिनी! तुम्हारी मृदु हास्य चन्द्रिकाओंमें प्रसन्न बने रहनेके सौभाग्यके अभावमें सभी पखवारे कृष्णपक्ष ही बने।

हे छतांगी! तुम्ही बोलो कि इस प्रकारके समयको मैं कैसे बिताऊँ ॥३०॥

ऐसे बहुविधसे विलाप करनेवाले नृपोत्तमको दत्त तत्त्व बोध करते हुए, उसे विरक्त करनेकी इच्छासे उसने इस प्रकार कहा ॥३१॥

'कहाँकी वेश्या और कहाँका प्रेम? उनमें दया-विश्वास के भाव ही कहाँ? ऐसा न समझ इस प्रकार मूर्खतापूर्ण आग्रह करना कहाँ तक ठीक है? स्वप्नमें भी वेश्याओंकी संगतिको नहीं चाहना चाहिए। आखिर मंगल्सूत्र बाँधनेवाला कहीं एक पति हो सकता है? ॥३२॥

राजाओंको स्त्रियों और चोरोंका विश्वास नहीं करना चाहिए। अतः मेरी चिन्ता छोड़कर, अपने राज्यके शासन भारको देख लो ॥३३॥

मनुजु मोप्पमेप्पि मरिगेमायूवसि
मनुजमिमुदु हानि मरणलेक
पम्त बेरे, मेतबाळेन बारको
समनु मेरवोयवसमु पसगु ॥२४॥

इस प्रकार समझाकर वह चली गई। पर नरनाथ उस उर्वशीको भूल न सकनेके कारण दुखी हुए। कितने ही बड़े क्यों न हों, वेश्याओंको निकट नहीं आने देना चाहिए ।।३४।।

[देवी भागवतसे]

५. राजनीति

तनया ! धर्मम्मुन बु
द्धिनि निमुपन् बलमुनेपुडु द्विजवर्युल म
मन सेयवलयु बजलन्
ममुसुलवले बोचवलयु नरनाथुनकुन् ॥१॥

धनमु न्यायागतमयितनरुटोकवि
यनृतमु गास्त्रोद्दमिपुडु नमार्ग
गामि गाकुट सपसुल गोमुख्युनु
बरमधर्मम्मुनिम्मवि पार्थिवुनकु ॥२॥

इंद्रियजयमु पुण्युल मेरगुटयुन,
मनमुप्तिमु बोसम मवमरमुल,
गामुसेपमु सेयमि, सचिवु मन्म
सम्मु बेर्पमि पतिकि यशस्करंबु ॥३॥

समुनिमुसहम्यमुन् चारमुलमु
बसन मेरगुटयुनु शुल्कवारिमामि
गुप्तसगमु बोसमुट पिप्पुलम्कुन्
भूपसम्कुनीतिगिपुनु विधि भूपतुलकु ॥४॥

यागमुल गोमर्मुट मुग
मागत्ति मतिरक्षित सेमि ममतसेंमु
योगमुल चिरवसिपमि
मागमविहितमुलु नृपतुलकुपारम्मुन् ॥५॥

द्यूतमुन वानि मार्केडि मोतिरहितु
मतु मद्यम्मुनतु वारांगनात
नम्मुनतुनु बरपुणागम्मुनम्मु
विमुखुडै प्रज मद्सोलरिपवलमु ॥६॥

५. राजनीति

हे पुत्र! राजाको सदा धर्मरत रहना चाहिए। ब्राह्मण-श्रेष्ठोंका आदर करते हुए, प्रजाका सन्तानके समान लालन-पालन करना चाहिए ॥१॥

पृथ्वीपतिके लिए, सम्पत्तिका न्यायसे कमाया जाना, अनृतसे दूर रहना कुमार्गगामी न होना और तपस्वियोंकी रक्षा करना ये परम धर्म हैं ॥२॥

इन्द्रिय-दमन, पूज्य पुरुषोंका मान मन्त्रका गुप्त रखना, चोरोंके मदका दमन करना शत्रुशेषको न रखना अन्यासक्त मन्त्रीको स्थान न देना, ये काम नृपतिके लिए यशस्कर हैं ॥३॥

शत्रु और मित्रोंके कार्योको गुप्तचरोंके मुखसे जानना, शुष्कवादी न होना (व्यर्थकी बातें न करना) दुष्टोंकी संगतिसे दूर रहना इष्ट जनों और पूज्योंके प्रति दानशीलता ये राजाओंके कर्तव्य हैं ॥४॥

यज्ञ-याग करना, शिकार खेलनेमें अति आसक्तिका न होना स्त्री-जनोंका राजकार्यमें विश्वास न रखना राजाओंके लिए ये आगमविहित धर्म हैं ॥५॥

जुओंसे जुआ खेलनेवाले नीतिरहित जनोंसे मद्यसे, वेश्याओंसे संगीतसे प्राय स्वय विमुख हो प्रजाको भी विमुख रखना चाहिए ॥६॥

भरसि ब्रह्ममुद्गतमुनम्मु लेचि
स्नानमोनरिंचि मिम्मुक्र मनित पूज
मक्ति मोनरिंपगावने प्रतिदिनम्मु
बम्मसाफल्यमुनु गोरु चतुरमतिकि ।।७।।

मोक्तसारियैन मध्वर
मकृपानिधि नव गोलिचि मनम बस्प
दलमल बसनु पोसिम,
सुकृतिकि जन्मम्मु लेनु सु निक्कमुगन् ।।८।।

बस्यमगु जगमसिलम्मु देवदेवि
बोधुबीशबस्तुनु पूज देवदेवि
मनि विनिश्चिततारमुंडगु जनघमतिकि
मतुक्तिानन्दमेल्लप्पुडुनु पलिकु ।।९।।

प्रात: कृत्यमुलन् पयोधितर्गात बाहिंचि कोल्वुंडि चि
यासंभगुम विमुलम् चिंतिंचि शास्त्रार्थम्मुल ब्मारिचे
बूतुंडै विमि पापुले तमरु मा मूवेबता श्रेष्ठुलम्
बीतिम् बानमुलिच्चि पुण्यबलमुन् मुम्मोमुडेल्लप्पुडुन् ।।१०।।

चिनु मूर्दुसेन छिमुल्कु
घनमीवल दिब्योनेमुवर पोयणकुं
गनिपेट्टि यीवम्मु सं
घनमोनरिंपबगवुगा धममुसम् ।।११।।

भनघुलभूमिदेवतल नत्यमसारमुल भमदेनियुन्
मनवयमानमु गोसुप भत्रकुलम्मुन कम्महामहुल
जनकुल , मारि यग्निकिनि, अमिय मासिकि विप्रजाति लो
हनिधुनकुन् शिक्ष जनकतास्पदमुल् विधिचोदितम्मुगन् ।।१२।।

जन्मकी सफलता चाहनेवाले चतुरमति राजाको ब्राह्म मुहूर्तके समयमें जागकर, स्नानकर, नियत हो नित्य ही भक्तिके साथ भक्तिकी पूजा करनी चाहिए ॥७॥

दिनमें एक बार सो उस परम कृपानिधि माताकी अर्चना कर, उसके पदकमलोंके मधुको पीनेवाले सुकृतिका वास्तवमें पुनर्जन्म नहीं है ॥८॥

अखिल दृश्य जगत्को जीव और ईश्वरको भी देव-देवीमय समझनेवाले विनिश्चितात्मा पुण्यात्माको सदा ही अतुलित आनन्द प्राप्त होता है ॥९॥

पृथ्वीपतिको यथारूप प्रात-कर्मोंसे निवृत्त होकर, सभाका आयोजन कर विद्यातत्त्वज्ञ विप्रोंको बुला उनके शास्त्रार्थोंको सुन पवित्र हो मान्य ब्राह्मणोंको सप्रेम दानादि देकर तृप्त करते रहना चाहिए ॥१०॥

इस बातपर ध्यान दो कि मूढ ब्राह्मणोंको धन मत देना। अगर दिया ही तो पटभरके मात्रके लिए देना चाहिए, क्योंकि धर्मका उल्लंघन नहीं करना चाहिए ॥११॥

अनघ और अति समर्थ आत्मावाले भू-देवताओंका कभी अपमान नहीं करना चाहिए। वे महिमामय ब्राह्मण क्षत्रिय कुलके जन्मदाता हैं। विधाताकी रचनाके अनुसार भानी आयका विप्र जाति क्षत्रिय जातिका बिलाएँ लोहेकी आगकी जन्मदात्री है ॥१२॥

६ रवीन्द्रनाथ ठाकुर

सप्तद्वीप वतंस भारतकवितामल्लीप्रसून सुधे
भासीत्तस्य रवीन्द्रनाथकवये कुर्मस्सुमार्गसन्नम ।
हेला निर्मितयाऽपिकाव्य सुधया भाषान्तरी भूतयाऽ
व्यामोहम् वितनोति यस्सुमनसाम् सर्वप्रपंचेऽमुना ॥१ श्लो ॥

ठक्कुरस्तोमांबुधि पूर्णचन्द्रो
देवेन्द्रनाथस्य सुतो महर्षे
वंगालभूनामरवेशभाषा
निधि पुरोभाति रवीन्द्रनाथः ॥२ श्लो ॥

खंडे खंडे नगरमपिच जनपदे देशभाषास्वभूस्तम्
पुण्यादेशाप्रथिता पुलकित वपुषो यस्य काव्य पठन्ति
वाग्देवीयस्य पाणिविभिषति मधुभरी गीतसा भूतधात्री
सर्वेषामक्षिपुण्य सपदिविजितगुता भातिधैर्य रवीन्द्र ॥३ श्लो ॥

६ रवीन्द्रनाथ ठाकुर

[सन् १९२० में जब विश्वकवि रवीन्द्रनाथ काकिनाडा में पधारे थे तब उनके स्वागतमें कहे गए पद्य।]

सभी देशोंमें श्रेष्ठ सुन्दर कविता प्रसूनोंकी सृष्टि करनेवाले गिराके ऐसे प्रभु रवीन्द्रनाथ कविकी हम लोग शुभ कामना करते हैं, जो अनायास रची गई अपनी कविता सुधाका अनुवादके रूपमें भी, आधुनिक संसारके विद्वानोंको अतीव आनन्द प्रदान करते हैं ।।१।।

ठाकुर वंशाम्बुधिके पूर्णचन्द्र महर्षि देवेन्द्रनाथके पुत्र बंगला हूण (अंग्रेजी) अमर (संस्कृत) भाषाओंके विद्वान रवीन्द्र हमारे सामने विराजमान हैं ।।२।।

जिसके काव्यको अपनी-अपनी भाषाओंमें पुण्यके कारण प्राप्त एकाग्रतासे पढ़कर, दश-लोक नगरोंकी ही नहीं ग्रामीण जनता भी पुलकित होती है। जिसकी गिराओंमें जगत्की रक्षा करनेवाली माता वाग्देवी पीयूष मधुको प्रवाहित करती है वे रवीन्द्र हमारी आँखोंमें समाकर हमारे आदरके पात्र बनें अर्थात् उनके दर्शन पाते रहकर हम अपनेको कृतार्थ करें ।।३।।

अखिलभेदा समुच्चयमैन बहुमति
    परिजमिंचे ने पुरि कौशलमु,
रसभरकथानक प्रसरणाविर्भूति
    कल्पिंचे ने कवि कल्पनमु,
भरतखंडमु कविप्रभु जन्मभूमि यग
    ख्याति स्थापिंचे ने धन्युनि पेरु,
सर्व विद्यासागर पारम्मुलय्यु
    पांडवे नाडे ने धन्यु कीर्ति,
सुकविता शक्ति महि भासुरमुग
वसुधकेलितिवय्य ! मा पुरिकि माकि
माड कीर्तिकि रवींद्रनाथ सुकवि
सार्वभौम ! यिदे मीकु स्वागतमु ॥४॥

जगराज्यमु गर्वपुनस्थुलु महर्षि
    देवेंद्रनाथु पुत्रोत्तमुंडवे,
भारतीयुल सुष्टिपकग 'गोविंद् प्रेमु
    गोंकोने सरसमौ कवनमगु,
सर्वानुभवनीय सगपुल योगुपुलु
    नमिचे येपकु काव्यमुलु जगति,
नन्यवरमुल वहौसयम्मु निर्वहिंचु
    गीतांजलि रचिंचि गीति महसे,
ज्ञानमुनपरे फाक वैभवमगु
    सतमु रहिचे भाग्य विस्फीति येरम
अमसुधामूर्तिकि रवींद्रनाथु कीर्ति
    कम्युदय मगुगात निरंतरमु ॥५॥

———

अखिल देशोंमें समुन्नत पुरस्कारको सूरिक बुद्धि-कौशल ने प्राप्त किया रसवत्-कथानक-प्रसरण जिस कविकी कल्पनाकी चतुराईने किया, इस महनीयके नामके 'भारत देशक कवि प्रभु-जन्म भूमि' की ख्याति प्रतिष्ठित किया? सर्व विद्यागार प्रांगणोंमें जिस श्रेय-पुरुषकी कीर्ति परिव्याप्त हुई? सुकविता शक्तिमें ऐसे भासुर-गुणयुक्त तुम हमारे नगर काकिनाडा में आज आए। हे रवीन्द्रनाथ! हे सुकवि सार्वभौम!! यहाँ तुम्हारा स्वागत है।।४।।

वंग वंशके गौरवके रूपमें महर्षि देवेन्द्रनाथके यहाँ उत्पन्न हुए, भारतीयोंकी सन्तुष्टिके रूपमें, सरस कविताके लिए, 'नोबल प्राइज' प्राप्त किया सर्वानुभवनीय विषयोंका वर्णन करके कई काव्योंसे जगत्‌को आप्लावित किया तथा ब्रह्मैक्य (वेदान्त) के विवरण रूप 'गीताञ्जलि' की रचनाकर अन्य देशोंमें भी कीर्ति पाई। ज्ञानमें ही नहीं, ऐश्वर्यमें भी बड़प्पन पाया। ऐसे नव सुधामूर्ति रवीन्द्रकी कीर्तिको सदा ही अभ्युदय प्राप्त हो।।५।।

मीसात बज्जिन बालुसार ! मनि यम्मे प्यासु पार्विषि बस्
बर्सि बोल्बेशिवारि जिस्वि समतो बावम्मु लेके युप
म्यार्सेबिच्चि 'मतम्मनंग मोक मह्वेतव मचुन् बगन्
बा स्थिसेतमु सेपु धम्पुकतबेतन्मानुबे चुबगम् ।।५।।

———

एम ए उपाधि प्राप्त प्रसिद्ध व्यक्तियोंको भी 'मसोंवाले बालको !' कहकर सम्बोधन करते और सभामें बिना किसी वाद-विवादके ही—आसानीसे—'धर्म है तो बस एक अद्वैत ही' कह कर सिद्धान्तका प्रतिपादन करनेवाले धन्य पुरुष सामान्य हैं ! ।।५।।

---

८ काव्य-लक्षण

अट्टि कवनम्मु वल कव्यवनेवि ग्रुत
मुन गुकवि सुकवि कवित पनि हृसिगु
नरमगु मार्यतेनियारम्य सुम्व
रोसमिमिनि योंचि मगिनत मेमिपोनु ? ॥१॥

मतिसरसमुनति कठिनमु
सितरमुनगु पद्यमुनमु पूतितगुम्परा
रगुकुट दोसमे नाना
गति विचित्रत सुप्ति यंत कनवडुनु गदा ! ॥२॥

मृदुलमगु पाक कठिन मै पेसमु गाक
सरसमगु पद्यमु मुदवोसगु मतिकि
रसिकुलगुवानि कोक यदरवे मोद
मिडुने, कुवयुमनवि मोवमिकक मुने ? ॥३॥

पेस्कु गुनमुलचे वसेकेन्तु हृतुम
नस्पदोर्यनु विहांसुनरयवोद
ह्रासविनु नेपु गम्भिन रसिकुहेन
गुमसि पेयुने तहीगमोम्नकैन ? ॥४॥

सरसकविस्व तस्व गतिसारविभुस वसस्फूर्ति मेच्चु मा
पुरि मेरिमीठ सत्कवितलोव्यलमेल्स सिरयुत्नु मा
दरमुन पास्नु मासिक कृपागति गोसुलचेतवड्ड य
टनरसिकुलैन कुमतुलप्पमुनन् मतिपिपकुतुन् ॥५॥

८ काव्यका स्वरूप

वैसी (उत्तम) कविता मुझसे न बन पाएगी, इस बातका मनमें रंज होनेके कारण कुकवि हमेशा सुकविकी निन्दा करता है उसका परिहास करता है। वह व्यक्ति जिसकी पत्नी सुन्दर नहीं है यदि दूसरी सुन्दरी स्त्रीको देखकर हँसे तो क्या होगा? ॥१॥

अति सरल, अति कठिन और न सरल न कठिन ऐसे पदोंका कृति समूहोंमें प्रयोग करनेमें दोष कहाँ है? ब्रह्माकी सृष्टिमें नाना प्रकारका वैविध्य क्या दृष्टिगोचर नहीं होता? ॥२॥

—

मृदुल हो (सरल शब्दोंसे युक्त) या अति कठिन हो जो कविता सरस होगी वह मनको प्रसन्न करेगी ही। रसिक मनको भ्रमर ही नहीं कुचयुग्म भी प्रमुदित करता है ॥३॥

—

कई गुणोंसे युक्त सुन्दर कृतियोंके अल्पदोषोंकी ओर, विद्वज्जन ध्यान नहीं देते। दाख खा सकनेवाला रसिक क्या उसके बीजको थूक देगा? ॥४॥

सरस कवित्त-तत्त्वकी गतिको जाननेवालोंसे प्रशंसित माधुर्यसे सम्पन्न कविता सुन्दरियोंके वेणी भारपर विलसित पुष्पमालाके समान है। यदि वह अरसिक और दुर्मतियोंके पल्ले पड़े तो मानो बन्दरोंके हाथ पड़ी पुष्प मालाकी तरह व्यर्थ बनेगी। भगवान करे कि सत्कविताकी ऐसी दुर्गति न हो ॥५॥

चिन्निबन्नेलाड़ि चिन्नारि पोन्नारि
गंटसोलयु कांधिकारम्मु
पगिदि सुकविकल्पित पद्धित हृदयमुल
चिनिनयत माबमुन गरचु ।।६।।

मन्मयरमोन्तमैनदि यय्यु सुकवि
कवित पद्धित हृदयमुन् मरगमेयु
सहृज लावण्यनिधियन बाल मगसु
बाल्यकुप्त मोयारचु तसकुन्यौने ? ।।७।।

ततकु माल्नु नियदु पदमुनु वक्नु
मनुचु वकिमविकिमि वेकियंग माव
मूल पदमुलु गुम्पिन मुच्चटगुने ?
प्रति पदम्मुन रसमुद्विपकिम गाक ।।८।।

कवितयु वनितयु वलय
त वलविलसिन मुखरोचन बेमुनु,
मनुवलेक बलात्कार
पुविधम्मुन वनिमनविय पो ! दुष्कमिदुम् ।।९।।

छबीली विलासिनीकी नूपुर ध्वनिके समान ही सुकविता कानोंमें पड़ते ही पण्डितोंके हृदयोंको मुग्ध कर देती है ।।६।।

सहज रूपमें उक्त हो कर (सहज और स्वाभाविक रूपसे कही गई) भी सुकविता पण्डितोंके हृदयोंको मुग्ध करती है। सहज लावण्ययुक्त युवती यदि भूषण धारण न करे तो उसके सौन्दर्यमें क्या कोई कमी होगी ? ।।७।।

मुझे दस पाँच कोशगत शब्दोंका ज्ञान है, इस बातका परिचय देते हुए अप्रयुक्त शब्दोंका प्रयोग करनेसे कविता सुन्दर बनती है ? उसमें प्रति शब्दका रस भी भरा होना चाहिए ।।८।।

यदि कविता और वनिता स्वयं प्रेमसे आएँ तो आनन्द देती हैं। बिना प्रेमके जबरदस्ती आएँ तो दुःख ही देती हैं ।।९।।



९. नाना राजसन्दर्शनमु

परदेश संपादनरति मीकु नरेंद्र !
 परदेश संपादनरति माकु,
स्वसुतम पदाभिलाषमीकु नरेंद्र !
 स्वसुतम पदाभिलाष माकु,
सकलमनुस्य श्लोक सक्ति मीकु
 सकलमनुस्य श्लोक सक्ति माकु,
मनुमार्ग वर्तनमुनु मीकु नरेंद्र !
 मनुमार्ग वर्तनमुनु माकु,
मीकु राज्यपदमु माकुनु गविराज
 पदमु कलदिकेंदु गोलय लेदु
मान साम्यमिन्नि मानिचुटोप्पदे ?
 मुद्दुकृष्ण माव भूवरेण्य ! ॥१॥

कठिनम्मुलगु रास्तु करपिकट्टिन
 रामभजनात्म्यम्मुले पदकवाये,
वाकिन माचाल धनुवु करण लेय
 कालिम चालिमीटि स्नानमाये,
मुद्दिकिंपुमुद्दलनि मद्दु वेदि मेतुकुसे
 याकोश कनुगु कडकमाये,
मामुविच्छे वेनुट पविपालमुनट्टि
 स्वप्नम्मुसे धनार्जनमुमाये,
वोनिनधिटि गोपालविभुडु वोर्वे
 भरस मोसाटिकष्टमुन् माकु दूर
तरम्मुसे युंड लेपु भित्तरिति नीर्ति
 साम्र ! मीमुद्दु कृष्ण पार्थेंद्र भूप ! ॥२॥

९. नाना राजसन्दर्शनसे

[एक बार कवि जब नेल्लूरके जमींदारके पास गए थे तब उन्होंने इस प्रकारका विनय-पत्र लिख भेजा था।]

हे राजन्! परदेशोंके सम्पादन (जीतने) की रति (आसक्ति) आपको है तो हमें परदेशोंमें सम्पादन (कमाने) की। उत्तम स्थानोंकी अभिलाषा आपको है तो हमें उत्तम शब्दोंकी। सबसे प्रशंसित कीर्तिकी इच्छा आपको है तो हमें सबकी प्रशंसाके पात्र श्लोकोंकी। मनु महाराज द्वारा निर्धारित मार्गपर चलना (नियमोंके अनुसार कार्य करना) आपको उचित है तो जीवन-निर्वाहकी पद्धतिका अनुकरण करना हमारे लिए। आपको राजपद है तो हमें कविराज-पद है। फिर अन्तर किसी बातमें नहीं है। अतः हे मुद्दुकृष्ण याचभूवरेण्या! समानताका गौरव देकर, सत्कृत करना समुचित है न! ॥१॥

कठिनतर पत्थर बिछाकर बनाए राममल्लिका (पत्थरीला) फर्श ही हमारे लिए बिस्तर बन गया। स्पर्श-मात्रसे शरीरको धक्का देनेवाले ठण्डे पानीमें स्नान करना और कच्चे-पक्के गरम-गरम भातसे ही भूखे पेटको भरना पड़ रहा है। प्रभुने १११६ रुपए* ही दिए, ये ही स्वप्न धनार्जनके साधन बने। इन सब कष्टोंको प्रभु गोपालने दूर किया और ऐसे कष्टोंका सामना करना न पड़े ऐसा कर दो न हे कीर्ति-सान्द्र! हे मुद्दुकृष्ण याचेन्द्र भूपति!! ॥२॥

* आन्ध्र प्रदेशमें पुरस्कार देते समय ११६, १११६ या ५८ २९ रुपयोंकी रकम देनेका रिवाज है।

परवेशमुन् विश्वतरवेशमुलगाय
　　बरस ग्रामसुल् कापुरमु गाग,
बरगेहमुल् सौख्यकर गेहमुल् गाग
　　बरस यज्ञमु पुष्टिकरमु गाग
बरसज्जनाळुलु परम बन्धुल गाग
　　बरसमसपवसु सपवसु गाग,
बरस कष्टसुखम्मुकरमुवारसु गाग
　　बरसेस्स गार्यतत्परसु गाग,
चेसि पुट्टिचिनट्टि चेजेस पेद्द
　　पंडितप्रोति मोप्पुमीवटि नृपति
मनुज कोंदर सुर्जयिप मरचिपोये
　　नेमनन्नुमु ? मह, कृष्णेन्द्र ! चिचिनि ! ॥३॥

ए राजु कविराजु नेनुंगु नेसिकवि
　　मूरेगजेसे नी मूरिमम्मु,
ने राजु कविराजु चे राजित वस्ता
　　बयानम्मु चेयिचि पूने मीर्ति,
ने राजु वेदान्त सार बोधक सुत्र
　　बम्यमुल् रचियिचि बच्चे केवके,
ने राजु 'सर्वविद्याराज' टचुनु ग
　　पुलचे समुति गांचि मिचे,
मट्टि चिन्नकुमार भूपाग्रगण्य
　　पूर्वकृतपुण्यराशि ! यो मुद्द कृष्ण !
स्यागसबुर बदानबीजसम्म !
　　धनत विरपति बंकट बनुमकिपुडु ॥४॥

परदेश ही हमारे लिए विश्वस्तर देश बने, पराये ग्राम ही निवास-स्थान बने। परगृह ही सुखदायी घर बने और पराया भोजन ही पुष्टिकर बना। पराये सज्जन ही परम बान्धव बने परायी सम्पत्ति ही सम्पत्ति बनी। पराये जन ही सुख दुखमें हमारी देख-रेख करनेवाले और हमारे कार्योंमें तत्पर बने। इस प्रकार हम जैसे जनोंकी सृष्टि करनेवाला वह चतुरानन हाय! पण्डितोंपर प्रेम रखनेवाले आप जैसे राज श्रेष्ठोंकी सृष्टि करना भूल गया। क्या कहूँ उस विधाताको हे मुद्दुकृष्णेन्द्र! ॥३॥

जिस राजाने इस नगरमें कविराजको करिराजपर बैठाकर जुलूस निकलवाया, जिस राजाने कविराजसे शतावधान करवा-कर प्रसिद्ध पाई, जो राजा वेदान्तसार बोध करानेवाले प्रबन्धोंकी रचना कर प्रसिद्ध हुआ जो राजा 'सव विद्याराज' कहलाकर कवियोंसे प्रशंसित हुआ ऐसे विद्वान् कुमार भूपति श्रेष्ठकी पूर्वपुण्य राशि बने हे मुद्दुकृष्ण! स्वागत सहित इन तिरुपति-वेंकट कवियों अब दर्शन दो न! ॥४॥

कपुसपलन ब्रमुकुलमु य
मुकुल पसन गपुसलिकमु मूरियन्नमु सं
मपमनु गान गमुल य
मुकुलम्यावरमु तोड मूजित्र मुपा। ॥१०॥

ई वियप्यलमु बम
के विन्नवमु केरे चेप्पनेल ? यचिन मी
मा वैदिक वावस्स
वोधिपमुन ब्रायजेसे मिपुडु मृपाला! ॥११॥

कवियोंसे प्रभुओंको और प्रभुओंसे कवियोंको भूरि यश सम्प्राप्त होता है। अत हे राजन्! प्रभुजन, कवियोंकी अत्यादरसे पूजा करते हैं ॥१०॥

ये सब बातें तो आपको ज्ञात ही हैं। अत: उन्हें बार बार क्यों कहें? पर हे राजन्! हमारी वैदिकी छान्दसी प्रवृत्तिने हमसे इतना लिखवाया ॥११॥

१० नाम साम्यमु

कासुचोप्पुन नितणा मार्जनमु चेसि
    तेंतचेसिननु माकिम्मसेमु,
गडगडलाडि निन् गार्मंग नेतेंमु
    गान मोयिनमम्मु गोधुटरिवि,
प्रीतितो मीकु नमितु रैतैन
    माकिम्मयिचिव मेंतुपैतोयगुचु,
सेविंचि मीकु वांछितमुलितुर
    सेव कांचिचिनमु माकु गासुनीर,
येयिमाटलकलमेमि ? पेरुलीक
टैनमु नवृप्दसुम् बेरले चेर्तुंगु
सरसतिरुपति वेंकटेश्वर कवींद्र
शरण ! तिरुपति वेंकटेश्वर ! नमोऽस्तु ॥१॥

मासिचेरेलोको कासुकाजिपग
    शुद्धवाचि प विस्फूर्ति तमर,
कसिचेरेलोको संचमिच्चिनवारि
    बलपातिचियम्मु नयमु पडग,
ह्रिसिचेरेलोको कन्नमिच्चि नृपकोटि
    वेड्कोमटिसेंट्रिचियमु सोप,
यसियिचेरेलोको पनतापम्मु पै
    बटलाडेडि पोयसाटि वैक्षिय,
माकु निचियमियुनु नयमु नडकलनु
चोमु मोचितमुन कमि चोमु मोचको ?
सरसतिरुपतिवेंकटेश्वर कवींद्र
शरण ! तिरुपति वेंकटेश्वर ! नमोऽस्तु ॥२॥

———

१० नाम-साम्य

एक-एक पैसे (अशर्फी) के हिसाबसे इतना कमा चुके हो तुम, पर जितना भी कमा जाएँ, हमारे हाथमें एक पैसा भी नहीं है। लोग थर-थर काँपते हुए, तुम्हारे दर्शनोंको आते हैं पर हम किन्हींके दर्शनके लिए जाते हैं तो विरलेके ही दर्शन मिलते हैं। तुम्हें तो जितना भी हो, सब सप्रेम समर्पित करते हैं पर हमें थोड़ा देकर भी बहुत मानते हैं। तुम्हारी सेवा कर तुम्हारी अभीष्ट वस्तुएँ तुम्हें देते हैं सेवा करनेपर भी हमें एक पैसा तक नहीं देते हैं। बहुत अधिक बातें कहनेमें क्या सार है ? नाम एक होनेपर भी अदृष्ट तो अलग-अलग हैं। सरस तिरुपति-वेंकटेश्वर कवीन्द्रोंको शरण देनेवाले हे तिरुपति वेंकटेश्वर ! तुम्हें नमस्कार है ! ! ॥१॥

गुह्य दारिद्र्यकी विस्फूर्तिके शोभायमान होनेपर भी पैसे क्यों कमाना चाहते हो ? रिश्वत देनेवालोंपर अधिक ध्यान क्यों देते हो जिससे तुम्हारे पक्षपातका विधान प्रकट हो ? ऋण देकर राजाओंको क्यों सताते हो जिससे महावैश्यके गुण दिखाई दें ? शिकार खेलनेवाले किरातके समान होकर, पर्वत शिखरपर क्यों रहते हो ? मुझे तो ये सब परिहासकी बातें लगती हैं। सरस तिरुपति-वेंकटेश्वर कवीन्द्रोंको शरण देनेवाले हे तिरुपति वेंकटेश्वर ! तुम्हें नमस्कार है ! ! ॥२॥

११ समस्या-पूर्ति

'गानमुर्बटि बिघनिकगानमु ।

ज्ञानविहीनुल बन्धु ज्ञानुलबन्धुनु, रागभून्युलौ
मौनुल बन्धु, भूरफणिमहति बन्धुनु सर्वपक्षिसं
तानमु बन्धु, गुरुलनु बन्धु, मृगम्मुल बन्धु, मेघ मी
गानमुबटि बिघ निक गानमु वेंकटकृष्णभूवरा ! ॥१॥

रागमुलकोन मेघमल्कारलग ।'

मेघमुलु मूडु वेंकट कृष्णभूप !
नागमुलकोन नैरावण बलग
योगमुलकोन कविका योगमनग
रागमुलकोन मेघमल्कारलग ॥२॥

[दीपकके सम्बन्धमें भाषु पद्य]

'ना सोवर्युल बान धर्मपटिमन् ना तङ्गि गाभोर्यवि
द्या तपमतचे अर्यिचितिवि मेना मुमे मीकोर्तिचे
गासि वेंचितिवोषु मलु दासि यी काकम्मुलन् दीपमे
ता सचिपयकवे गम्योनुमु सीताराम भूपालका ! ॥३॥

'दिम्वे पेसुंगुपुडिन मदिन् मसुबंकल बोचे पोकडुस् ।

'अप्पनमधु मोलकु पुमगुडु सैपगरागि पेवलास
निम्मटिलग मोघन तरुणीमणि गूधि अपिपुतुंड ना
अप्पनि पेगुवेंचे बिससरकवरीभर गम्यकान्तिचे
दिम्वे पेसुंगुपुडिन गदिन् मसुबकल बोचे पोकडुस ॥४॥

११ समस्या-पूर्ति

'गान-जैसी विद्याको देख नहीं पाएँगे।

ज्ञानविहीनोंको और ज्ञानियोंको भी सन्तुष्ट करनेवाला रागशून्य मुनियोंको भी सन्तुष्ट करनेवाला क्रूर सर्प समूहको सर्व पक्षि-सन्तानको, बच्चोंको और मृगोंको सन्तुष्ट करनेवाली गान-जैसी विद्याको देख नहीं पाएँगे हे वेंकट कृष्ण भूपति! ॥१॥

'रागोंमें मेघ मल्हार है।

हे वेंकट कृष्ण राजा! वस्तुएँ तीन श्रेष्ठ हैं हाथियोंमें ऐरावत, योगमें अम्बिकायोग और रागोंमें मेघ मल्हार ॥२॥

[दीपके सम्बन्धमें चाटु पद्य]

मेरे सहोदरोंके (नक्षत्रों या मणियों) दान-धर्मकी-प्रतिभा को और मेरे पिता (सागर) को गम्भीर विद्या-सम्पत्तिसे हरा चुके मात कर चुके। तुम्हारी कीर्तिके कारण मैंने बड़ा दुख पाया (वह कीर्ति) मुझसे वक्र-चन्द्र गई। हे सीता राम भूपाल! यह कहता शशि इस समय दीप बन तुम्हारी सेवा करने आया है ॥३॥

दीपकके जलते रहनेपर भी कमरेमें चारों तरफ अँधेरा छा गया।'

यौवनके समय कोई विट (जार पुरुष) असह्य वेदनाओंसे व्यथित होते, किसी तरुणी मणिका नाम जपता रहा। उस युवतीके आननपर, उसके शोभायमान कवरीभर (वेणी) की नव्यकान्तियोंसे दीपकके जलते रहनेपर भी कमरेमें चारों तरफ अँधेरा छा गया ॥४॥

'मध्याह्ने शशिमण्डलं कवलितं क्रूरात्मना राहुणा।'

पद्मव्यूहमुपागते गुरुवरे तस्मिन्प्रविष्टे रया
क्रूर पार्थसुत प्रधान गतया कौरवासनि· क्रूरया
दृष्ट्वा तद्वधन गर्वाविकल्पित प्रोचुर्मिथो निर्जरा
'मध्याह्ने शशिमण्डलं कवलितं क्रूरात्मना राहुणा'।।५।।

'मध्याह्न समयमें ही राहुने शशिको कवलित किया।'

गुरुवरकी रक्षामें सम्पन्न पद्मव्यूहके समीप आकर उसमें प्रवेश करनेपर पार्थ सुत (अभिमन्यु) पर लक्ष्मणकुमारने क्रूरताके साथ गदा प्रहार किया। उस गदा प्रहारसे विकल अभिमन्यु कुमारके मुखको देखकर, देवताओंने सोचा कि यह मध्याह्न कालमें ही राहुने शशिको कसे कवलित किया ? ।।२।।
